# जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२५ अंक -०७ मार्च २०२३ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ७२ मूल्य - १५० रूपए प्रति

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

## हम सब जैन हैं

भाग-1

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

- MTC Business Pvt. Ltd.
- Madhuban Trade Steels Pvt. Ltd.
- M.S. Metals & Steels Pvt. Ltd.
- M.M. Ceramics & Ferro Alloys
- Madhuban Toyota

( कुर्ला-खार-नरीमन पोइंट-लोअर परेल )

MTC GROUP

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

www.kljindia.com

KLJ Group

# A NAME YOU CAN TRUST UPON

## Total Solution in Plasticizers & Polymer Compounds

### PLASTICIZERS

PHTHALATES | ADIPATES | TRIMELLITATES | CITRATES | STEARATES | SEBACATES | DIBENZOATES | TERE - PHTHALATES | BIO PLASTICIZERS | MALEATES | ESBO

### CHLORINATED PARAFFIN (CP)

vLCCP | LCCP | MCCP | SCCP

### POLYMER COMPOUNDS

PVC | XLPE-SIOPLAS | XLPE-PEROXIDE | SEMI CONDUCTIVE | EPR | ZHFR | PO | HDPE | PLENE | TPR | TPE | EVA | ENGINEERING PLASTICS | MASTER BATCH - PVC, PE & UNIVERSAL

### BENZ PRODUCTS

BENZYL-ALCOHOL | BENZADEHYDE | BENZYL CHLORIDE | DI BENZYL ETHER | BENZYL BENZOATE

### CHLOR-ALKALI

CAUSTIC SODA PRILLS | CALCIUM CHLORIDE | CHLORINATED PARAFFINS | HYDROCHLORIC ACID | SODIUM HYPOCHLORITE

**PETROCHEMICALS & POLYMER TRADING | REAL ESTATE DEVELOPMENT**

**Corporate Office:**
KLJ House, 8A, Shivaji Marg, Najafgarh Road, New Delhi-110 015, India
Tel.: +91 11 41427427/28/29, Email: delhi@kljindia.com

**Branch Offices:**
Mumbai | Chennai | Kolkata
Ahmedabad (India) | Singapore | Dubai

**Plants:**
Silvassa | Bharuch | Agra (India)
Thailand | Qatar

#22-086/KLJ

श्री Ostwal®
BUILDERS LTD.

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक
पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

GROUP OF OSTWAL BUILDER'S
CHAIRMAN U.S. OSTWAL

# Luxurious & Spacious Apartment

Ostwal PARADISE
An address with Endless Possibilities

MIRA ROAD
RERA NO. : P51700048041

More information call us
+91 8082551600

1 & 2 BHK WITH
ROOFTOP AMENITIES

जहाँ सपने
साकार होते है

Ostwal® EMPERIAL

HOME IS WHERE
THE HEART IS !!

PALGHAR
RERA NO. : P99000049283

More information call us
+91 9870833043

1, 2 & 3 BHK WITH
MODERN AMENITIES

www.ostwal.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# अगला अंक

## तीर्थंकर महावीर जन्मकल्याणक पर्व विशेषांक भाग-२

तीर्थंकर महावीर जन्मकल्याणक त्यौहार पर हार्दिक शुभकामनायें

तीर्थंकर महावीर स्वामी

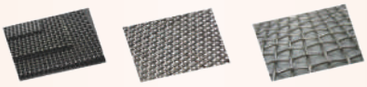

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी के चरणों में कोटि-कोटि वंदन

Madan Lal Bothra & Piyush Bothra Mob. : 9845181122 / 9886851911

Since 1975

Jain Wire Netting Stores

ONE STOP SHOP FOR ALL TYPES OF MESH & WIRE PRODUCTS

# 11, Silver Jubilee Park Road, (SJP Road), Bangalore - 560 002 Ph. : +91-80-2222 4750, 4151 3950, 4163 4105
website : www.jainwirenetting.com e-mail : jwnsblr@gmail.com

'सत्य-अहिंसा' धर्म हमारा 'नवकार' हमारी शान है,
'महावीर' जैसा नायक पाया जैन हमारी पहचान है
तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक की हार्दिक शुभकामनाएँ

MP

LION BIJAY KUMAR JAIN (MJF)

Ex President, Kalahandi Chemists a Druggists Association
Ex Secretary, Chamber of Commerce a Industries, Kesinga

8327700274

06670222598, 9437073848

Durga Mandap Road, Kesinga,
Dist.Kalahandi, Odisha, Bharat-766012
mohanpharmaksng@gmail.com

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

'सत्य-अहिंसा' धर्म हमारा 'नवकार' हमारी शान है,
'महावीर' जैसा नायक पाया जैन हमारी पहचान है
तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक की

हार्दिक शुभकामनाएं

Suresh Chand Jain

Mob.: 9443373267

N0. 22, Cannal Street, Sirkali,
Dist-Nagai, Tamil Nadu, Bharat-609110
Ph.:- 04364-273266

AGARWAL FLORENCE

# GOREGAON WEST

## Path to Peaceful & Successful Living

CALL

986 928 8007

**2BHK & 3BHK FLAT AVAILABLE**

AGARWAL GROUP OF COMPANIES
Where you matter

AGARWAL GROUP OF COMPANIES

50 YEARS PROJECT+

"Agarwal Oak" has been registered by Homewell Realty LLP ("the Promoter") via MahaRERA registration no. P51800031760, the details of which are available on the website https://maharera.mahaonline.gov.in under registered projects.

२६ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२५, अंक ७, मार्च २०२३

जिनागम

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

**सम्पादक - बिजय कुमार जैन**
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
**गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.**
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-२८५० ९९९९
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर ○ **सम्पादकीय** ○ दिगम्बर श्वेताम्बर

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

# महावीर जन्म कल्याणक पर्व 'जैन एकता' के साथ मनाएं

२६ साल पहले मेरे मन में एक ख्याल आया कि २४ तीर्थंकरों के अनुयायी हम सभी अहिंसा प्रेमी कई-कई पंथों में क्यों बंटे हुए हैं, जबकि हमारी जनसंख्या सरकारी आंकड़ों के अनुसार करीब ५० लाख ही है और ५० लाख में हम ५० पंथों में बंटे हुए हैं, हर कोई अपने आपको एक दूसरे से बड़ा दिखाने की कोशीश करता है जबकि बड़े केवल २४ तीर्थंकर ही हैं, २५वॉ तीर्थंकर हो नहीं सकता पंचम काल में, जबकि सभी के लिए प्रात: वंदनीय 'णमोकार मंत्र' ही है, फिर भी इतना अलगाववाद क्यों?

कलम का धनी होने के कारण मन में यह ख्याल आया कि क्यों न एक पत्रिका का प्रकाशन करुं और वो 'जैन एकता' के लिए ही हो, पत्रिका का नाम रखा 'जिनागम'। लगातार प्रकाशन करना आज के इलेक्ट्रानिक व सोशल मिडिया के युग में बहुत ही मुश्किल भरा कार्य था पर आज तक यह सफर जारी है इसका मुख्य कारण आज जैन समाज में कई ऐसे भाग्यशाली हैं जो मात्र जैन समाज का हित चाहते हैं, संगठन चाहते हैं, एकता चाहते हैं अपने पद तक की परवाह नहीं करते, पर कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें केवल स्वयं से प्यार है, समाज से कोई लेना-देना नहीं, यह तो हुयी श्रावकों की बात, यदि साधु-संतों की बात की जाए तो उनकी तो बात ही निराली है। साधु-संत भले ही अपने परिवार का परित्याग कर मोक्षमार्ग को स्वीकार कर लिया पर लोभ-लालच से आज भी संलग्न हैं, अपने-अपने मठ, नाम, आचार्य पद हो या अवतरण (जन्म) दिवस या हो दिक्षा दिवस, श्रावकों को विवश कर लाखों ही नहीं, करोड़ों की राशी खर्च करवाते हैं।

सचमुच कलयुग का समय है, जो हो रहा है सही नहीं हो रहा है, जो होना चाहिए वह हो नहीं पा रहा। पिछले २६ सालों में मैंने जो कुछ जाना, सुना, देखा, मन व्यथित हो जाता है कि क्या हो गया है, अहिंसामयी जिन शासन को...

'जैन एकता' आज के समय की ही नहीं युग की मांग है, बड़े-बड़े मंदिर, आलिशान मठ आदि का निर्माण तो हर जरूर कर रहे हैं जिसकी भविष्य में सुरक्षा व रख-रखाव की आवश्यकता पड़ेगी, जिसके लिए एक ही हथियार काम आयेगा वह होगा 'जैन एकता' जिसके द्वारा आने वाली पिढ़ी तीर्थों, मंदिरों, मठों की सुरक्षा करेगी जो कि हमारे पूजनीय साधु-संतों द्वारा निर्मित किया गया या जा रहा है।

समय आ गया है समस्त जैन समाज की विश्वसनीय घोषित विश्वस्तरीय 'जैन एकता' के लिए प्रयासरत 'जिनागम' पत्रिका का आव्हान 'ना हम दिगम्बर-ना हम श्वेताम्बर हम-सब जैन हैं'। तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर ३ मार्च २०२३ को 'जैन एकता' की जय-जयकार करें ताकि विश्व में फैले जिन धर्मावलम्बी बोलें कि 'हम-सब जैन हैं'।

भारत को Bharat ही बोला जाए अभियान की सफलता के लिए भारत के हर राज्य की राजधानी में Principal Conclave का आयोजन कर रहे हैं, यदि आप भी इस अभियान में सम्मिलित होकर नाम की स्वतंत्रता में शामिल होना चाहते हैं तो मुझसे जरूर संपर्क करें। जय जिनेंद्र!

**जय भारत!**
**जय भारतीय संस्कृति!**

**पूर्ण राष्ट्र की परिभाषा**
**भाव-भूमि और भाषा**

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन

वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

*Happy Mahaveer Jayanti*

## RSM Astute Consulting Group

RSM

- RSM Astute Consulting Group along with its affiliates (together referred as 'RSM India') consistently ranks amongst **India's top tax, accounting and consulting groups** [International Accounting Bulletin - India Surveys 2012-22].
- The sole Indian member of **RSM International,** the 6th largest accounting and business advisory organisation worldwide with global revenue of US$ 8 billion.
- Founded by Dr. Suresh Surana, the Group is one of the prominent Jain groups in the **Knowledge Business.**
- Core services include Internal Audits & Risk Advisory, Corporate Tax & GST, IT Systems Assurance & Solutions and Operations Consulting.
- Clients include several large Indian groups, multinational corporations and first-generation entrepreneurs.


**Mumbai Offices**

**Nariman Point:** 8th Floor, Bakhtawar,229, Nariman Point, Mumbai - 400 021

**Andheri:** 3rd Floor, Technopolis Knowledge Park, Mahakali Caves Road, Andheri (E), Mumbai 400 093

**Tel:** (91-22) 6121 4444 / 6108 5555 **Fax:** (91-22) 6108 5556 **Emails:** emails@rsmindia.in **URL:** www.rsmindia.in

Branches: New Delhi (NCR) * Chennai * Kolkata * Bengaluru * Surat * Hyderabad * Ahmedabad* Gandhidham * Pune * Jaipur * Vijaynagar


Founded **1985**

Personnel **3,000**

India offices **12**

**Top** Largest Accounting firm in India

12 SUCCESSFUL YEARS

VEG. JAIN

# South AFRICA 12N | 13D

Summer '23

**Rs. 2,50,000**

Per Person | Incl. Air Fare, Visa, 5% GST & TCS

## Luxurious Hotel Stay

**01 Night** PRETORIA
The Maslow Time Square
5 Star Hotel

**02 Night** SUN CITY
The Palace Of The Lost City
5 Star Hotel

**04 Night** MOSSEL BAY
Diaz Hotel & Resort
4 Star Hotel

**02 Night** AQUILA
The Aquila Game Reserve
4 Star Hotel

**03 Night** CAPE TOWN
Hotel Double Tree By Hilton
4 Star Hotel

**100% Veg. & Jain**

All Veg. & Jain meals made by our own Rajasthani Chef

Warm Water & all other arrangements will be done for your Rituals

Fixed Departure Dates **2023**

| | |
|---|---|
| Mar | : 18 |
| Apr | : 01,15,17,29 |
| May | : 01,11,15,27,29 |
| Jun | : 10,12,24 |
| Jul | : 08,22 |

Finance Available

SanKash
A REASON TO GO!

**ZERO**
COST EMI
INTEREST
DOWN PAYMENT

**Travel Now Pay Later**


TEJAS SHAH
9930993825 7977628030

POORVA HOLIDAYS
THE NEW CHOICE OF TRAVEL

Sales Team : Jeet Kanani : 98772 28819 ✦ Ajinkya Deo : 96534 90528

Shop No.23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E), Mumbai - 400068 022-40031840, 7021884895

दक्षिण अफ्रीका पर्यटन की

# रिकॉर्ड तोड़ बुकिंग

की सफलता के बाद

गुजराती, कच्छी तथा राजस्थानी जैन समाज का लोकप्रिय और प्रतिष्ठीत पर्यटन संगठन

# POORVA HOLIDAYS

THE NEW CHOICE OF TRAVEL

प्रस्तुत करता है

## The Most Premium USA

## Tour With & Without Orlando

### 4 Option Of Package

- 21N I 22D : Full USA With Orlando
- 18N I 19D : Full USA Without Orlando
- Only West Coast
- Only East Coast

### Fixed Departure Dates

- Without Orlando
  May: 05, June: 16, July: 27
- With Orlando
  May: 26, July: 06

### Stay I Place I Hotel

- 3N I San Francisco
  The Westin San Francisco Airport
- 1N I Lake Tahoe
  Hard Rock Hotel & Casino Lake Tahoe
- 1N I Mammoth Lakes
  Mammoth Mountain Inn
- 3N I Las Vegas
  Paris - Las Vegas
- 3N I Los Angeles ( सिर्फ हमारे साथ )
  Sheraton Gateway Los Angeles Hotel
- 2N I Niagara Falls
  Holiday Inn Niagara Fall
- 1N I Harrisburg
  Crowne Plaza Harrisburg Hershey
- 1N I Washington DC
  Sheraton Reston
- 3N I New York
  Millennium Times Square

### पूर्वा हॉलिडेज की प्रमुख विशेषताएँ

15 सालों के अनुभवी पर्यटन प्रबन्धकों के साथ
वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष सुविधाएँ
Without Orlando का विकल्प देने वाला
भारत का एक मात्र पर्यटन संगठन

अमेरिका मे भी शुद्ध शाकाहारी व जैन भोजन की
व्यवस्था हमारे राजस्थानी महाराज के द्वारा
15 सालों के अनुभवी पर्यटन प्रबन्धकों का मार्गदर्शन

संपूर्ण पर्यटन में गर्म पानी तथा अन्य उपवास की व्यवस्था
तिथि के दिनों में की जायेगी

Founder TEJAS SHAH ✆ 9930993825 ✆ 7977628030
Shop No. 23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E), Mumbai - 400068 ✆ 022-40031840, 7021884895

12 SUCCESSFUL YEARS

VEG. JAIN

# Spiti valley

**9N | 10D**
**Rs.99,999**
Per Person

**11N | 12D**
**Rs.1,24,999**
Per Person
With Chandratal Lake & Manali

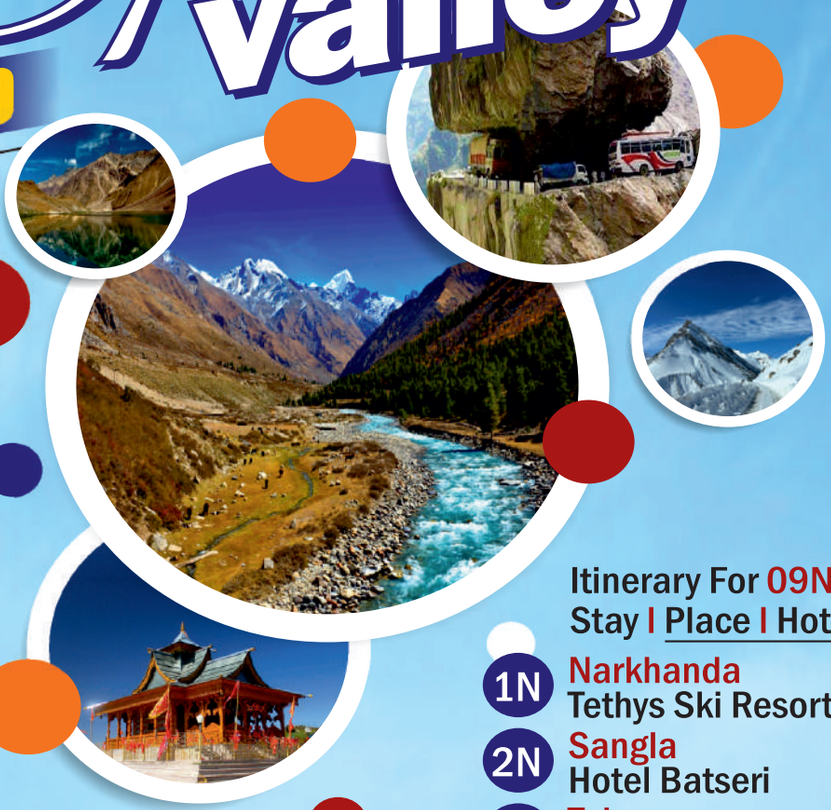

2023 Fixed Departure Date

Apr : 29
May : 10,21
Jun : 01,12,25

Warm Water & all other arrangements will be done for your Rituals

We serve all 100% Veg. & Jain Meals made by our own Rajasthani Chef

## Travel Now.. Pay Later

SanKash A REASON TO GO!

Itinerary For 09N | 10D
Stay | Place | Hotel

- 1N Narkhanda — Tethys Ski Resort
- 2N Sangla — Hotel Batseri
- 1N Tabo — Hotel Maitreya Regency
- 2N Kaza — Hotel Grand Dewachen
- 1N Kalpa — Hotel Kalpa
- 2N Theog — Hotel De Exotica Crest

The prestigious Tour Company for Gujarati, Kutchi & Rajasthani Jain Tourists

## POORVA HOLIDAYS

THE NEW CHOICE OF TRAVEL

Founder TEJAS SHAH ✆ 9930993825 ✆ 7977628030

Sales Team : Jeet Kanani ✆ 98772 28819 • Ajinkya Deo ✆ 96534 90528 • Kekin Heniya ✆ 95942 00634

Shop No. 23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E), Mumbai - 400068 ✆ 022-40031840, 7021884895

# Madhuban Toyota

A fresh experience in customer delight

TOYOTA

MAKE IT AN *Awesome* RIDE TO REMEMBER

**DRIVE HOME YOUR DREAM CAR TODAY**

**URBAN CRUISER HYRYDER** | Starting at **10.48L***

**GLANZA** | Starting at **6.59L***

*T&C Apply

## Largest Toyota Dealership In Mumbai

Sales - Kurla | Bandra | Lower Parel | Breach Candy | **Service** - Kurla | Reay Road

022 4243 1999 | +91 98197 97976 | **www.madhubantoyota.co.in**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# तीर्थंकर महावीर : संक्षिप्त परिचय

- च्यवन कल्याणक - आषाढ़ सुदी 6 (प्रातः देवलोक से आये)
- माता एवं पिता - महारानी त्रिशला एवं वैशाली नृप सिद्धार्थ
- चिन्ह (लांछन) - केशरी सिंह
- वंश/कुल/गोत्र - इक्ष्वाकु वंश/ज्ञातृ कुल/काश्यप गौत्र
- जन्म स्थान - बिहार प्रांत में स्थित-कुण्डलपुर
- जन्म कल्याणक - चैत्र शुक्ला 13, विक्रम पूर्व 542/30 मार्च ई.पू.599, अर्द्धरात्रि
- देहवर्ण/देहमान/चिन्ह - सुवर्ण वर्ण/ केशरीसिंह
- जन्म-नाम - राजकुमार वर्धमान
- इन्द्र द्वारा प्रदत्त नाम - महावीर के नाम से अलंकृत
- अन्य नाम - सन्मति, ज्ञातपूत्र, नाणपुत, वीर, अतिवीर, श्रमण, मतिमान, निर्ग्रन्थ, वर्धमान
- भाई-बहन - राजकुमार नंदीवर्धन एवं बड़ी बहन सुदर्शना
- अन्य परिजन - चाचा : सुपार्श्व, मामा : चेटक,
- पुत्री - प्रियदर्शना, जमाताः जमाली
- विवाह - नृप समरवीर की राजकुमारी : यशोदा के साथ (श्वेताम्बर मतानुसार)
- गृहवास/कुमार अवस्था - 28 वर्ष / 30 वर्ष
- राज्य अवस्था - राज्यकाल नहीं
- वर्षीदान - प्रतिदिन एक करोड़ आठ लाख स्वर्ण मुद्रा/ कुल 399 करोड़ एवं अस्सी लाख स्वर्ण मुद्रा
- दीक्षा कल्याणक - मृगसर वदी 10 ई.पू.569 विक्रम पूर्व 512 तीस वर्ष की तरूणाई में राज्य एवं समस्त वैभव का परित्याग करके अकिंचन भिक्षु बने
- दीक्षास्थल/दीक्षासमय - ज्ञातृखण्ड उद्यान में अशोक वृक्ष के नीचे/ मध्यान्ह में
- साथ में दीक्षित - कोई नहीं
- तपाराधना - साढ़े बारह वर्षों में केवल 11 माह और 19 दिन आहार ग्रहण किया
- दीक्षा तप - बेला दो उपवास
- दीक्षा प्रदाता (गुरू) - स्वयं
- प्रमुख सिद्धांत - सत्य, अहिंसा और अनेकांतवाद
- विचरण क्षेत्र - पूर्व एवं उत्तर भारत, विदेह जनपद, अंगदेश, काशीराष्ट्र, कुणालदेश, मगधदेश आदि
- दीक्षा पश्चात प्रथम - परमात्र खीर (बहुलद्विज के घर में) पारणे का द्रव्य
- साधनाकाल - साढ़े बारह वर्ष
- साधना काल में कष्ट - देव, दानव, मानव, पशुओं द्वारा उपसर्ग
- कैवल्योत्पत्ति - वैशाख सुदी 10 ई.पू.557 विक्रम पूर्व
- कल्याणक - ऋजु बालुका सरिता के किनारे जृंभिक नगरी के बाहर छट्ठम तप के अंतर्गत गोदु हासन में स्थित शालवृक्ष तले

- प्रथम धर्मोपदेश - मध्यम पावापुरी (अपापानगरी) के पवित्र प्रांगण में।
- प्रथम देशना का विषय - यतिधर्म, गृहस्थ धर्म, गणधरवाद
- धर्मोपदेश की भाषा - अर्द्धमागधी प्राकृत (जनसाधारण की भाषा)
- द्वितीय देशना - पावापुरी के महासेन उद्यान में
- विशेषोपलब्धि - एक ही दिन में मध्यम पावापुरी नगर के प्रांगण में 4411 मुमुक्षुओं को अर्हत् धर्म में दीक्षित करना
- कुल चातुर्मास/प्रथम एवं अंतिम चातुर्मास - 42 चातुर्मास/अस्थिकग्राम आश्रम में प्रथम एवं हस्तिपाल राजा की राजधानी पावापुरी में अंतिम चातुर्मास
- प्रथम शिष्य - इंद्रभूति (गौतमस्वामी)
- प्रथम शिष्या - राजकन्या चन्दनबाला
- शिष्य परिवार - गौतम प्रमुख चौदह हजार जिनमें चारों वर्ण के मुमुक्षु शिष्य रूप में सम्मिलित थे
- शिष्या परिवार - आर्या चन्दबाला आदि छत्तीस हजार, जिनमें सभी वर्ग की विदुषी एवं बालिकाएं थी
- प्रमुख श्रावक - आनंद, कामदेव,सद्दाल पुत्र आदि एक लाख उनसठ हजार व्रतधारी श्रावक
- श्राविका समाज - जयंति, सुलसा, रेवती आदि तीन लाख 18 हजार
- प्रमुख भक्तराजा - मगध नरेश बिंबसार (श्रेणिक), वैशाली नरेश चेटक, अवंतिनरेश चंड
- संयम जीवन - बयालीस वर्ष, आयुष्य बहत्तर वर्ष
- निर्वाण कल्याणक - ई.पू.527 विक्रम पूर्व 470 कार्तिक कृष्ण अमावस्या को पावापुरी में हस्तीपाल राजा की दानशाला में दो उपवास की स्थिति में पर्यंकासन में उपदेश देते-देते मध्यरात्रि को निर्वाण।
- तीर्थंकर पार्श्वनाथ एवं महावीर के मध्य अंतरकाल - 250 वर्ष का

**महेश नाहटा, नगरी, छ.ग.,**
**मो. 09406201351**

!! ओम् शान्ति !!

जिसने जीता मन को उससे बड़ा न कोई वीर
धरती के सच्चे वीर हैं तीर्थंकर महावीर
'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

शिंगवी

उत्कृष्ट गोल्ड व डायमंड ज्वेलरी
१९८४ पासून

सोलापूर • अहमदनगर • मिरजगांव

सराफ बाजार, सोलापूर. फोन: 0217 - 2327273
VIP रोड, सोलापूर. फोन: 0217 - 2319990

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

# विश्वहितैषी तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर 'जैन एकता' का आर्तनाद करें

**एक ऐसे तीर्थंकर का जन्म कल्याणक महोत्सव है जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को शांती और कल्याण के सूत्र दिये, 'जियो और जीने दो' का सार्वभौमिक नारा दिया, इसलिए वे जैनों के ही नहीं विश्व के के लिए महापुरुष हैं, उनके पुनीत जन्म कल्याणक पर इस वर्ष भी वही हर्ष, उसी उल्लास से हो, लेकिन अंध परंपरा न हो, कुछ नया और अनूठा कार्य करके दिखाएँ, कैसे?**

**तो आइए परमपूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, सिद्धांत चक्रवर्ती, राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज द्वारा इस विषय पर दिये गये महत्वपूर्ण बिंदुओं को पढें**

'तीर्थंकर महावीर स्वामी के..?...जन्म कल्याणक पर्व पर प्रत्येक बैनर, पत्रिका व मन्दिरों में लिखा जाए:

- यद्यपि आपके नगर में कत्लखाने, मांस-अंडे-शराब की दुकानें नहीं होना चाहिए, यदि हों तो इस पुण्य दिवस पर बंद कराने की अपील करें, सरकारी कानून में इस विषय का उल्लेख रहता है।
- जैनों को भी इस दिन दुकानें बंद रखनी चाहिए।
- तीर्थंकर की रथयात्रा, पालकी जहाँ से निकले वहाँ स्वच्छता रखने का प्रयास करें, मार्ग में गंदी नलियाँ वगैरह को साफ करवायें।
- स्वयं नये कपड़े तो जरुर पहनें पर मन्दिर के शिखर पर नयी ध्वजा भी लगायें।
- वात्सल्य भोज तो रखें पर रात्री भोज नहीं।
- जुलूस में एक साथ समय पर उपस्थित हों, ताकि जनमानस भी देखे कि तीर्थंकर महावीर के भक्त तथा उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति समर्पण और त्याग का जयघोष।
- वर्ष में एक बार शिखर पर रंग तथा दरवाजों पर सजावट अवश्य होनी चाहिए।
- अपने घर के ऊपर धर्म ध्वजा लगाएं एवं मन्दिर जी व घर के बाहर तोरण द्वार बाँधे तथा रंगोली बनायें।
- मन्दिर के शिखरों से प्रात: से ही भगवान महावीर स्वामी के भजन (रिकॉर्ड या सी.डी. वगैरह अनुशासनुसार) गूँजना चाहिए ताकि पता चले कि 'आज महावीर जनकल्याणक पर्व है'।
- जुलूस में चमड़े के बेल्ट, जूते, पर्स वगैरह का प्रयोग न करें।
- महिलाएँ श्रृंगार करें, कोई परेशानी नहीं है पर नेल पॉलिश व लिपिस्टिक आदि का उपयोग न करें।
- सभी पुरुष सफेद ड्रेस में व महिलाएँ केशरिया साड़ी में पर्व पर उपस्थित रहें।
- धर्म ध्वजाएँ बच्चों के हाथ में नहीं, युवाओं के हाथ में दें।
- जूते-चप्पल पहन कर भगवान की पालकी, रथ की पालकी एवं रथ व धर्म ध्वज को हाथ ना लगाएं।
- ड्रेस के साथ-साथ मन भी सफेद हो, आपस में झगड़े-झंझट न कर समाज प्रमुख का निर्णय एकमत से स्वीकार करें।
- चाहे कोई किसी धर्म जाति या संप्रदाय का क्यों न हो, किसी को पराया या भिन्न ना समझें, जब भगवान के समवशरण में तिर्यंच भी अपनत्व से बैठ सकते हैं तो फिर क्या हम मनुष्य होकर एक साथ बैठ या चल नहीं सकते।
- तीर्थंकर महावीर स्वामी का अभिषेक पूजन सामूहिक हो, पर इतने उत्साह व सुमधुर ध्वनि से करें कि पांडाल गूंज जाए।
- सभी के हाथ में पूजा की पुस्तक अवश्य हो।
- सार्वजनिक/सांस्कृतिक कार्यक्रम करना अच्छी बात है पर व्यवस्थित करना और अच्छी बात है
- मन्दिर के बाहर कार्यक्रम हो तो विशेषकर समय का पूरा ध्यान रखें।
- समाज के व्यक्तियों का सम्मान बाद में हो या ना भी हो, लेकिन बाहर से आये व्यक्ति का सम्मान जरुर करें।
- लंबा-चौड़ा सम्मान आवश्यक नहीं, प्रेम का एक तिलक भी बहुत बड़ा सम्मान है
- अन्य कोई कार्यक्रम हो या न हो, पर तीर्थंकर महावीर स्वामी के जीवन दर्शन को जान लिया तो साल भर शास्त्र पढ़ना सार्थक हो जाएगा।
- इस शुभावसर पर शीर्षस्थ संस्थायें (महासभा, महासमिति, तीर्थ क्षेत्र कमेटी आदि) राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री को अन्तर्राष्ट्रीय सकल जैन समाज की ओर से 'महावीर जन्म कल्याणक' की बधाईयाँ अवश्य दें, साथ ही तीर्थंकर महावीर स्वामी के चित्र के समक्ष उनके द्वारा दीप प्रज्वलन करायें तथा उनसे तीर्थंकर महावीर स्वामी के प्रति शुभ संदेश व संस्तुति प्राप्त कर, उसका व्यापक प्रचार-प्रसार करें।

शेष पृष्ठ १५ पर...

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १४ से ... ● समाज के प्रमुख संगठन व मंडल, प्रांतीय स्तर पर भी मुख्यमंत्री, सांसद, विधायक, कलेक्टर, नगराध्यक्ष, सरपंच आदि प्रमुख व्यक्तियों से तीर्थंकर महावीर स्वामी के शुभ संदेश तथा संस्तुतियाँ प्राप्त कर प्रचार-प्रसार करें।

● देश-प्रदेश में प्रकाशित होने वाले अखबार व जैन पत्र-पत्रिकाओं में इस अवसर पर तीर्थंकर महावीर स्वामी के जीवन परिचय अथवा विभिन्न संदेशों को अवश्य प्रकाशित करवायें।

● टी.वी. चैनल द्वारा भी महावीर स्वामी के उपदेशों का प्रचार-प्रसार करें।

● औद्योगिक, प्रशासनिक, शैक्षणिक संस्थायें भी इस अवसर पर तीर्थंकर महावीर स्वामी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन - पुष्पार्जन कर उनके संदेशों का स्मरण कर शुभ भावना प्रकट करें।

● सभी से अभिवादन जय जिनेंद्र व जय भारत से करें।

● इस पुनित अवसर पर स्कूल, अनाथालय, हॉस्पिटल, जेल अथवा गरीबों को भी भोजन या मिष्ठान्न वितरण कर सकते हैं।

● जुलूस में प्रभावना अवश्य करें, पर ध्यान रखें, झूठी सामग्री जिन-रथ के मार्ग पर न डालें।

● वात्सल्य-भोज में भले ही शामिल ना हों पर तीर्थंकर के जुलूस में अवश्य उपस्थित हों।

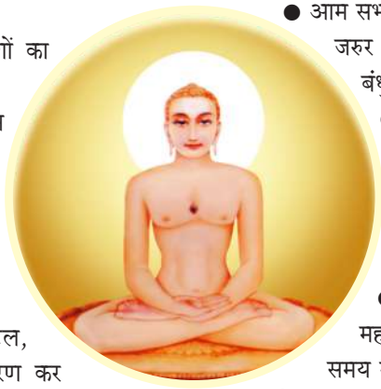

● इस अवसर पर अतिथि सम्मान शॉल के स्थान पर महावीर स्वामी की फोटो से करें।

● हम भले ही अल्पसंख्यक हों पर परिजन व इष्ट मित्रों को भी साथ लेकर चलें वे चाहें जैन हो या जैनेत्तर।

● समाज के विभिन्न वर्ग एवं मंडलों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम झांकी, एकांकी, नाटक, निबंध, भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करना चाहिए।

● आम सभा में महावीर स्वामी से सम्बन्धित प्रश्नमंच का आयोजन जरुर करें एवं पुरस्कार वितरण भी करें, उपस्थित जैनत्तर बंधुओं को इसमें प्रधानता दें।

● पालना, महाआरती, भजन संध्या आदि कार्यक्रम तो रखें पर यह भी ध्यान रखें कि प्रस्तुति देने वाले कलाकार मांसाहारी ना हो।

● प्रभात फेरी के समय महावीर स्वामी से संबंधित भजनों एवं नारों का ही प्रयोग करना चाहिए।

● तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर 'श्री महावीर विधान' का आयोजन भी करवा सकते हैं, अल्प समय में छोटे से विधान के साथ तीर्थंकर की भक्ति का अलग ही आनंद आयेगा।

इस तरह तीर्थंकर महावीर की पूजा और उससे भी बढ़कर व्यवस्था और अनुशासन भी एक पूजा ही कहलाएगी, सभी एक-दूसरे से जुड़ें, गले मिलें और कदम से कदम मिलाकर चलें, फिर देखें महावीर जन्म कल्याणक पर्व का कितना आनंद आता है, कितनी सुख शांति की संवेदना होती है।

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जिसने जीता मन को उससे बड़ा न कोई वीर
धरती के सच्चे वीर हैं महावीर
'तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व' पर हार्दिक शुभकामनायें
Rajendra Gangwal
9322287070
Renu Gangwal
9869751363

R.K.INTERNATIONAL
Manufacturer's, Representative
& Project Co-ordinators
A-201, Madhu Milan, Opp. Devki Nagar, Eksar Rd.,
Borivali West, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400103.
Tel.: 022-28950278
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

PADAM JAIN (SONI) - SHASHI JAIN (SONI)
ABHINAV JAIN (SONI) - SALONI JAIN (SONI)
APURAV JAIN (SONI) - ANUSHREE JAIN (SONI)
AKSHAR JAIN (SONI) - ANHAT JAIN (SOIN)
PKJ & CO.
ASAP CORPORATE ADVISORS PVT. LTD
iExplore Education
Consultants Pvt. Ltd.
Office
002, Gulmohar Com., Station Road, Goregaon East,
Mumbai, Maharashtra, Bahrat-400 063
Tel : 022-26865205, Mob. 9320778228
Residence
B-2203, Oberoi Woods, M.G. Roads, Goregaon East,
Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 063
Tel : 022-28407177, Mob. 9920030444

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

प्रथम तीर्थंकर

# पूर्वजन्म प्रभू ऋषभदेव का

प्रथम तीर्थंकर

वैसे तो संसार का प्रत्येक प्राणी अनादि काल से जन्म मरण भोगता आ रहा है लेकिन सार्थक वही जन्म होता है जिसमें जीव ने संसार परित्त (सीमीत) किया, उसी क्रम में प्रभु ऋषभ का जीव भी कई भव पूर्व जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह की क्षिति प्रतिष्ठित नगरी के प्रसन्नचन्द्र राजा के राज्य में धन्ना सार्थवाह था, एक बार व्यापार के लिए बसंतपुर जाने का निश्चय करके, धन्ना ने राजाज्ञा पूर्वक नगर में घोषणा कराई कि यदि उनके साथ कोई चलना चाहे तो यथायोग्य पूर्ण सहयोग दिया जायेगा, इस घोषणा की जानकारी तंत्र विराजित आचार्य धर्मघोष को भी मिली। बसंतपुर की ओर विहार करने का निर्णय करके सार्थवाद से आज्ञा लेकर साथ में विहार कर दिया। रास्ते में वर्षाकाल से मार्ग अवरूद्ध हो जाने से सुरक्षित स्थान देखकर सार्थ को वहीं रूकने का आदेश दे दिया। धन्ना सार्थवाह के मुनीम मणिभ्रद ने आचार्य धर्मघोष व उनके शिष्यों को भी अपने झोपड़े में ठहरने की व्यवस्था कर दी, लेकिन वर्षा का क्रम इतना लंबा हो गया, जिससे साथ की, सारी खाद्य सामग्री समाप्त हो गई। लोग कंद मूल खाकर समय निकालने लगे। धन्ना सार्थवाह को जब इस स्थिति का पता चला तो वह विचार में पड़ गया कि ऐसी स्थिति में मुनिराजों को आहार कैसे प्राप्त हो रहा होगा। चिंतातुर स्थिति में वह सीधा चलकर मुनियों के पास आया और पश्चाताप करता हुआ आहार ग्रहण करने की प्रार्थना करने लगा। सार्थवाह को पश्चाताप करते देख आचार्यश्री के निर्देशानुसार एक शिष्य भिक्षाटन करते हुए उसके आवास पहुँच गया। अपने आवास में मुनिराज को आते देख हर्ष विभोर होते हुए साधुओं के योग्य आहार देखने लगा, लेकिन अन्य सामग्री को अप्रासुक देख चिंतित होते हुए उसकी दृष्टि पास में पड़े (प्रासुक) घी के घड़े पर पड़ी और बड़े प्रमुदित भाव से मुनिराज को ग्रहण करने का आग्रह करने लगा। मुनिराज ने झोली में से पात्र निकाला। सार्थवाह उत्कृष्ट भाव से पात्र में घी बहराने लगा, उसी समय एक देव ने उसकी उत्कृष्ट भावों की परीक्षा हेतु मुनिराज की दृष्टि बांध ली। मुनिराज का पात्र घी से भर, घी बाहर बहने लगा, फिर भी मना नहीं कर सके। सार्थवाह उत्कृष्ट भाव से बहराता ही रहा जिसके फलस्वरूप उन्हीं उत्कृष्ट परिणामों से उसने सम्यक्त्व की प्राप्ति की, वहां की आयु पूर्ण कर तीसरे भव में सौधर्म कल्प में देव बना।

आयु पूर्णकर चौथे भव में महाविदेह की गन्धिलावती विजय के गान्धार देश की गंध समृद्धि नगरी के शतबल नामक विद्याधर राजा की चन्द्रकांता रानी की कुक्षि से पुत्र रूप में पैदा हुआ जिसका नाम 'महाबल' रखा गया। यौवनास्था में उसका विवाह सम्पन्न कर राजा शतबल ने महाबल का राज्याभिषेक कर दीक्षा ग्रहण कर ली।

महाबल राजा अपने एक बाल साथी व चार प्रधानों के साथ नर्तकी द्वारा किये जा रहे नृत्य में आसक्त हो रहे थे, इधर स्वयंबुद्ध नामक मंत्री, जिसे यह ज्ञात हो चुका था कि जंघाचरण मुनि द्वारा महाबल की सिर्फ एक माह की उम्र शेष है, ने राजा के समक्ष यह बात निवेदित कर दी, इससे प्रतिबोधित होकर राजा महाबल उत्कृष्ट भाव से संयम ग्रहण करके २२ दिन के अनशन पूर्वक देह त्याग कर ५ वें भव में दुसरे देवलोक में श्रीप्रभ विमान के स्वामी ललितांग देव बने। इनकी प्रधान देवी स्वयंप्रभा थी।

ज्ञानी महापुरूषों से मुनि महाबल के देवयोनि में जन्मादि विषयक रहस्य जानकर स्वयं बुद्ध मंत्री ने भी सिद्धाचार्य के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। उत्कृष्ट आराधना के साथ आयु पूर्णकर मुनि स्वयंबुद्ध ईशानकल्प में देव बना, इधर ललितांग देव व स्वयं प्रभादेवी की आयु पुर्ण करके महाविदेह क्षेत्र की पुष्कलावती विजय में लोहार्दगल नगर के राजा स्वर्ण जंग की महारानी **शेष पृष्ठ १७ पर...**

पृष्ठ १६ से ... लक्ष्मी की कुक्षि से वज्रजंग नाम के पुत्र व श्रीमती नामक पुत्री के रूप में उत्पन्न हुए।

यौवनावस्था में श्रीमती ने एक देव विमान को देखा, उसे देखकर जातिस्मरण ज्ञान के माध्यम से वह अपने पूर्वभव के पति का स्मरण करने लगी। पूर्वभव के पति की गहरी स्मृतियों के फलस्वरूप उसने यह प्रतिज्ञा धारण कर ली कि जब तक वे उसे नहीं मिलेंगे तब तक वह किसी से नहीं बोलेगी, यह बात उसकी पंडिता नामक दासी ने जान ली। श्रीमती की सहायता करने हेतु दासी ने इशान कल्प के ललितांग देव के विमान का कुछ त्रुटिपूर्ण चित्र बनाकर राजपथ पर टांग दिया, जिसे देखते ही वज्रजंग को भी जातिस्मरण ज्ञान हो गया और उसने उस चित्र में रही त्रुटि को दूर कर दिया। यह बात उनके पिता सवर्ण जंग को मालूम हुई तब उन्होंने दोनों की शादी कर दी।

कुछ समय पश्चात् श्रीमती ने एक पुत्र को जन्म दिया। धीरे-धीरे पुत्र युवावस्था को प्राप्त होने लगा, उसको युवा होते देख रात्रि को दोनों ने उसको राज्य सौंप कर दीक्षा ग्रहण करने का विचार किया, उधर उसी रात्रि को पुत्र ने राज्य लोभ में विषाक्त धुँआ उनके महल में छोड़ दिया। फलत: दोनों ने शुभ परिणामों से अपनी आयु पूर्ण कर ७ वें भव में ३ पल्योपम की स्थिति वाले कुरूक्षेत्र के युगलिक रूप से जन्म लिया। वहां की आयु पूर्ण कर दोनों ने ८ वें भव में सौधर्म देवलोक में देव बने, वहां की आयु पूर्णकर ९ वें भव में वज्रजंग का जीव जंबूद्वीप के महाविदेह में क्षिति प्रतिष्ठित नगर के सुविधि वैद्य के यहां जीवानंद नामक पुत्र रूप में जन्म लिया और श्रीमती का जीव इसी नगर में श्रेष्ठि ईश्वरदत्त के पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ, जिसका नाम राव रखा गया।

इसी काल में राजा ईशानचंद की रानी कनकवती के भी एक पुत्र हुआ, जिसका नाम महीधर रखा गया। राजा के मंत्री सुवासीर की पत्नी लक्ष्मी के सुबुद्धि नाम का पुत्र हुआ। सागरदत्त सार्थवाह की पत्नी अभागी के पुर्णचंद्र व धनश्रेष्ठि की पत्नी शीलवती के गुणकर पुत्र हुआ, पूर्वभव की प्रीति से सब में परस्पर मित्रता हो गई, यौवनवय में जीवानंद प्रसिद्ध वैद्य बन गया।

एक दिन सभी मित्रों ने जंगल में घूमते हुए एक मुनि को ध्यानस्थ देखा। मुनि का शरीर भयंकर व्याधि से ग्रस्त था, इसे देखकर परस्पर उपचार का चिंतन करने लगे। वैद्य जीवानंद बोला-''भैया इनके उपचार हेतु अन्य औषध तो मेरे पास है पर रत्न कंबल और गोशीर्ष चंदन की आवश्यकता है। पांचों मित्रों ने बाजार में खोज की तो एक श्रेष्ठी के यहां दोनों वस्तुएँ मिल गई। मुनिराज के उपचार की बात सुनकर सेठ ने दोनों चीजें बिना मूल्य लिये ही दे दी और खुद भी सेवा में जुट गया। उपचार **शेष पृष्ठ १८ पर...**

सत्य-अहिंसा का प्रचार
जीवों के लिए हृदय में प्यार
शुभ हो आपको
तीर्थंकर महावीर जन्मकल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

अहिंसा परमो धर्मः

मुकेश सांड जैन
भ्रमणध्वनि : ९३१८५९३५९९
राष्ट्रीय मंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सिद्धि पैकेजेज प्राईवेट लिमिटेड
Manufacturer-Corrugated Boxes, PET Bottles and Jar
गाँव-काथा, बड्डी, हिमाचल प्रदेश, भारत-१७३२०५
Email : mjain_riddhi@yahoo.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जिसने जीता मन को उससे बड़ा न कोई वीर
धरती के सच्चे वीर हैं तीर्थंकर महावीर
'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

Anand Chordia Jain
भ्रमणध्वनि 09423160865
Acharya Anand Rishi Ji Maharaj Marg, Pathardi,
Ahmednagar, Maharashtra, Bharat -414102
दूरध्वनि : 02428-222325
अणुडाक : anandchordia68@gmail.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १७ से ... करने पर मुनि पूर्णत: नीरोग हो गये। तत्पश्चात् मुनि के उपदेश से प्रभावित होकर सभी मित्रों ने उनसे संयम ग्रहण कर लिया और वे सब अनुशासन पूर्वक आयु पूर्ण कर दसवें भव में अच्युत कल्प के इन्द्र के सामानिक देव हुए।

वहां से जीवानंद का जीव ११वें भव में जंबू द्वीप के महाविदेह क्षेत्र में

पुण्डरीकिणी नगरी के वज्रसेन राजा की धारिणी रानी के गर्भ से १४ स्वप्न के साथ पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ, इसका नाम वज्रनाभ रखा गया, शेष पांचों ने उनके लघुभ्राता रूप में जन्म लिया। वज्रनाभ के युवा होने पर वज्रसेन राजा ने उसका राज्याभिषेक कर स्वयं ने दीक्षा ग्रहण की और केवलज्ञान प्राप्त किया। वज्रनाभ सम्राट बना। छोटे भाई बाहु, सुबाहु, पीठ और महापीठ नामक मांडलिक राजा बनें। सुयश चक्रवर्ती का सारथी बना। पिता वज्रसेन के उपदेश से प्रतिबोधित हो छहों ने संयम ग्रहण किया। वज्रनाथ ने बीस बोलों की आराधना से तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन किया और अपने साथियों के साथ आयु पूर्णकर सर्वार्थ सिद्ध नामक विमान में देव बनें।

विगत चौबीसी के अंतिम तीर्थंकर संप्रति के निर्वाण होने के बाद १८ कोड़ाकोड़ी सागरोपम के बीतने पर भरत क्षेत्र में तीसरे आरे के ८४ लाख पूर्व ३ वर्ष साढ़े आठ महीने शेष रहने पर, सर्वार्थ सिद्ध विमान का आयु पूर्ण कर आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र से चंद्र का योग होते ही प्रभु ऋषभदेव का जीव वहां से चलकर नाभि कुलकर की पत्नी मरूदेवी के गर्भ में आया। माता मरूदेवी ने हाथी वृषभादि १४ दिव्य स्वप्न देखे।

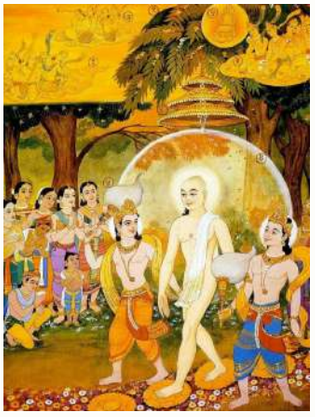

गर्भ में आने के ठीक नौ महीने साढ़े सात रात्रि व्यतीत होने पर चैत्र कृष्णा अष्टमी की रात्रि को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र से चंद्रमा का योग होने पर प्रभू ने युगलरूप से जन्म लिया। ५६ दिक्कुमारियों व शक्रेन्द्र आदि ६४ इन्द्रों ने जन्मोत्सव मनाया, यथासमय इनका नाम ऋषभ रखा गया। इन्द्र द्वारा प्रदत्त 'इक्षु' चूसने से इक्ष्वाकु कुल प्रचलित हुआ। अन्य युगलिकों द्वारा 'काश' का रस ग्रहण करने से काश्यप गोत्र चल पड़ा।

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक
पर कोटि-कोटि शुभकामनाएं
परस्परोपग्रहो जीवानाम

इंजी. कैलाश चन्द्र जैन
महासचिव- बुन्देलखण्ड सांस्कृतिक एवं सामाजिक सहयोग परिषद, लखनऊ
कोषाध्यक्ष- भारत विकास परिषद, परमहंस शाखा, लखनऊ
कार्यकारिणी सदस्य- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ
सदस्य- भारतीय जैन मिलन (साकेत) लखनऊ
भ्रमणध्वनी - ९४१५४७०१४६
निवास: ९/३३६, इन्दिरा नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत - २२६०१६

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जिसने जीता मन को उससे बड़ा न कोई वीर
धरती के सच्चे वीर हैं तीर्थंकर महावीर
'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें
परस्परोपग्रहो जीवानाम
Ratan Jain
Rajesh Jain Rakesh Jain
Prachar Communications Pvt. Ltd.
Samkeet Apartments,
Sant JanabaiMarg, Vile Parle East,
Mumbai, Maharashtra, Bharat-400054
Ph. 022-42562000
Office :- Ph. 022-42111300
e-mail:- mail@prachar.in
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जिसने जीता मन को उससे बड़ा न कोई वीर
धरती के सच्चे वीर हैं 'महावीर'
'तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व'
पर हार्दिक शुभकामनायें

पूरनमल जैन 'सेठी'
: अध्यक्ष :
भगवान महावीर हॉस्पिटल एण्ड
रिसर्च सेन्टर, राँची
104, पारस अपार्टमेन्ट, कचहरी रोड, राँची, झारखण्ड, भारत- 834001
दूरध्वनि- 0651-2214160 भ्रमणध्वनि.-09431115535
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution



जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

CELEBRATING
THE MANY
COLOURS OF
INDIA'S PROGRESS!
S.Kumars®
The Fabric of India
Since 1948
www.skumars.co | info@skumars.co | @s.kumars_thefabricofindia | S.Kumars.India | YouTube S.Kumars

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# तीर्थंकर महावीर का दिव्य संदेश

## स्वयं जीयो और दूसरे को भी जीने दो

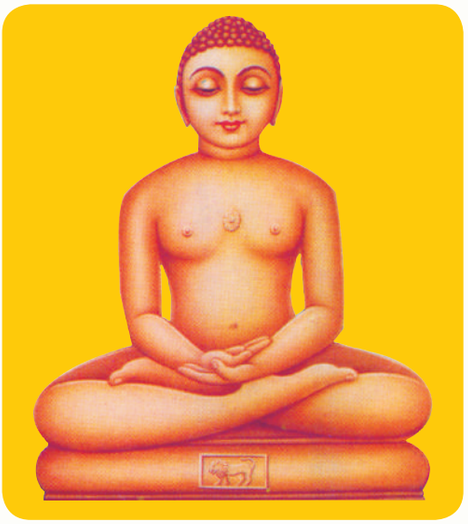

तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक 'महावीर जयन्ती' के नाम से भी प्रसिद्ध है। महावीर स्वामी का जन्म चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में हुआ था। ईस्वी कालगणना के अनुसार सोमवार, दिनांक २७ मार्च, ५९८ ईसा पूर्व के माँगलिक प्रभात में वैशाली के गणनायक राजा सिद्धार्थ के घर महावीर का जन्म हुआ था।

महावीर स्वामी का तीर्थंकर के रुप में जन्म उनके पिछले अनेक जन्मों की सतत् साधना का परिणाम था, कहा जाता है कि एक समय महावीर का जीव पुरुरवा भील था, संयोगवश उसने सागरसेन नाम के मुनिराज के दर्शन किए, मुनिराज रास्ता भूल जाने के कारण उधर आ निकले थे। मुनिराज के धर्मोपदेश से उसने धर्म धारण किया। महावीर के जीवन की वास्तविक साधना का मार्ग यहीं से प्रारम्भ होता है, बीच में उन्हें कौन-कौन से मार्गों से जाना पड़ा, जीवन में क्या-क्या बाधाएँ आईं और किस प्रकार भटकना पड़ा? यह एक लम्बी और दिलचस्प कहानी है जो सन्मार्ग का अवलम्बन कर, जीवन के विकास की प्रेरणा देती है। महावीर स्वामी का जीवन हमें एक शान्त पथिक का जीवन लगता है जो कि संसार में भटकते-भटकते थक गया है। भोगों को अनन्त बार भोग लिये, फिर भी तृप्ति नहीं हुई, अत: भोगों से मन हट गया, अब किसी जीज की चाह नहीं रही, परकीय संयोगों से बहुत कुछ छुटकारा मिल गया, अब जो कुछ भी रह गया उससे भी छुटकारा पाकर, महावीर मुक्ति की राह देखने लगे।

एक बार बालकों के साथ बहुत बड़े वटवृक्ष के ऊपर चढ़कर खेलते हुए वर्धमान के धैर्य की परीक्षा करने के लिए संगम नामक देव, भयंकर सर्प का रुप देख सभी बालक भाग गए, किन्तु वर्धमान इससे जरा भी विचलित नहीं हुए, वे निडर होकर वृक्ष से नीचे उतरे। संगमदेव उनके धैर्य और साहस को देखकर दंग रह गया, उसने अपना असली रुप धारण किया और महावीर स्वामी नाम की स्तुति कर चला गया।

महान् पुरुषों का दर्शन ही संशयचित लोगों की शंकाओं का निवारण कर देता है। संजय और विजय नामक दो चारण ऋद्धिधारी देव थे, जिन्हें तत्त्व के विषय में कुछ शंका थी। कुमार वर्द्धमान को देखते ही उनकी शंका दूर हो गई, उन देव ने प्रसन्नचित हो कुमार का सन्मति नाम रखा।

एक दिन ३० वर्ष का वह त्रिशलानन्दन कर्मों का बन्धन काटने के लिए तपस्या और आत्मचिन्तन में लीन रहने का विचार करने लगा, कुमार की विरक्ति का समाचार सुनकर माता-पिता को बहुत चिन्ता हुई। कलिंग के राजा जितशत्रु ने अपनी सुपुत्री यशोदा के साथ कुमार वर्द्धमान के विवाह का प्रस्ताव भेजा, उनके इस प्रस्ताव को सुनकर माता-पिता ने जो स्वप्न संजोए थे, आज वे स्वप्न उन्हें बिखरते हुए नजर आ रहे थे। वर्धमान को बहुत समझाया गया, अन्त में माता-पिता को मोक्षमार्ग की स्वीकृती देनी पड़ी। मुक्ति के राही को भोग जरा भी विचलित नहीं कर सके। मंगशिर कृष्ण दशमी सोमवार, २९ दिसम्बर ५६९ ईसा पूर्व को मुनिदीक्षा लेकर वर्द्धमान स्वामी ने शालवृक्ष के नीचे, तपस्या आरम्भ कर दी, उनकी तप साधना बड़ी कठिन थी।

महावीर की साधना मौन साधना थी, जब तक उन्हें पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि नहीं हो गई तब तक उन्होंने किसी को उपदेश नहीं दिया। वैशाख शुक्ल दशमी, २६ अप्रैल, ५५७ ईसा पूर्व का वह दिन चिरस्मरणीय रहेगा जब त्रम्बक नामक ग्राम में अपराह्न समय गौतम, उनके प्रमुख शिष्य (गणधर) हुए, उनकी धर्मसभा समवसरण कहलाई, इसमें मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सभी प्राणी उपस्थित होकर धर्मोपदेश का लाभ लेते थे। लगभग ३० वर्ष तक उन्होंने सारे भारत में भ्रमण कर लोकभाषा प्राकृत में सदुपदेश दिया और कल्याण का मार्ग बतलाया, संसार-समुद्र से पार होने के लिए उन्होंने तीर्थ की रचना की, अत: वे तीर्थंकर कहलाए।

आचार्य समन्तभद्र ने भगवान् के तीर्थ को सर्वोदय तीर्थ कहा है, व्यक्ति के हित के साथ-साथ महावीर के उपदेश में समष्टि के हित की बात भी निहित थी। उनका उपदेश मानवमात्र के लिए ही सीमित नहीं था, बल्कि प्राणिमात्र के हित की भावना उसमें निहित थी। महावीर! श्रमण परम्परा के उन व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने यह उद्घोष किया था कि हर प्राणी एक समान है। मनुष्य और क्षुद्र कीट-पतंग में आत्मा के अस्तित्व की अपेक्षा में कोई अन्तर नहीं, उस समय जबकि मनुष्य के बीच में भी दीवारें खड़ी हो रही थीं, किसी वर्ण के व्यक्ति को ऊँचा और किसी को नीचा बतलाकर, एक वर्ग विशेष का स्वत्वाधिकार कायम किया जा रहा था, उस समय मानवमात्र का प्राणिमात्र के प्रति समत्वभाव का उद्घोष करना, बहुत बड़े साहस की बात थी, तत्कालीन अन्य परम्परा के लोगों द्वारा इसका घोर विरोध हुआ, अन्त में सत्य की ही विजय हुई। करोड़ों-करोड़ों पशुओं और दीन-दु:खियों ने चैन की सांस ली। समाज में अहिंसा का महत्व पुर्नस्थापित हुआ।

महावीर स्वामी ने नारा बुलन्द किया था कि प्रत्येक आत्मा परमात्मा बन सकती है, कर्मों के कारण आत्मा का असली स्वरुप अभिव्यक्त नहीं हो पाता। कर्मों को नाशकर शुद्ध, बुद्ध और सुखरुप स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार तीस वर्षों तक तत्त्व का भली-भाँति प्रचार करते हुए तीर्थंकर महावीर एक समय मल्लों की राजधानी पावा पहुँचे, वहाँ के उपवन में कार्तिक कृष्ण अमावस्या मंगलवार, १५ अक्टूबर, ५२७ ई.पू. को ७२ वर्ष की आयु में उन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया।

**- सुशीला पाटनी जैन**
**मदनगंज- किशनगढ़, राजस्थान**

ಹಸುವೇ ಸತ್ಯ
ಹಾಲೇ ನಿತ್ಯ
ಉಳಿದದ್ದೆಲ್ಲ ಸಾವೇ ಮಿಥ್ಯ
ಮಾರುತಿ ಮೆಡಿಕಲ್ಸ್ ದನಿ
अंबा..!..ambaa..!
..ಅಂಬಾ..!
the voice of maruthi medicals
गावो विश्वस्य मातर:
खेती के लिए भारतीय गाय का गोबर अमृत समान माना जाता था। इसी अमृत के कारण भारत भूमि सहस्रों वर्षों से सोना उगलती आ रही है ।
जिनके नहीं है नाम, उनके नाम बनेंगें घर गाँव शहर, मुरलीधर धाम बनेंगें ब्रम्हांड के सब देवता, गौ में समाये हैं तुम गाय पाल लेना, सभी काम बनेंगें ।
ಮಾರುತಿ ಮೆಡಿಕಲ್ಸ್
ಕರ್ನಾಟಕದ ಅಗ್ರಗಣ್ಯ ಔಷಧಿ ಮಳಿಗೆ
SINCE 1988
MARUTHI MEDICALS
SERVICE BEFORE SELF
THE LEADING MEDICAL STORE OF KARNATAKA
महेंद्र मुणोत जैन
सुरक्षा मुणोत जैन
आनंद मुणोत जैन
मारुति मेडिकल्स्
कर्नाटक में दवाईयों का अग्रणी प्रतिष्ठान
www.maruthimedicals.com
maruthimedicals@yahoo.in
MARUTHI MEDICALS
Call: 080-61222111
+91 76764 44443
# 13 & 14, श्रीMoti Building, Service Road, Hampi Nagara, Vijaya Nagar, Bengaluru-560104

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# दीक्षा - आत्मा का पुनर्जन्म

प्रत्येक कर्म परम्परा में किसी न किसी रुप में दीक्षा का प्रचलन है। दीक्षा देने वाला गुरु होता है और शिष्य-वैरागी होता है दीक्षा लेने वाला। अतएव शिष्य को दीक्षित कहा गया है। ''दीक्षितं मौड्यम् शिष्यं च।'' प्राचीन धर्म शास्त्रों में दीक्षित शिष्य को 'अन्तेवासी' शब्द से भी पुकारा जाता था। अर्थ स्पष्ट है, गुरु के निकट में निवास करने वाला। दीक्षित होने वाला कौन है? इस प्रश्न के उत्तर में जाकर, दीक्षित होने वाले का मावोलपाठ क्या है, चिन्तन-दिशा क्या है। अगर ये सब है तो वह दीक्षा का यथार्थ पात्र है। दीक्षा के चिन्तन पाठ में ''अप्पाणं वोसिसीम'' वाक्य का प्रयोग किया जाता है, इसका अर्थ है कि पहले के जाति आदि से सम्बन्धित जितने भी विकल्प थे, वे सब आज से विसर्जित कर दिए गए हैं। दीक्षा एक प्रकार से आत्मा का पुनर्जन्म है।

गौतम जैसा महान ज्ञानी भी महावीर के आगे दीक्षित होता है और दूसरी ओर 'मा रुष मा तुष' जैसा एक साधारण छोटा सा वाक्य भी याद न करने वाला और उसे भूलकर 'मास्तुष' बना देने वाला, मूढ़ अज्ञानी शिष्य भी दीक्षित होता है। 'मा-रुष मा-तुष' का अर्थ है - प्रतिकूलता के होने पर भी रोष न करें, शिकायत न करें। अनुकूलता के होने पर भी संतोष - प्रसन्नता रखें और अहंभाव न करें। कितना सुंदर भाव है। चार अक्षरों में दीक्षा का सर्वस्व समा गया है किन्तु वह विचार क्या करे। 'मास्तुष' रहता है जिसका अर्थ है - उड़द पर का छिलका। आप हसेगें कि यह कैसा शिष्य और उस मूढ़ को दीक्षा देने वाला गुरु भी कैसा? परन्तु 'मास्तुष' अपने मन से शुद्ध भाव से रहने वाला भी अन्ततः केवल ज्ञान प्राप्त करता है। जैन धर्म शब्दों पर उतना नहीं, जितना की भाव पर स्थित है, प्रायः सभी धर्म भी भाव पर ही टिके हुए हैं अगर मन में शुद्ध भाव नहीं है तो कुछ भी नहीं होने वाला - मिलने वाला, सिर्फ समय की बर्बादी है।

दीक्षित से एक मात्र अपेक्षा है - अन्तर दीप बुझने न पाये साधना का। जैन-शासन रुढ़िवादी नहीं है, किसी एक शब्द-खूंटे से बंधा हुआ विचार, झूठ, पशु नहीं है, वह ग्राम तलैया की बजाय निरन्तर प्रवाहित रहने वाली पावन-गंगा है।

अति से बचो, अमृत-शहद घी भी अति से घातक विष हो सकता है। विष भी उचित मात्रा में औषधि जीवन रस का दाता है। दीक्षा का अर्थ केवल कुछ बंधी-बंधायी व्रतावली को अपना लेना नहीं है। भगवान महावीर कहते हैं, यह सब तो बाहर की बाते हैं, वातावरण बनाये रखने के साधन हैं 'लोग लिंगस्य ओयणं' दीक्षा का मूल विषय तो है - परम तत्व की खोज। मैं चाहता हूँ, आज का साधु-साहसी समाज दीक्षा के मूल वैराग्य को स्पष्टता के साथ उपस्थित करे। मैं सुनता हूँ, साधुओं के उपदेश की घिसी-पिटी एक पुरानी सी परम्परागत प्रचलित भाषा। ''संसार असार है, कोई किसी का नहीं है, सब स्वार्थ का माया जाल है, नरक में ले जाने वाले हैं, जीवन में सब और पाप ही पाप है, अतः छोड़ें यह सब प्रपंच। एक दिन तो यह सब छोड़ना ही है, फिर आज ही क्यों न छोड़ दो। सब ओर झूठ का पसारा है। परिवार से, समाज से, सबसे सम्बन्ध तोड़ो, वैराग्य ग्रहण करो, दीक्षा लो''। यह तोता रटत भाषा है, जिसे कुछ भावुक मन सही समझ लेते हैं और आँखें मूंद कर गुरु के पास वैरागी बनकर रहने लगते हैं, जब तक दीक्षा

पक्की नहीं हो जाती, तब तलक वैरागी को बड़े प्यार, लाड, दुलार से रखा जाता है, खिलाया जाता है अच्छे-अच्छे घरों में घुमाया जाता है। बड़ी-बड़ी गाड़ियों में ताकि वैरागी को अपने घर की याद न आये और वो किसी न किसी तरह दीक्षा लेकर साधु-साध्वी बन जाये। गुरु की बातों में आकर साधु-साध्वी बन जाते हैं परन्तु वस्तुतः होता क्या है दीक्षित होने के बाद। पंथ-परम्पराओं और सम्प्रदायों के नए-परिवार खड़े हो जाते हैं, राग-द्वेष के नये बन्धन आ धमकते हैं। अपने घर में सुख-चैन से रह रहा वैरागी मजबूत खूटे से बांध दिया जाता है। क्या राहत मिलती है खूंटा बदलने से, कुछ दूर चल कर बहुत शीघ्र ही वह अनुभव करने लगता है कि जिस समस्या के समाधान के लिए मैं यहाँ आया था, वही समस्या यहाँ पर भी है। वही स्वार्थ, वही दंश, वही अधंकार, वही घृणा और है वही द्वेष। कुछ भी तो अन्तर नहीं है, कहाँ आन फंसा मैं यहाँ। परिणाम स्वरुप अनेक दीक्षितों से कभी-कभी सुनने को मिलता है कि क्या करें? साधना तो हो रही है, पर वह सब ऊपर-ऊपर से हो रही है। भीतर में कोई परिवर्तन नहीं, कोई नई उपलब्धि नहीं, इस प्रकार एक दिन वह प्रसन्न चित्त वैरागी अपने में एक गहरी विभक्ति अनुभव करने लगता है।

आज की साधु-संस्था के समक्ष यह एक ज्वलंत समस्या है, इसलिए साल-दो साल बाद सभी साधुओं-साध्वियों का एक महासम्मेलन आचार्य श्री, युवा आचार्य श्री के नेतृत्व में होते रहना चाहिए ताकि जो साधु-साध्वी अपने साधक जीवन में खुश नहीं है अपनी बात को सबके सामने रख सके। परिवार, समाज में से बाहर निकल कर दीक्षा लेने का अर्थ परिवार तथा समाज से घृणा नहीं है, खिन्नता नहीं है, अपितु वह तो आत्म सेवा है। परमात्म-तत्व को खोजना और पा लेना ही साधना का मुख्य लक्ष्य है। दीक्षार्थी अपने अन्दर शुद्धत्व के लिए और बाहर समाज के शुभत्व के लिए प्रयत्नशील होता है।

प्रत्येक कर्म परम्परा में किसी न किसी रुप में दीक्षा का प्रचलन है। दीक्षा देने वाला गुरु होता है और शिष्य-वैरागी होता है दीक्षा लेने **शेष पृष्ठ २३ पर...**

पृष्ठ २२ से... वाला। अतएव शिष्य को दीक्षित कहा गया है। ''दीक्षितं मौड्यम् शिष्यं च।'' प्राचीन धर्म शास्त्रों में दीक्षित शिष्य को 'अन्तेवासी' शब्द से भी पुकारा जाता था। अर्थ स्पष्ट है, गुरु के निकट में निवास करने वाला। दीक्षित होने वाला कौन है? इस प्रश्न के उत्तर में जाकर, दीक्षित होने वाले का मावोलपाठ क्या है, चिन्तन-दिशा क्या है। अगर ये सब है तो वह दीक्षा का यथार्थ पात्र है। दीक्षा के चिन्तन पाठ में ''अप्पाणं वोसिसीम'' वाक्य का प्रयोग किया जाता है। इसका अर्थ है कि पहले के जाति आदि से सम्बन्धित जितने भी विकल्प थे, वे सब आज से विसर्जित कर दिए गए हैं। दीक्षा एक प्रकार से आत्मा का पुनर्जन्म है।

गौतम जैसा महान ज्ञानी भी महावीर के आगे दीक्षित होता है और दूसरी ओर 'मा रुष मा तुष' जैसा एक साधारण छोटा सा वाक्य भी याद न करने वाला और उसे भूलकर 'मास्तुष' बना देने वाला, मूढ़ अज्ञानी शिष्य भी दीक्षित होता है। 'मा-रुष मा-तुष' का अर्थ है - प्रतिकूलता के होने पर भी रोष न करें, शिकायत न करें। अनुकूलता के होने पर भी संतोष - प्रसन्नता रखें और अहंभाव न करें। कितना सुंदर भाव है। चार अक्षरों में दीक्षा का सर्वस्व समा गया है किन्तु वह विचार क्या करे। 'मास्तुष' रहता है जिसका अर्थ है - उड़द पर का छिलका। आप हसेगें कि यह कैसा शिष्य और उस मूढ़ को दीक्षा देने वाला गुरु भी कैसा? परन्तु 'मास्तुष' अपने मन से शुद्ध भाव से रहने वाला भी अन्ततः केवल ज्ञान प्राप्त करता है। जैन धर्म शब्दों पर उतना नहीं, जितना की भाव पर स्थित है। प्रायः सभी धर्म भी भाव पर ही टिके हुए हैं अगर मन में शुद्ध भाव नहीं है तो कुछ भी नहीं होने वाला - मिलने वाला, सिर्फ समय की बर्बादी है।

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं
DIGAMBER FABRICS
Sanjay Jain ■ Saurabh Jain
9829013109 ■ 9929011109
PHOOL BOOTI PVT. LTD.

● Kurtis ● Salwar Suits ●
● Fabrics Work ●
● Printed Running Fabrics ●
Address:
C-43/44, Industrial Estate, Near SBI Bank,
Bias Godown, South Jaipur, Rajasthan, Bharat -302006
दूरध्वनि: 0141-2213109
अन्तरतानाः digamberfabrics.com

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जिसने जीता मन को उससे बड़ा न कोई वीर
धरती के सच्चे वीर हैं तीर्थंकर महावीर
'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें
परस्परोपग्रहो जीवानाम

Kuldeep Singh Sethia
Mobile : 9840287087
Universal Refrigeration Co.
Refrigeration & A/c Spare Parts
50 Armenian Street, Chennai, Tamil Nadu, Bharat 600001
Ph.:- 044-25341013/25340654

HOTEL Seven Stone
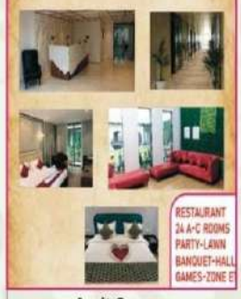
RESTAURANT 24 A-C ROOMS PARTY-LAWN BANQUET-HALL GAMES-ZONE E
Amit Surana
Mob. 9414115976, 9829245077
(A Unit of Leela Ventures)
Surbhi Square, IIIrd Floor
Near Gayatri Mandir, BHILWARA
E mail : surana01@yahoo.com
Sumit Surana 94133-46877
BOOKING OPEN
Choudhary Tent House
Vinod Choudhary 94141-11912
Sushil Choudhary 94143-02457
Food Decor Tent
Weddings
Social Events
Birthday Party
all Type of Events
The Palm Resorts
Redefining the Joys
We create You celebrate
Facilities : 60 Rooms, Big Lawn, Swimming Pool, DJ Room, Restaurant
Sumit Surana
Mob. 94140-14998
Near Harni Mahadev Mandir,
Mangrop Road, Bhilwara (Raj.)
e-mail : thepalmbhilwara@gmail.com
Website : www.thepalmresort.in
www.facebook.com/thepalmresort
With Best Compliments :
Surendra-Leela
Amit- Anila
Sumit-Sheetal
and Surana Family
245, Kanchipuram, Bhilwara Mob. 98290-46077
Surendra Singh Surana
Smt. Leela Surana

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# नागराज चण्डकौशिक के उद्धारक प्रभु महावीर

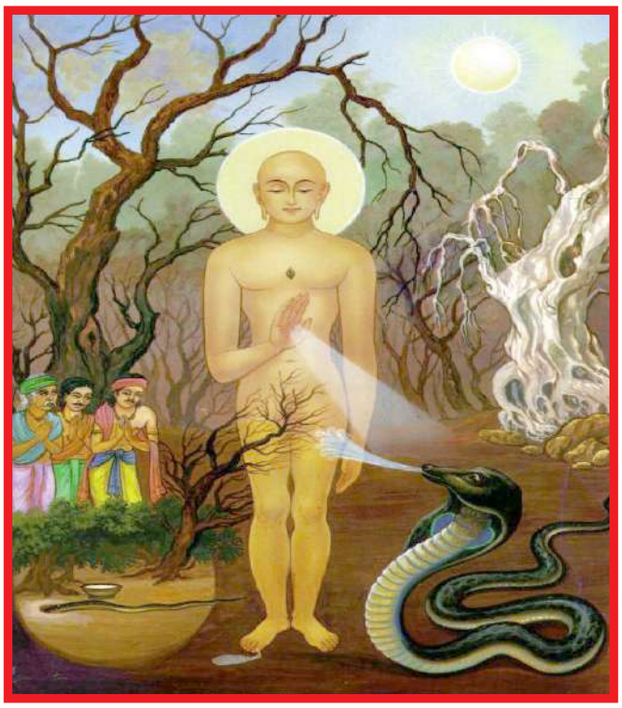

प्राचीन काल में एक तपस्वी श्रमण था- नाम था गोभद्र, वह बहुत तप किया करता था। एक-एक माह के उपवास करता था। भिक्षा से प्राप्त आहार ही वह ग्रहण करता था। एक बार भिक्षा लेने जा रहे गोभद्र के पावों के नीचे मेंढकी आ गयी और वह वहीं पर मर गई। गोभद्र के पीछे चल रहा उनका शिष्य यह दृश्य देख रहा था। गुरु की कोई प्रतिक्रिया न देख शिष्य ने सोचा कि शायद गुरु इस घटना से अनभिज्ञ हैं, अत: सरल, सहजस्वभावी शिष्य ने गुरु से निवेदन किया, गुरुदेव, एक मेंढकी आपके पैर के नीचे दब कर मृत्यु को प्राप्त हो गई है, अत: आप कृपया पाप का प्रायश्चित ले लें। शिष्य द्वारा कही गई हितकारी वाणी भी गुरु को अच्छी नहीं लगी, वे क्रोधित हो उठे, ''अरे, अभद्र शिष्य! गुरु के प्रति अविनय करता है, मैंने कोई मेंढकी नहीं मारी है'' शिष्य चुप हो गया, विचार करने लगा कि गुरुदेव का क्रोध शांत होने पर वे स्वयं ही प्रायश्चित ले लेंगे।

शाम हो गई, सायंकालीन प्रतिक्रमण का समय हो गया, अब तक गोभद्र ने प्रायश्चित नहीं लिया था। सरलहृदय शिष्य ने पुन: गुरु को आलोचना कर लेने का स्मरण करवाया। गोभद्र यह सुन आपे से बाहर हो गया, क्रोध में अंधा हो गया। अपना रजोहरण लेकर अपने शिष्य को मारने दौड़ा। शिष्य घबरा कर वहाँ से भागा। अंधेरे में गोभद्र एक खम्भे से टकरा गया, उसका सिर फट गया और वह वहीं मर गया। क्रोध-दशा में मृत्यु होने के कारण वे ज्योतिषी देव बने। ज्योतिषी देव की आयु पूर्ण कर वे कनकखल आश्रमपद के कुलपति के पुत्र के रुप में जन्मे। कुलपति ने पुत्र का नाम कौशिक रखा। कौशिक क्रोधी प्रवृत्ति का था, अत: आश्रम के लोग उसे चण्डकौशिक के नाम से पुकारने लगे।

एक दिन श्वेताम्बी के कुछ राजकुमार विचरण करते-करते आश्रम के उद्यान में आ पहुँचे। उद्यान में राजकुमार सुंदर फूलों को तोड़ने लगे। चण्डकौशिक ने राजकुमारों को फूल तोड़ने से रोका। राजकुमारों ने उसकी अनदेखी-अनसुनी की व फूल तोड़ना जारी रखा। चण्डकौशिक क्रोधी स्वभाव का तो था ही, तुरन्त क्रोधित हो उठा, वह राजकुमारों को मारने के लिए हाथ में कुल्हाड़ा लिए उनके पीछे भागा। राजकुमार तुरन्त भाग गए, किन्तु चण्डकौशिक उनका पीछा करता हुआ एक खड्डे में जा गिरा। कुल्हाड़े से सिर में गंभीर चोट लगने से चण्डकौशिक की वहीं मृत्यु हो गई।

अपने उद्यान से अत्यधिक आसक्ति थी चण्डकौशिक को, अत: अत्यन्त क्रोध की अवस्था में मृत्यु हो जाने के कारण चण्डकौशिक उसी उद्यान में दृष्टिविष सर्प बन कर जन्म लिया। दृष्टिविष सर्प अत्यन्त विषैला काला नाग था। अपने विष की ज्वालाओं से उसने अनेक मनुष्यों को भस्म कर दिया था। उसकी विशैली फुंकारों से उद्यान के पेड़-पौधे, लताएं, फूल आदि वनस्पति जल कर राख हो गई थी। सर्प की जहरीली ज्वालाओं की चपेट में आकर सारा उद्यान वीरान, निर्जन-उजाड़ हो गया, न तो वहाँ कोई वनस्पति ही बची, न ही उधर से गुजरने वाला कोई राहगीर। सारा जंगल नाग से आतंकित हो गया, मनुष्यों ने उस मार्ग से आना-जाना बन्द कर दिया था।

इसी काल में भगवान महावीर स्वामी कठोर साधना में लीन थे। उनका साधना काल साढ़े १२ वर्ष लगभग चला, इस साधना काल में प्रभु ने क्षमा, सहिष्णुता, सत्य, अहिंसा, अभय के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए। एक बार प्रभु महावीर मोराक सन्निवेश से उत्तरवाचाला नामक स्थान पर जा रहे थे। उत्तरवाचाला जाने के दो मार्ग थे- एक सीधा व लघु मार्ग व एक टेढ़ा व लम्बा मार्ग था। प्रभु ने उत्तरवाचाला जाने के लिए सीधे वाले मार्ग पर कदम बढ़ाए। यह मार्ग कनकखल नामक आश्रम पद के बीच से गुजरता था, जहाँ पर दृष्टिविष सर्प रहता था।

जंगल में पशु चराते हुए कुछ ग्वालों ने प्रभु को उस मार्ग पर जाते देखा। ग्वाले घबरा गए, उन्होंने प्रभु से निवेदन किया हे देव! कृपया आप इस मार्ग पर आगे न बढ़ें। इस मार्ग में एक अत्यन्त विषैला दृष्टिविष सर्प रहता है। उसने अनेक राहगीरों को, पशुओं को, हजारों पेड़ों, वृक्षों, फूलों, फलों को अपनी विषभरी, फुंफकारों से जला कर भस्म कर दिया है। कृपा कर आप दूसरा मार्ग पकड़ें, जो टेढ़ा, लम्बा अवश्य है किन्तु सुरक्षित है।

रेंगता हुआ नाग तुरन्त अपनी बाम्बी के बाहर निकला। जंगल में एक मनुष्य को, वो भी आंखे मूंदे स्थिर खड़ा देख, दृष्टिविष सर्प विस्मय में पड़ गया। विचार करने लगा कि इस वन में कभी कोई मानव आता ही नहीं, यह शायद मार्ग भटक कर इधर आ गया है, इसकी मृत्यु निकट है इसलिए यह मेरी बाम्बी के पास ही ध्यान मुद्रा में खड़ा हो गया है। सर्प को अत्यन्त क्रोध आया, आखिर विषधर तो विषधर ही था, उसने प्रभु महावीर पर जहरीली तीव्र दृष्टि डाली, उसकी विषाक्त आंखों से विषयुक्त प्रचण्ड ज्वालाएँ निकलने लगी जो किसी भी साधारण मानव को एक क्षण में भस्म कर सकती थी वे ज्वालाएँ, किंतु वीतरागी प्रभु पर इन प्रचण्ड ज्वालाओं का लेश मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा। वे स्थिर अपने स्थान पर ध्यानस्थ रहे। प्रभु पर कोई असर न होता देख दृष्टिविष सर्प ने अपनी दृष्टि को सूर्य की ओर **शेष पृष्ठ २६ पर...**

एक गृहिणी अपने परिवार के लिए
क्या चुनेगी ?
NAKODA
Since 1978
सस्ता या सेहत ?
45 वर्षों से आपका अपना
विश्वसनीय ब्रांड - NAKODA
Since 1978
DAIRY TAAZA
Cow's Desi Ghee
MUSTARD OIL
Kacchi Ghani
SESAME OIL
Filtered
GROUNDNUT OIL
Refined
GROUNDNUT OIL
Refined
SUNFLOWER OIL
Refined
SOYABEAN OIL
Refined
RICE BRAN OIL
DAIRY SPECIAL
Desi Ghee
For Free Home Delivery
89288 82457 | 85915 62269
89285 86181 | 91377 56585
/nakodagheetel

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

समस्त जैनियों का महावीर जन्म कल्याणक
महा महोत्सव फैले कण-कण, जन-जन में
अहिंसा का उद्भव 'महावीर जन्म कल्याणक'
के पावन पर्व पर शुभकामनायें

जय कुमार नृपत्या
व सम्पूर्ण परिवार

A-602, चैतन्य टावर, प्रभादेवी, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400025
दुरध्वनिः 022-2421 0484, (का.) 022-26754331

भारत को 'भारत' ही बोला जाए  Remove 'INDIA' Name From The Constitution

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

सत्य-अहिंसा का प्रचार, जीवों के लिए हृदय में प्यार,
शुभ हो आपको तीर्थंकर महावीर जन्मकल्याणक पर्व

परस्परोपग्रहो जीवानाम

IndianOil  Assam Oil

DANMAL SOGANI & SONS

Dealer : Indian Oil Corporation Ltd. (Assam Oil Division)

Head Office : Bargola Building Fancy Bazar,
Guwahati, Assam, Bharat-781001

Branch Office : Baihata Charali, Dist. Kamrup,
Assam, Bharat-781381 | Ph. : 03621-286624

भारत को 'भारत' ही बोला जाए  Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पृष्ठ २४ से... करके तीखी दृष्टि से महावीर की ओर देखा। प्रभु महावीर पर यह वार भी अप्रभावी रहा। दूसरा प्रहार भी खाली जाता देख सर्प और क्रोधित हो उठा। दृष्टिविष सर्प ने अपना फन फैलाया व पूरी शक्ति के साथ महावीर के पैर के अंगूठे को डंस लिया। महावीर अब भी अविचलित शान्त भाव से खड़े रहे। श्रमण महावीर के पैर के अंगूठे से रक्त के स्थान पर श्वेत दूध-सी धारा बह निकली। नागराज अचरज भरी दृष्टि से कभी महावीर को व कभी दूध की धारा को देखता रहा, विचार में डूब गया कि ये महापुरुष कौन है, जिन पर मेरे आक्रमणों का कोई प्रभाव नहीं हुआ।

महावीर अब अपने ध्यान को समाप्त कर चुके थे, उन्होंने अत्यन्त वात्सल्य एवं ममता भरी नजरों से नागराज की ओर देखा। महावीर के श्री मुख पर शांति स्थापित थी। नागराज पर महावीर की शीतलता, माधुर्य, ममता एवं वात्सल्य का प्रभाव पड़ने लगा, उसको भी शांति एवं शीतलता प्राप्त हो रही थी।

महावीर ने नागराज को सम्बोधित करते हुए कहा, जागो, जागो चण्डकौशिक! क्रोध को शान्त कर दो। तुम शान्त हो जाओ। ''चण्डकौशिक! यह नाम कुछ सुना हुआ सा लगता है'' महावीर का अमृतमय उद्बोधन श्रवण कर चण्डकौशिक का क्रोध शान्त हो चुका था। प्रभु ने उसे जातिस्मरण करवाया। वह पूर्णत: शान्त हो विचारों में उतरता चला गया व उसे जाति स्मरण हो आया। अपने पूर्व जन्मों की समस्त घटनाएँ उसकी स्मृति में चित्रित हो गईं। उसे आभास हो गया कि पूर्व जन्मों में भी क्रोध के कारण ही उसकी दुर्गति हो गई थी। भगवान महावीर ने उसे आत्मकल्याण का मार्ग बताया। चण्डकौशिक की अर्न्तचेतना जाग्रत हो गई, उसे अपनी त्रुटियों का एहसास हो गया था। वह प्रभु के चरणों में लिपट कर अपने द्वारा किए गए पापों की क्षमा मांगने लगा, प्रायश्चित करने लगा।

चण्डकौशिक पूर्णत: शान्त हो चुका था, अगली सुबह ग्वाले यह देखकर अत्यन्त आश्चर्यचकित रह गए कि श्रमण भगवान महावीर को सर्प ने भस्म नहीं किया वरन् वे स्थिर, शान्तचित्त खड़े हैं। नागराज भी अपनी बाम्बी में मुँह डालकर शान्त-स्थिर पड़ा है। कौतूहलवश उन्होंने नागराज पर पत्थर-कंकड़ भी मारे, किंतु यह क्या! इतना भयंकर दृष्टिविष सर्प शान्त एवं स्थिर है, कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रहा है। निष्प्राण जीव की भांति पड़ा हुआ है। सभी ग्वालों को विदित हो चुका था कि श्रमण महावीर के प्रभाव से नागराज पूर्णत: शान्त हो चुका था। ग्वालों ने यह समाचार सारे नगर में प्रसारित कर दिया। नगर के स्त्री, पुरुष, बच्चे उद्यान में एकत्रित हो गए। चण्डकौशिक को स्थिर, शान्तचित्त देखकर उनकी प्रसन्नता का कोई पारावार न रहा। कोई नागराज की पूजा-अर्चना करने लगा, कोई दूध पिलाने लगा, तो कोई खीर चढ़ाने लगा। इन सबसे बेखबर नागराज तो अपनी बाम्बी में मुँह डाले निष्क्रिय पड़े रहे। मीठी खीर के कारण अनेक चींटियां नागराज के शरीर पर चिपक गईं व काटने लगी। नागराज का शरीर लहूलुहान हो गया। नागदेवता तो समभाव को प्राप्त कर चुके थे। वे देह से ऊपर उठ चुके थे। अत: वे शान्त व स्थिर हो पड़े रहे। वास्तव में वे अपना प्रायश्चित कर रहे थे, पश्चाताप की अग्नि में जल रहे थे, कर्मों को खपा रहे थे। अन्त में पश्चातापस्वरुप उन्होंने अनशन को धारण कर लिया। १५ दिन के अनशन के पश्चात् नागराज मृत्यु को प्राप्त हुए। तद्पश्चात् वे सहस्तार स्वर्ग में उत्पन्न हुए।

भगवान महावीर द्वारा दृष्टिविष सर्प के हृदय परिवर्तन की घटना की चर्चा चहुँओर होने लगी, यकीनन भगवान महावीर का अभय भाव, अहिंसा के प्रति दृढ़ निष्ठा, मैत्री व करुणाभाव इतना प्रबल व असरकारी था कि विषधर नागराज भी शान्त, समभावी बन गए व आत्मकल्याण-पथ पर अग्रसर हो मोक्षगामी बन गये।

**- डॉ. रेणु रघुवीर**

परस्परोपग्रहो जीवानाम

# दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

## अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

# D. Surendra Kumar

**B/o SRI D. VEERENDRA HEGGEDE**

**DHARMASTHALA**

**VICE - PRESIDENT**

**S.D.M Educational Society, Ujire, D.K.**

Shrutha Complex, No.19, Primrose Road,
Off. M.G. Road, Behind Prestige Meredian, Bangalore,
Karnataka, Bharat-560025. Ph.: 080-25585037
e-mail : kumar.surendra99@gmail.com

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

# अहिंसा ही मानव धर्म है : तीर्थंकर महावीर

**''मधुरिमा कंठ में न होती तो शब्द विषपान बन गया होता।**
**आस्था दिल में न होती तो हृदय पाषाण बन गया होता।**
**प्रभू वीर से लेकर अब तक अगर ऐसा जिन धर्म न मिलता**
**तो यह संसार वीरान बन गया होता''**

अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। तीर्थंकर महावीर अहिंसा और अपरिग्रह की साक्षात मूर्ति थे। तीर्थंकर महावीर स्वामी ने हमें अहिंसा का पालन करते हुए, सत्य के पक्ष में रहते हुए, किसी के हक को मारे बिना, किसी को सताए बिना, अपनी मर्यादा में रहते हुए पवित्र मन से, लोभ-लालच किए बिना, नियम में बंधकर सुख-दुख में संयमभाव में रहते हुए, आकुल-व्याकुल हुए बिना, धर्म संगत कार्य करते हुए 'मोक्ष पद' पाने की ओर कदम बढाते हुए दुर्लभ जीवन को सार्थक बनाने का संदेश दिया, वे सभी के साथ समान भाव रखते थे और किसी को भी कोई दुःख नहीं देना चाहते थे, पंचशील सिध्दान्त के प्रवर्तक एवं जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी मूर्तिमान प्रतिक थे, जिस युग में हिंसा, पशुबलि, जात-पात के भेदभाव का बोलबाला था, उसी युग में महावीर ने जन्म लिया, उन्होंने दुनिया सत्य एव अहिंसा जैसे खास उपदेशों के माध्यम से सही राह दिखाने की कोशिश की, उन्होंने जो बोला सहज रूप से बोला, सरल एवं सुबोध शैली में बोला, सापेक्ष दृष्टि से स्पष्टिकरण करते हुए बोला, आपकी वाणी ने लोक हृदय को अपूर्व दिव्यता प्रदान की, आपका समवशरण जहाँ भी गया वह कल्याणधाम हो गया।

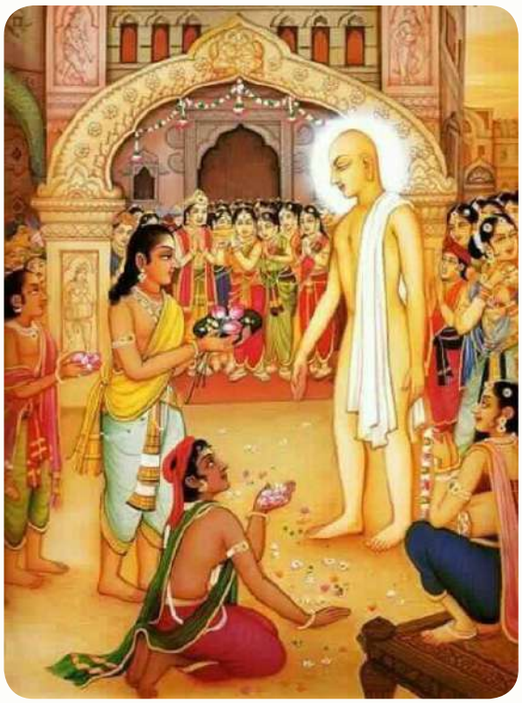

तीर्थंकर महावीर ने प्राणीमात्र की हितैषिता एवं उनके कल्याण की दृष्टि से धर्म की व्याख्या की, आपने कहा

''धम्मो मंगल मुक्किटठं, अहिंसा संजमा तवो''

(धर्म उत्कृष्ट मंगल है, वह अहिंसा संयम तथा तप रूप है)

एक धर्म ही रक्षा करने वाला है, धर्म के सिवाय संसार में कोई भी मनुष्य का रक्षक नहीं है।

धर्म भावना से चेतना शुध्दिकरण होता है। धर्म से वृत्तियों का उन्नयन होता है। धर्म व्यक्ति के आचरण को पवित्र एवं शुध्द बनाता है। धर्म से सृष्टि के प्रति करूणा एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न होती है, इसलिए तीर्थंकर महावीर ने कहा,

''एगा धम्म पडिमा, जं से आयो पवज्जवजाए''

अर्थात धर्म ऐसा पवित्र अनुष्ठान है जिससे आत्मा का शुध्दिकरण होता है। तीर्थंकर महावीर ने मानव भव दुर्लभता का वर्णन करते हुए गणधर गौतम से कहा था कि हे गौतम! सब प्राणियों के लिए चिरकाल में मनुष्य जन्म दुर्लभ है क्योंकि कर्मो का आवरण उतीव गहन है, अंततः इस भाव को पाकर एक क्षण के लिए भी प्रमाद तथा आलस नहीं करना चाहिए, अनेक गतियों और योनियों में भटकते जब जीव शुध्दि को प्राप्त करता है तब कहीं जाकर मनुष्य योनि प्राप्त होती है।

तीर्थंकर महावीर का कहना था कि किसी आत्मा की सबसे बड़ी गलती अपने असली रूप को नहीं पहचानना है तथा यह केवल आत्मज्ञान प्राप्त कर ही ठीक की जा सकती है।

मनुष्य को अपने जीवन में जो धारण करना चाहिए वही धर्म है, धारण करने योग्य क्या है? क्या हिंसा, क्रूरता, कठोरता, अपवित्रता, अहंकार, क्रोध, असत्य, असंयम, व्यभिचार, परिग्रह आदि विकार धारण करने योग्य है? यदि संसार का प्रत्येक व्यक्ति हिंसक हो जाए तो समाज का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा तथा सर्वत्र भय, अशांति एवं पाशविकता का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा। संपूर्ण विश्व में एकमात्र 'जैन धर्म' ही इस बात में आस्था रखता है कि प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है अर्थात् महावीर की तरह ही प्रत्येक व्यक्ति 'जैन धर्म' ज्ञान प्राप्त कर, उसमें सच्ची आस्था रख, उसके अनुसार आचरण कर बड़े पुण्योदय से उसे प्राप्त कर दुर्लभ मानव योनी का एकमात्र सच्चा व अंतिम सुख, संपूर्ण जीवन जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होने वाले कर्म करते हुए मोक्ष महाफल पाने हेतु कदम बढ़ाना तथा उसे प्राप्त कर वी महावीर बन, दुर्लभ जीवन को सार्थक कर सकता है।

महावीर ने कोई ग्रंथ नहीं लिखा उन्होंने जो उपदेश दिए, गणधरों ने उनका संकलन किया, वे संकलन ही शास्त्र बन गए, इनमें काल, लोक, जीव आदि के भेद–प्रभेदों का इतना विशुध्द एवं सूक्ष्म विवेचन है कि यह एक विश्व कोष का विषय नहीं अपितु ज्ञान विज्ञान की शाखाओं के अलग-अलग विश्व कोषों का समाहार है।

आज के भौतिक युग में अशांत जन मानस को तीर्थंकर महावीर की पवित्र वाणी ही परम सुख और शांति प्रदान कर सकती है यदि आज संसार के लोग तीर्थंकर महावीर के अहिंसा परमो धर्म, अपरिग्रह और अनेकांतवाद को अपना लें तो प्रत्येक प्रकार की समस्याएं मिट सकती है, शांति स्थापित को सकती है और मानव सुखी रह सकता है।

**-कोमल कुमार जैन**
**चेयरमैन– ड्यूक फैशन्स ( इंडिया ) लि.,**
**लुधियाना**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जिसने जीता मन को उससे बड़ा न कोई वीर
धरती के सच्चे वीर हैं तीर्थंकर महावीर
'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

B. K. JAIN

ACCUSPIRALS

AN ISO 9001:2000 Company

MFRS :
QUALITY GEARS
SPIRAL BEVEL, STRAIGHT BEVEL, WORM AND
WORM WHEELS, GEAR BOXES & PRECISION COMPONENTS

Works :
#D-424, 425, 10th main, 2nd Stage,
Peenya Industrial Estate, Bangalore, Karnataka, Bharat-560 058
दूरध्वनि : +91-80-28362280 / 28364749 / 51171539
Telefax: +91-80-28360814 / भ्रमणध्वनि : 09341232704
अणुडाक : contact@accuspirals.com
अंतरताना : www.accuspirals.com

Resi :
#320, 1st Block, 5th Cross,
R.T. Nagar, Bangalore
Karnataka, Bharat-560 032
दूरध्वनि : +91-80-23430115
Telefax: +91-80-23332964

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर हार्दिक शुभकामनायें

परस्परोपग्रहो जीवानाम

Basant Kumar Chopra Jain
Mob. 09631740589

Post. Naharia Bazar,
Dist. Madhubani, Bihar, Bharat- 847108

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
समस्त जैनियों का
महावीर जन्म कल्याणक महा महोत्सव
फैले कण-कण, जन-जन में अहिंसा का उद्भव
'महावीर जन्म कल्याणक' के पावन पर्व पर शुभकामनायें

Vinod Jain
( Director)
भ्रमणध्वनि : 9837013858
Vineet Jain

ALLEGIANCE OVERSEAS
Government Recognised Export House
An ISO 9001-2008 & 14001-2004 Certified Company
6-7, Sector-3, Vibhav Nagar, Firozabad,
Uttar Pradesh, Bharat - 283203
अणुडाक : office@allegiance-overseas.com
B-12/15 Expo Mart, Greater Noida, Bharat - 201310

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# प्रथमाचार्य शान्तिसागरजी महाराज के संदेश की विशेषता

प्रथमाचार्य शान्तिसागर जी महाराज ने अपने जीवन में अनेक व्रत व उपवास किये। तीर्थंकर महावीर स्वामी के बाद प्रथमाचार्य शान्ति सागर जी महाराज ने अत्यंत कठिन 'निष्क्रीडीत व्रत' किया। घोर तपस्वी आचार्य सन्मती सागर जी महाराज, वर्तमान आचार्य प्रसन्न सागर जी ने ५५७ दिन का निष्क्रिय व्रत किया है। प्रथमाचार्य शान्तिसागर जी महाराज ने सिद्धक्षेत्र कुन्थलगिरी (महाराष्ट्र) से अपने अंतिम उपदेश में कहा था सम्यक्तव किसे कहते हैं, जिसका कुंद कुन्दाचार्य स्वामी ने 'समय सार', 'प्रवचन सार', 'नियम सार', 'पंचास्तीकाय', अस्ट पाहुड' में और गोम्मट सार में सुंदर वर्णन किया है, इस पर श्रद्धा रखो, आत्म कल्याण करो। संयम धारण करो, सत्य, अहिंसा का पालन करो। आचार्य मुनि शान्तिसागर जी का ८ सितम्बर १९५५ को सल्लेखना का २६ वॉ दिन था।

**- एम.सी. जैन**
**पत्रकार, चिकलठाणा**

# जैन समाज की ओर से महावीर जन्म कल्याणक पर्व
## पश्चिम बंगाल राजभवन में मनाने के लिए राज्यपाल को सौंपा गया ज्ञापन

**कोलकाता:** समग्र जैन समाज पश्चिम बंगाल परामर्शदाता एवम जैन संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन साहिल जैन ने पश्चिम बंगाल के राजभवन पहुंचकर राज्यपाल से मुलाकात की एवम जैन समाज की विभिन्न संस्थाओं की ओर से सम्मानित किया। महामहिम राज्यपाल सी वी आनन्द बोस से सकल जैन समाज की ओर से साहिल जैन ने तीर्थंकर महावीर स्वामी की २६२२वें जन्मकल्याणक के विषय में जानकारी देते हुए महामहिम को बताया कि इस वर्ष जैन पंचांग के अनुसार ३ अप्रैल को पड़ रही है किंतु उसका अवकाश शासन की ओर से ४ अप्रैल को घोषित किया गया है, सकल जैन समाज की ओर से निवेदन करते हुए ३ अप्रैल को करने की मांग की, साथ ही निवेदन किया कि देश के कई राज्यों में तीर्थंकर महावीर के सत्य और अहिंसा के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से राजभवन में महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किये जाने का अनुरोध किया।

महामहिम राज्यपाल ने इस पर विचार करने की बात कही, इस दौरान देश के समग्र जैन समाज भारत, श्री दिगम्बर जैन महासमिति, मुर्शिदाबाद दिगम्बर जैन समाज, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा मुर्शिदाबाद, जैन धर्म संरक्षक महासंघ, दयोदय महासंघ भारत, ग्लोबल महासभा, पद्मप्रभु मानव कल्याण फाउंडेशन, अंतरराष्ट्रीय जैन संघ आदि के समर्थन पत्र महामहिम को सौंपे गए।

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर हार्दिक शुभकामनायें

डॉ. राजकुमार हिराचंद शाह
डॉ. निकीता राजकुमार शाह
डॉ. रितेश, डॉ. रीमा शाह
श्रीमती शिप्रा, सौमिल आर. शाह

158, चिराग, शेर-ए पंजाब सोसायटी, महाकाली केव्हज रोड,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत- 400 093
दूरध्वनि - 022-022-35930361
क्लिनिक : 022-7400166631/32

भारत को 'भारत' ही बोला जाए  Remove 'INDIA' Name From The Constitution

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

RAJESH RAKESH CHORARIA
KBC INVESTMENTS
Deals in shares & securities
1, India Exchange Place Room No 217,
2nd Floor, Kolkata, West Bengal, Bharat - 700 001
Office • 033 6980 7000, email : kbcinvestment@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए  Remove 'INDIA' Name From The Constitution

# प्रख्यात पत्रकार एम सी जैन मराठी व हिंदी भाषा के भिष्मपितामह

महाराष्ट्र का प्रख्यात धर्म तीर्थ (कचनेर जी के पास) क्षेत्र पर पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के बाद आहारचर्या के उपरान्त राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य मुनि देवनंदी जी और भारत गौरव आचार्य मुनी गुप्तीनंदीजी के कर-कमलों द्वारा एम.सी. जैन द्वारा लिखित पुस्तकों का विमोचन करते हुए कहा कि ८४ वर्ष के उम्र में दो पुस्तकों का लेखन एक अद्भुत घटना है। आचार्य गुप्तीनंदी जी ने यह भी कहा कि एम.सी. जैन मराठी - हिन्दी भाषा के भिष्म पितामह हैं, इस अवसर पर प्रा. डा. राजेश एम. पाटणी, सौ. डा. स्नेहल पाटणी, आनंद काला नांदगाव उपस्थित थे। **- एम.सी. जैन**

# अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्धकारिणी कमेटी में सुधांशु कासलीवाल सभापति एवं महेन्द्रकुमार पाटनी मंत्री पद पर निर्वाचित

**जयपुर:** उत्तर भारत के सबसे बड़े जैन तीर्थ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्धकारिणी कमेटी के पदाधिकारियों के त्रैवार्षिक चुनाव नारायणसिंह सर्किल स्थित भट्टारकजी की नसियाँ में निर्वाचन अधिकारी डॉ. पदमकुमार जैन एवं रूपिन के. काला की देखरेख में सम्पन्न हुए। चुनाव में सुधांशु कासलीवाल को सभापति पद पर तथा महेन्द्रकुमार पाटनी को मंत्री पद पर निर्वाचित घोषित किया गया। उपसभापति पद के लिए सी.पी. जैन एवं शान्तिकुमार जैन, संयुक्त मंत्री पद के लिए सुभाषचन्द जैन एवं उमरावमल संघी तथा कोषाध्यक्ष पद पर विवेक काला निर्वाचित घोषित हुए।

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

राजमल चंगेडिया जैन - सौ. मंगला चंगेडिया जैन
आदेशकुमार चंगेडिया जैन - सौ. प्रियंका चंगेडिया जैन
संभव चंगेडिया जैन व चंगेडिया परिवार
रूपाली गुगळे व शरण्या गुगळे

श्री राजमल श्रीमल
जनरल मर्चेन्ट ॲण्ड कमिशन एजेन्ट
56, मार्केटयार्ड, अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत-424001,
दूरध्वनि: 0241-2452345
भ्रमणध्वनि : 09850995099
प्रोप्रा. राजमल श्रीमल चंगेडिया जैन
चंगेडिया आऊट डोअर्स
अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत-414001 फोन : 0241-2547070
आदेश चंगेडिया - भ्रमणध्वनि 09822288443, 09011155555
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Ashok Jain
Mob: 9821293014
2101, Eden Woods, Shastri Nagar, Andheri East,
Mumbai, Maharashtra, Bharat-400053
Ph: 022-26316798
E-mail: ashokjain1966@hotmail.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# रमेश मुथा फिर से बने नाकोड़ा के अध्यक्ष

**बालोतरा:** नाकोड़ा ट्रस्ट चुनाव के परिणाम पर नाकोड़ा तीर्थ के भक्तों की नजर नाकोड़ाजी तीर्थ के ट्रस्ट के चुनाव पर थी, परिणाम बहुत ही सुंदर आया, जो भी ट्रस्टी बने हैं उनको दादा के तीर्थ की सेवा करने का अनमोल अवसर मिला है।

नाकोड़ा तीर्थ के अध्यक्ष फिर से चैन्नई प्रवासी रमेश मुथा बने, देश के तीर्थ प्रेमी चाहते हैं कि जो काम ६ साल में रमेश मुथा ने किया उनकी जितनी भी अनुमोदना की जाए, उतनी कम होगी, जो भी नाकोड़ाजी तीर्थ की यात्रा करके आये हैं सब के मन से एक ही आवाज आती है फिर से एक बार रमेश मुथा नाकोड़ाजी के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हों।

विदित हो कि अद्भुत, अद्वितीय काम करने वाले रमेश मुथा ने जैन शासन के अनमोल श्रावक हैं, समाज को छोटे से छोटे आदमी ने भी कोई निवेदन दिया तो रमेश मुथा ने उनकी सुनी है, कोई तकलीफ हो तो समाधान भी किया है।

कई तीर्थों की तन-मन और धन से सेवा देने वाले रमेश मुथा फिर से दादा तीर्थ श्री नाकोड़ाजी के अध्यक्ष पद पर अपना कार्यकाल निष्ठापूर्वक पूर्ण करें, ऐसा 'जिनागम' परिवार नाकोड़ा बाबा से विनंति करता है।

# धर्मतीर्थ क्षेत्र पर शान्ति पंचकल्याणक एवं महामस्तकाभिषेक का आयोजन

**चिकलठाणा (महाराष्ट्र):** भारत गौरव, राष्ट्रसंत, प्रज्ञायोगी दिगम्बराचार्य गुप्तिनंदीजी के प्रेरणा एवं आशीर्वाद से नवनिर्मीत क्षेत्र 'धर्म तीर्थ' पर १६ फरवरी से २४ फरवरी २०२३ के दरम्यान 'नव ग्रह शान्ति जिनालय' के जिन बिम्बों का पंच कल्याणाक एवं महामस्तकाभिषेक संपन्न हुआ, समस्त भारत वर्ष के भक्त तथा विदशों से भी भक्तगण पधारे थे। भारतवर्ष के विविध स्थानों से लगभग पचास से अधिक दिगम्बर मुनि, आर्यिकाएं, त्यागी भी पधारे थे। भारत गौरव राष्ट्रसंत आचार्य गुप्तीनंदीजी के मार्गदर्शन में मुनियों आर्यिकाओं के प्रवचन हुए। आवास, भोजन की समुचित व्यवस्था की गई थी। 'धर्म तीर्थ' क्षेत्र औरंगाबाद से ४० कि.मी., चिकलठाणा से ३० कि.मी. दूरी पर है। अतिशय क्षेत्र कचनेर जी से केवल २ कि.मी. दूर है।

**- एम सी जैन, पत्रकार**
**९४२३१५०११६**

# मरूधर ज्योति मणिप्रभाश्री जी का चातुर्मास शिक्षा नगरी कोटा में होगा

**कोटा:** परमपूज्य साध्वीरत्ना, तीर्थप्रभाविका, मरुधर ज्योति श्री मणिप्रभा श्री जी म.सा. ने कोटा चातुर्मास फरमा दिया है।

श्री जैन श्वेताम्बर पेढ़ी कोटा की समस्त कार्यकारिणी को बहुत-बहुत बधाई, सभी की मेहनत रंग लाई, कोटा संघ को मिला अनुपम लाभ।

कहते हैं संत और बसंत में एक ही समानता है, जब बसंत ऋतु आती है प्रकृति सुधर जाती है और जब जैन संत आते हैं तो संस्कृति सुधर जाती है। बारंबार अनुमोदना सभी पीढ़ी के कार्यकारिणी सदस्यों को, सभी के प्रयासों को मेरा नमन।

**- ऋषभ चंद छाजेड़, कोटा**

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES
NEW PRODUCT
FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO® An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada, Navimumbai-400705, INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

**Samrat Jewellers**

नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें

**अनोखीलाल नाहर जैन** **पंकज नाहर जैन**

३९ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

अहंकार महाअग्नि है,
जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

**MEGHNA ENTERPRISES**
RAJEEV T. HIRAWAT & MANAV R. HIRAWAT
Fw 9012, Bharat Diamond Bourse,
Bandra Complex, Opp Asian Heart Institute Hospital,
Gate 11, Bandra East, Mumbai,
Maharashtra, Bharat -400051
Tel.: 022-2369 05 38, Fax. 022-2369 0539

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

**भंवरलाल पगारिया जैन**
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय महादेव युवा संघ केंगेरी द्वारा महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में चैलेघट्टा स्थित श्री चामुंडेधरी माताजी मंदिर के निकट मैदान में आयोजित श्री महाशिवरात्रि महोत्सव 'एक शाम भोलेनाथ के नाम' कार्यक्रम में राजस्थान से आए हुए भजन कलाकार गजेंद्र राव, ललिता पवार एवं अन्य कलाकारों ने एक से बढ़कर भजनों की प्रस्तुति दी। श्रद्धालु हर्ष एवं उल्लास के साथ झूम उठे एवं पांडाल हर-हर महादेव के उद्घोष से गूंज उठा। मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी महेन्द्र मुणोत ने अपने संबोधन में कहा कि 'हमारे में जो बुराइयां छुपी हुई हैं उन्हें भगवान शिव के चरणों में अर्पित कर दो, जीवन सुख मय हो जाएगा। इस अवसर पर विभिन्न समाज के प्रमुख उपस्थित थे। संघ के सदस्यों ने श्री मुणोत एवं अन्य अतिथियों को सम्मानित किया।

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

पावन दिन है आ गया,
महावीर जन्म कल्याणक पर्व
जैन एकता का वर माँग लो
फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर
हार्दिक शुभकामनायें

Mob: 9448779151

Medal Hosiery Centre

283 Old Tharayapet,
Bangalore, Karnatka, Bharat - 560053

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

समुदाय टीवी द्वारा जीटी मॉल विजय नगर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी महेन्द्र मुणोत ने पुलवामा आतंकवादी हमले में शहीद हुए सीआरपीएफ जवानों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए युवाओं से कहा कि 'वैलेंटाइन डे पर आप किसी को फूल उपहार देना चाहते हैं तो एक नहीं दो फूल खरीदें, पहला शहीदों को अर्पण करें एवं दूसरा अपने प्रेमी को' आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

स्नेहजीवी गेळेयरा बळगा केंपापुर अग्रहरा द्वारा आयोजित श्री अण्णमादेवी पूजा महोत्सव में मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने मां अण्णम्मामा देवी की पूजा अर्चना कर अन्नदान कार्यक्रम का शुभारंभ किया। आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

कनकपुरा रोड स्थित अमृतधारा गौशाला में गो भक्ति एवं देश भक्ति गीत गायन 'जागो हिंदुस्तानी' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि युवा समाजसेवी गौप्रेमी रहे महेन्द्र मुणोत थे। कोल्हापुर से आए हुए कलाकारों ने एक से बढ़कर एक देश भक्ति के गीत प्रस्तुत किए जिस पर तालियों की गड़गड़ाहट एवं भारत माता की जय, वंदे मातरम के उद्घोष से श्रोताओं में देशभक्ति का ज्वार दिखाई दे रहा था। श्री मुणोत ने अपने वक्तव्य में लोगों से गौ सेवा का आह्वान किया।

अंतिम मौका !!! अंतिम मौका !!! अंतिम मौका !!!

# नाईस इंश्योरेंस लैंडमार्क प्रस्तुत करता है

1 साथ 2 पीढ़ी कवर

एक जबरदस्त प्लान सभी उम्र के लिए (0 से 55)

आप अपने बच्चो को आगे आने वाले दो जनरेशन के लिए

**कैश-प्रॉपर्टी** के रुप में गिफ्ट दे सकते है...

हर महीने 50000/- सिर्फ 15 वर्ष निवेश करने से

- आजीवन गारेंटेड टेक्स फ्री रिटर्न
- आजीवन बढता हुआ रिस्क कवर
- आजीवन लोन सुविधा व सरेंडर वैल्यू
- एक्सीडेंटल रिस्क कवर के साथ

| प्रीमियम भरने की अवधि | रिस्क कवर ADDB सहित | आजीवन गारेंटेड टेक्स फ्री रिटर्न | सरेंडर वैल्यू 30 वर्ष में | | सरेंडर वैल्यू 40 वर्ष में | | सरेंडर वैल्यू 50 वर्ष में | | सरेंडर वैल्यू 60 वर्ष में | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | SSV | कुल रिटर्न | SSV | कुल रिटर्न | SSV | कुल रिटर्न | SSV | कुल रिटर्न |
| 15 वर्ष | 1.5 - 8.4 करोड़ | 599999 | 1.95 करोड़ | 2.83 करोड़ | 2.95 करोड़ | 4.42 करोड़ | 4.24 करोड़ | 6.30 करोड़ | 5.95 करोड़ | 8.59 करोड़ |
| 20 वर्ष | 2.1 - 12.4 करोड़ | 870000 | 2.93 करोड़ | 3.80 करोड़ | 4.39 करोड़ | 6.13 करोड़ | 6.28 करोड़ | 8.89 करोड़ | 8.79 करोड़ | 12.27 करोड़ |
| 25 वर्ष | 2.5 - 17 करोड़ | 1196000 | 4.07 करोड़ | 4.66 करोड़ | 6.04 करोड़ | 7.84 करोड़ | 8.61 करोड़ | 11.60 करोड़ | 12.03 करोड़ | 16.22 करोड़ |
| 30 वर्ष | 3 - 21.8 करोड़ | 1528000 | 5.39 करोड़ | 5.39 करोड़ | 7.88 करोड़ | 9.41 करोड़ | 11.33 करोड़ | 14.19 करोड़ | 15.46 करोड़ | 20.05 करोड़ |

Above Statements are based on certain assumptions, which are liable to change according to Government / Corporation's Polices

जल्दी कीजिए!

बुकिंग की अंतिम तारीख **31-03-2023**

आज ही कॉल करे!

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK

One Stop Insurance Solution in India !

**Legacy of 40 Years | 25000 Happy Customers |11000 Claims Solved**

**Life Insurance | Jewellers Block | Health Insurance |Motor Insurance**

हमारी सेवाएँ पूरे भारत में ऑनलाईन द्वारा ले सकते है।

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th Floor, Dr. A.Merchant Road Kabutar Khana, Near Kalbadevi, Marine Lines (East) Mumbai- 400002

**Call on : 9869230444 / 9869050031 • www.niceinsure.com**

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

# मुल्तान, पाकिस्तान में १५० साल पुराना जैन मंदिर

मुल्तान-पाकिस्तान में जैन मंदिर की दीवारों पर जैन धर्म के सभी तीर्थंकरों के चित्र आज भी मौजूद हैं। मंदिर की दीवार पर नवकार मंत्र अंकित है, यह जैन मंदिर १५० साल पुराना था, लेकिन आज इस जैन मंदिर में और इस मंदिर से सटे धर्मशाला में एक जामिया हमीदिया तमिल कुरान मदरसा चल रहा है।

एक समय इस भव्य जैन मंदिर के प्रांगण में सभी को दो वक्त का भोजन मिलता था, जब १९४७ में भारत और पाकिस्तान का बंटवारा हुआ। चारों ओर दंगे हुए थे। भारत से पाकिस्तान या पाकिस्तान से भारत जाने वाली ट्रेनें और बसें टर्मिनस पर पहुंचते ही कब्रिस्तान में तब्दील हो गई थी।

पंजाब के मुल्तान में एक जैन मंदिर था, जो बंटवारे के बाद अब पाकिस्तान में है। जैन समुदाय मुल्तान से भारत में मूर्तियों के हस्तांतरण के बारे में चिंतित थे। दंगों के कारण वे बस या ट्रेन से भारत नहीं जा सकते थे और न ही पाकिस्तान में रह सकते थे।

किंवदंतीनुसार समुदाय के कुछ लोग चार्टर्ड विमान लेने के लिए दिल्ली गए थे, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली तो वे बंबई चले गए। अंत में उन्हें एक निजी कंपनी से प्रति व्यक्ति ४०० रुपये के किराए पर एक विमान मिला। (उस समय के ४०० की कीमत की कल्पना कर सकते हैं) विमान में लोगों के साथ मंदिर की ८५ मूर्तियां, तमाम जिनवाणी, घरेलू सामान लाया गया, यह ओवरलोड हो गया, पायलट ने यह कहते हुए इसे उड़ाने से मना कर दिया कि यह डबल लोडेड है, उन्होंने केवल २-३ मूर्तियाँ लेने का सुझाव दिया, ताकि सभी मूर्तियाँ एक जैसी दिखें।

सभी स्त्रियाँ रोते हुए विमान से उतर गईं और कहने लगीं हमें यहाँ छोड़ दो लेकिन सभी मूर्तियाँ और जिनवाणी ले जाओ, घर का सारा सामान निकालने के बाद भी प्लेन ओवरलोड था।

पायलट ने कहा कि या तो लोग जा सकते हैं या मूर्तियां। लोगों ने उनसे मूर्तियां ले जाने को कहा। लोगों का ऐसा विश्वास देखकर पायलट हैरान रह गया। उसने सोचा कि अगर वह उन्हें पाकिस्तान में छोड़ देगा तो वे वैसे भी मर जाएंगे। उसने मूर्तियों और लोगों, दोनों को

लेने का जोखिम उठाया।

अंत में विमान ने उड़ान भरी। सभी ने णमोकार मंत्र का जाप किया, उस समय विमान में सवार महिलाओं ने संकल्प लिया कि जब तक विमान जोधपुर नहीं पहुंचेगा तब तक न तो कुछ खाएंगे और न ही पानी पीएंगे। विमान सफलतापूर्वक जोधपुर हवाई अड्डे पर उतरा।

पायलट हैरान था कि डबल-लोडेड विमान इतनी आसानी से, सुरक्षित रूप से, बिना किसी परेशानी के उड़ गया। पायलट ने कहा कि उसने कभी ऐसा विमान नहीं उड़ाया जो इतना भार होने के बावजूद इतना हल्का महसूस करता हो। यह एक चमत्कार था। पायलट ने लोगों से उसे मूर्ति दिखाने को कहा नहीं तो वह उन्हें विमान से मूर्तियां नहीं ले जाने देगा।

पायलट सिख (पंजाबी) था, जैनियों ने उन्हें भगवान की मूर्ति के दर्शन करने से पहले मांसाहार, शराब छोड़ने के लिए कहा, जो अहिंसा का प्रचारक है। पायलट ने तुरंत अपने जीवन में मांसाहार न खाने की कसम खाई और अंत में मूर्तियों को प्रणाम किया।

ये मूर्तियां और जिनवाणी मुल्तान जैन मंदिर, आदर्श नगर, जयपुर में स्थित हैं। आप इसे देख सकते हैं। पंडित श्री टोडरमल जी की प्रसिद्ध 'रहस्य पूर्ण चिट्ठी' मुल्तान के प्रवासियों के लिए लिखी गई है।

**'अपने धर्म की रक्षा करो, धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा' जय भारत!**

जिसने जीता मन को उससे बड़ा न कोई वीर
धरती के सच्चे वीर हैं तीर्थंकर महावीर
'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

बालचंद डागा
नरेंद्र डागा, महेंद्र डागा, जितेन्द्र डागा
ए 2301, रनवाल एलिगेंटे, पी. टंडन मार्ग, लोखंडवाला,
अंधेरी वेस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत-400053

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# तेरापंथ महासभा भवन में होलिकोत्सव

**कोलकाता:** फाल्गुन महीने के आगमन के साथ ही सब जगह रंगों का त्योहार होली का माहौल छा जाता है। राजस्थानी लोक गीत, चंग धमाल एवं नृत्य के कार्यक्रम जगह-जगह आयोजित होते हैं, जो कि प्रेम, सौहार्द, आपसी भाइचारे की प्रेरणा देते हैं, ऐसा ही होलिकोत्सव का एक कार्यक्रम श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कोलकाता, उत्तर हावड़ा, मध्य उत्तर कोलकाता, उत्तर कोलकाता, टॉलीगंज एवं जैन कार्यवाहिनी, कोलकाता ने संयुक्त रूप से बुधवार दिनाँक १ मार्च २०२३ को महासभा भवन में आयोजित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामुहिक उच्चारण के साथ हुआ। कोलकाता सभा अध्यक्ष अजय भंसाली ने सभी आयोजकों की तरफ से सभी आगंतुकों एवं लोकगीत कलाकारों की टीम रसिया (SMP) ग्रुप का स्वागत करते हुए होली की शुभकामनाएं प्रेषित की। महासभा के पूर्व मुख्य न्यासी एवं वर्तमान पंच मंडल सदस्य भँवरलाल बैद ने सभी को होली की शुभकामनाएं देते हुए अपना वक्तव्य

दिया, तत्पश्चात आयोजकों ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध समाज सेवी संजय नाहटा एवं विशिष्ट अतिथिगण प्रकाश पारख, नरपत सिंह सुराणा, अमर लुणिया, भँवरलाल बैद, नागराज जैन, तेजकरण बोहरा, तेजकरण बोथरा का पगड़ी एवं दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया गया। सभी सभा संस्थाओं के पदाधिकारी गण, समाज के गणमान्य व्यक्ति एवं बड़ी संख्या में वृहत्तर कोलकाता के तेरापंथ समाज के व्यक्तियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को खास बना दिया। कार्यक्रम के अंत तक अच्छी संख्या में लोगों की उपस्थिति बनी रही। रसिया ग्रुप के कलाकारों ने राजस्थानी लोक गीतों एवं चंग धमाल की शानदार प्रस्तुति देकर सबका मन मोह लिया।

कार्यक्रम के संयोजक राजेंद्र संचेती, उमेद नाहटा, संदीप डागा एवं सभी कार्यकर्ताओं ने अपने अथक परिश्रम से कार्यक्रम को सफल बनाया। बुधमल लुनिया, राकेश संचेती, पारस सेठिया, हेमराज संचेती, अशोक पारख, महेन्द्र दुधोड़िया, जयसिंह बैद, हनुमान बैद, मांगीलाल सेठिया, सुरेन्द्र नाहटा, राजेन्द्र दुगड़, प्रदीप दुगड़, चैनरूप बोथरा एवं संजय समदड़िया ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। कोलकाता सभा के सहमंत्री विक्रम चंडालिया ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। उपस्थिति जन ने केशरिया ठण्डाई एवं स्वरूचि भोज का आनन्द लिया। उपरोक्त जानकारी कोलकाता सभा के मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने समस्त जैन पंथों की विश्वसनीय 'जैन एकता' के लिए प्रयासरत एकमात्र 'जिनागम' पत्रिका को भेजी है।

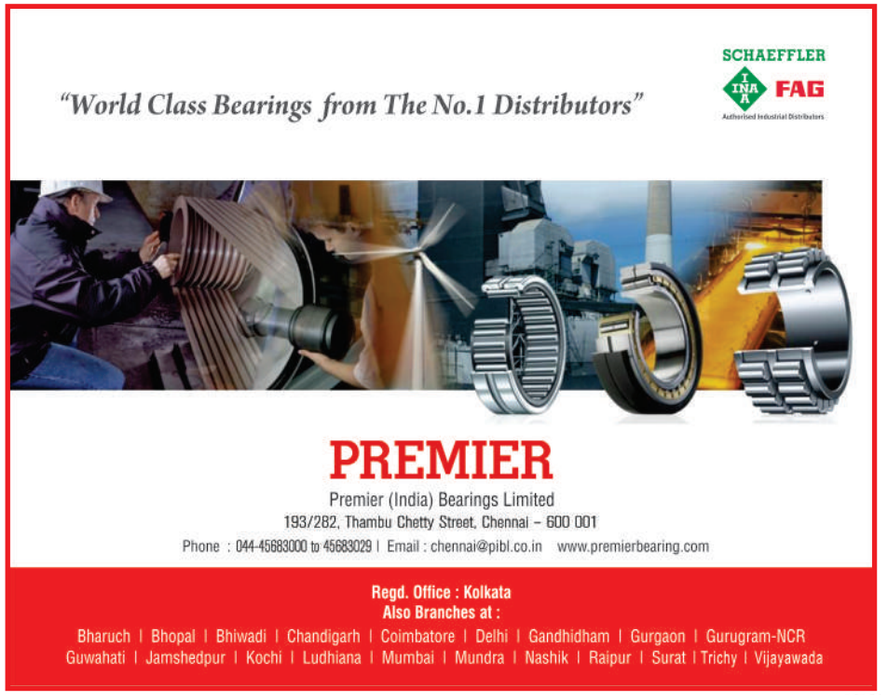


जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जिसने जीता मन को उससे बड़ा न कोई वीर
धरती के सच्चे वीर हैं तीर्थंकर महावीर
'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें
Ghenmalji Dhanroopji Punamiya
Rajmalji Dhanroopji Punamiya
Jai Hind Stores
249, Big Bazaar Street, Kumbakonam, Dist.Tanjore,
Tamilnadu, Bharat- 612001 Ph: 9443320141

# ध्यान दे जैन समाज

जैन समाज में जो हो रहा है वह देख कर चिंतित होना जरूरी है, बिना किसी विचारधारा के हम सिर्फ उन चीजों में उलझे हुए हैं जिनका आने वाली भावी पीढ़ी के लिए कोई उपयोग नहीं है, उन चीजों को संभालने की दिक्कत आने वाली पीढ़ी के नसीब में लिखी हुई है। हम शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर निवेश नहीं कर रहे हैं। हम तो जगह-जगह भवन एवं धाम बनाना, भव्य प्रवेश, मेले, संघ यात्रा, नवकारसी, महा सम्मेलन, चक्रवर्ती पूजन, क्रिकेट टूर्नामेंट एवं जगह-जगह बेफिजूल की तख्तियां और बोलियाँ लगाने में उलझे हुए हैं। वरघोड़े एवं जुलूस निकालने में लगे हुए हैं। हमारा समाज विचारधारा विहीन होता जा रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा की दौड़ में साधु एवं श्रावक अजीबोगरीब हरकते करते हुए दिखाई दे रहे हैं। हम यह नहीं देख पा रहे हैं कि एक समय में महाजन कहलाने वाले, इस समाज के कुछ सदस्य गरीबी रेखा के नीचे भी जी रहे हैं।

व्यापार के उच्च शिखर पर रहने के बाद, आज हमारे में उद्योगशीलता खत्म होती जा रही है, इस वजह से जवान पीढ़ी का झुकाव नौकरियों की तरफ बढ़ता चला जा रहा है। हजारों वर्षों से अपनी अलग सात्विक पहचान बनाया हुआ यह समाज १३० करोड़ लोगों की भीड़ में खोता चला जा रहा है। व्यापार एवं सामाजिक कार्यों में बेईमानी युक्त तरीके अपनाकर दूसरों के साथ धोखा करना आम होता जा रहा है। धन को आधार बनाकर अनैतिक लोग सामाजिक संस्थाओं के पदों पर आसीन हो रहे हैं।

हमें कब यह अहसास होगा कि हम अब इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं, हमारे युवाओं को इन चीजों में कोई रुचि नहीं है जो व्यवहारिक नहीं है, अभी भी वक्त है, संभलना होगा, वर्ना आने वाले समय में परदेश में जीना मुश्किल हो जायेगा और हमारी आने वाली पीढ़ियां हमें जी भरकर कोसेगी।

**- अंकित जैन**
**अखिल भारतीय जैन महासंघ**

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें,
सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएँ
SANAT BADJATYA JAIN
17/3, Old Palsia, Raj Kalyan, Indore,
Madhya Pradesh, Bharat - 452001
भ्रमणध्वनि : 098260 75364

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार
महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं
Vardhaman kumar- 9819927519
Suraj - 9833433369
V.S. KASLIWAL & CO.
Chartered Accountant
A/2 Shivganga Co-Op. Hsg So. Ltd., Mahatma Phule Road,
Ganesh Chowk, Dombivali West, Dist- Thane, Maharashtra, Bharat-421202
Mob: 9819927519
Email: vsk108@yahoo.co.in www.cavskasliwal.com

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार
महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं
गजेन्द्र जैन पाटनी
Mob: 9425251222/6917151222
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
राष्ट्रीय महामंत्री
श्री भारतवर्षीय खंडेलवाल दिगम्बर जैन महासभा
कुनकरी, छत्तीसगढ़, भारत-496225

# सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

## हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

▪ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ▪

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

दुल्हन वही जो पिया मन भाए, बहु वही जो सास मन भाए

रिश्तों के बेताज बादशाह **पदमचंद जैन**


।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

**रिश्तों का मंडप**
**आई जे वी ओ**

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

**9314510196 / 9602623456**

FCP JITO
पदमचंद जैन

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना
1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJVO **जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव**

**एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं**
वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

**इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन**
1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626

**अपनों से हो अपनों का रिश्ता**

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

**सेवा के सरोकार**
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन
उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया (अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष) | चंद्रराज सिंघवी (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | डॉ. प्रकाश गोलेछा (योजना मंत्री) | नरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.सि) | वसंत जैन (राष्ट्रीय संघटन मंत्री) | संजय जैन (कोर्डिनेटर) | सुरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय प्रचार मंत्री)

**सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ**

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

# आचार्य प्रमुख सागर जी ससंघ का हुआ मंगल प्रवेश

**धुलियान, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल:** सौभाग्यवश शाश्वत सिद्ध भूमी श्री सम्मेद शिखर से मंगल विहार करते हुए अहिंसा तीर्थ प्रणेता प.पू. आचार्य प्रमुख सागर जी महाराज बालयति संघ का पाकुड़ झारखंड होते हुए धुलियान पश्चिम बंगाल में ता: ०४.०३.२०२३ शनिवार सुबह ८.३० बजे हर्षोल्लास के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ, जिसमें मुर्शिदाबाद जिला व पाकुड़ समाज के श्रद्धालु उपस्थित थे। ज्ञात हो कि मुर्शिदाबाद जिला के सभी गाँव अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज की प्रेरणा से सन २००२ से एकसूत्र में जुड़े हुए हैं, जो एकता की एक नज़ीर है। जिला में रात्रि विवाह व मृतक भोज व भेंट वर्जित है तथा सन्तों के आवागमन की रुपरेखा जिला कमेटी निर्णय लेती है। चतुर्विध संघ के आगमन से जिला में आनन्द का माहौल है, जिला के सभी गाँव में धर्म प्रभावना कर आचार्य श्री संघ का लक्ष्य कोलकाता की और विहार है।

**- संजय कुमार बड़जात्या जैन**
**धुलियान, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल, भारत**

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर
संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

HANUMAN MAL DUGAR JAIN
16-B, Robert Street, Ground Floor, Room No.2,
Kolkatta, West Bengal, Bharat-700012
दूरध्वनि : 033-22366360, Fax : 033-22379940
भ्रमणध्वनि: 09331037159
अणुडाक : hmdugar@gmail.com

# दिगम्बराचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज के रामगढ़ में मंगल प्रवेश पर भव्य स्वागत

तीर्थंकर महावीर के बाद सिंह निष्क्रीडित की साधना करने वाले भारत के एक और जैन जगत के दिगम्बर संत परम श्रद्धेय गुरुदेव अंतर्मना साधना महादधि तपाचार्य आचार्य मुनि श्री १०८ प्रसन्न सागर जी महाराज ससंघ का मंगल प्रवेश रामगढ़ में हुआ। उनके रामगढ़ आगमन पर बाजार टांड से बैंड बाजे के साथ जुलूस के रूप में जैन समाज के लोगों ने अगवानी की। नगर भ्रमण कर श्री दिगम्बर जैन मंदिर रामगढ़ पहुंचे, यहां मंगल प्रवेश पर श्री दिगम्बर जैन समाज रामगढ़ के अध्यक्ष मानिक चंद जैन की अगुवाई में जैन समाज की महिला और पुरुषों ने मुनि श्री का अभिनंदन और स्वागत किया। सर्वप्रथम महाराज श्री का पग प्रक्षालन व आरती की गई, इसके बाद मुनिश्री ने ससंघ मंदिर में तीर्थंकर के दर्शन और स्वाध्याय किया। अंतर्मना मुनिश्री प्रसन्न सागर जी महाराज के अमृत प्रवचन में कहा कि 'आईना जब भी उठाया करो, पहले देखो फिर दिखाया करो', फूटा घड़ा और फूला व्यक्ति हमेशा खाली ही रहता है, पहले मैं वहां देखता था, जहां फूल खिले होते थे, अब मैं जहां देखता हूं, वहीं फूल खिले मिलते है, मन में वहम, बुद्धि में अहम और व्यवहार में शर्म आ जाए तो रिश्तों की हार सुनिश्चित है, जिसने अपना मूल्यांकन किया वो सुखी है और जिसने दूसरों का मूल्यांकन किया वो सबसे दुखी इन्सान है, आज जो कुछ भी तुम्हारे पास है, वो स्वांस रुकते ही छूट जाएगा, कुछ करीब के लोगों को बहुत दूर देखा, जैसे संदेश शामिल हैं। धार्मिक कार्यक्रम के समय समाज अध्यक्ष मानिक जैन, नरेंद्र छाबड़ा, अरविन्द सेठी, ललित चुरीवाल, जीवन पाटनी, राजेंद्र पाटनी, राजेंद्र चूरीवाल, राजेश सेठी, विमल सेठी, शांतिलाल सेठी, जंबू पाटनी, अशोक सेठी, अशोक काला, देवेन्द्र गंगवाल, सुशील चूरीवाल, मोनू सेठी, संजय सेठी, पदम चंद छाबड़ा, अशोक काला, मांगीलाल चूरीवाल, नितिन पाटनी, बबलू सेठी, नीरज सेठी, पदम चंद जैन, अजय पाटनी, विनोद पहारिया, निशांत सेठी, सौरव अजमेरा, विवेक अजमेरा, टीकम चंद बागड़ा, रघु गंगवाल, अंकित जैन, ललित गंगवाल, प्रदीप जैन, अशोक कुमार रापरिया, दिलीप रापड़िया, सुनील पाटनी, पदम चंद सेठी, रोहित जैन, बीरेंद्र गंगवाल आदि श्रावकगण उपस्थित थे।

**- नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद**

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर हार्दिक शुभकामनायें

PRADEEP KUMAR BHANSALI
9840419164

VIVEK BHANSALI 9840400095

GRISHA VENTURES
1/870, Harichandran Street, Padiyanallur, Redhills,
Chennai, Tamil Nadu, Bharat-600052
Email : info.grishaventures0 gmail.com

ROHIT BHANSALI 9566121500

ROYAL PLAST
Manufacturers Of Plastic Recycled Granules
No.100, Redhills Dharkas Road, Athivakkam, Redhills,
Chennai, Tamil Nadu, Bharat-600 052.
Email : royalplastchennai@gmail.com

महावीर जयंती के
शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई

जय महाश्रमण

श्रद्धास्पद् शासनमाता साध्वी प्रमुखा कनक प्रभाजी

महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं
रतनलाल सेठिया
केशरीचंद जयसुखलाल सेठिया
सादुलपुर निवासी - शिलाँग प्रवासी
संपर्क : रतनलाल सेठिया
9436103810

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सत्य-अहिंसा का प्रचार, जीवों के लिए हृदय में प्यार,
शुभ हो आपको तीर्थंकर महावीर जन्मकल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

## हटाओ रासायनीक शैम्पू एवं साबुन,
## अपनाओ आयुर्वेदिक पाउडर सिल्केशाईन।

वनौषधीयों से निर्मित

# सिल्केशाईन

### आयुर्वेदिक शिकेकाईयुक्त पावडर

सिल्केशाईन में है बहुगुणी जडी-बूटीयाँ, इसलिये यह बालों में रूसी एवं जुएँ होने से रोकता हैं एवं बालों को झडनेसे बचाता हैं। साथ ही साथ बालों की जडें भी मजबूत करता हैं। इसका अद्वितीय रूसी नियंत्रण फार्मूला बालों को अधिक सुंदर, मुलायम, चमकीला स्वस्थ और जवाँ बना देता हैं।

सिल्केशाईन की जड़ी-बूटीयों से बालों की वृध्दि तो होती ही हैं साथमे इसका असरदार फार्मूला बालों को समयपूर्व सफेद होने से रोकता हैं। सिरकी त्वचा एवं बालों कें रोगों से भी यह बचाव करता हैं। सिल्केशाईन में हानिकारक पदार्थ नही होने से यह बच्चों के लिये भी सुरक्षित हैं। इसकी जडी-बूटीयों की भीनी भीनी खुशबू दिनभर आपको तरोंताजा रखती हैं।

आयुर्वेदिक मेडिसीन

JAI-SON
HERBALS

जयसन हर्बल्स प्रा. लि.
नाशिक

*स्वस्थ और सुंदर*
*बालों के लिये कुदरती नुक्सा*

*एक संपूर्ण स्वदेशी उत्पादन*

Atelier-NSK-2596364

व्यावसायिक संपर्क: **जिनेंद्र सेल्स कॉर्पोरेशन** 202-ए, मेघदूत शॉपींग सेंटर, सी.बी.एस. के सामने, नाशिक-422 001. फोन-0253-2577777

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

# SHAIRU GEMS DIAMONDS PVT. LTD.

Importers & Exporters, Diamond Manufacturers

DE-9012 A, (Entrance From DC), 9th Floor,
Bharat Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra East, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400051,
दूरध्वनि : 00-91-22-40505050 : 00-91-22-66460999
Fax : 00-91-22-23633054
अणुडाक : info@shairugems.net
अंतरताना : www.shairugems.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

## श्री सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी दिगम्बर जैन देवस्थान

मु. पो. मांगीतुंगीजी तहसील सटाणा जि. नाशिक, महाराष्ट्र, भारत- 423302

भ्रमणध्वनि : 7588711766/ 9422754603

Mail id: mangitungi.1008@gmail.com For Room Booking - mangitungi.org

- श्री १००८ विश्वहितंकर सामीशय चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की एक दिन की शांतिधारा मात्र २१०० रूपये।
- यहीं विराजमान सभी त्यागीयों के एक दिन के आहारदान की राशि मात्र २५०० रूपये रखी है।
- आहारदान में अपना अर्थसहयोग भेजे।
- आपके जन्मदिन पर, शादी की सालगिरह पर, किसी की पुण्यस्मृति में या किसी भी शुभ प्रसंग पर एवं एक दिन की शांतिधारा कराये, मात्र २१००/- रूपये में अवश्य करावे।
- जीवदया हेतु सहयोग २५०० रूपये रखी है।

### ऑनलाईन राशि भेजने की जानकारी

खाता का नाम- श्री सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी दि. जैन देवस्थान
बँक का नाम- बैंक ऑफ बडोदा शाखा ताहाराबाद
खाता नबंर- करंट अकाउन्ट है- 89100200000177
IFSC Dode - BARB0DBTAHA

खाता का नाम- श्री सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी दि. जैन देवस्थान
बँक का नाम- एच. डी. एफ. सी शाखा ताहाराबाद
खाता नबंर- करंट अकाउन्ट है- 50200076997170
IFSC Dode - HDFC0002142

### क्षेत्र विकास योजना

- एक महिने का जलपान २१,१११/-
- भोजनालाय स्थायी फंड १५,१११/-
- औषध दान फंड ११,१११/-
- जलपान स्थायी फंड १५,१११/-
- पार्श्वनाथ पूजन ५५१/-
- एक दिन का जलपान ११११/-
- पहाड जिर्णोद्धार ११,१११/-
- पूजन स्थायी फंड ११,१११/-
- आहार दान स्थायी फंड २५,१११/-
- पहाड पूजन १,१२५/-
- मुनिसुव्रतनाथ पूजन ५५१/-
- अखंड ज्योत ५५१/-

● निवेदक ●
श्री सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी दि जैन देवस्थान

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

# भंसाली परिवार को बधाईयां

**रायपुरः** प. पूज्य खरतर गच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिन मणिप्रभ सुरीश्वर जी महाराजा, प. पूज्य खरतर गच्छाचार्य श्री पीयूष सागर जी म.सा., प. पूज्य गणाधीश पन्यास प्रवर श्री विनय कुशल मुनि जी म सा, समस्त साधु एवं साध्वी मंडल एवं रायपुर प्रतिष्ठा के समस्त लाभार्थी परिवार, विशेष कर अमर ध्वजा के लाभार्थी भन्साली परिवार को अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद केंद्रीय समिति और समस्त शाखाओं की ओर से देशभर में इतिहास रचकर सफलतम प्रतिष्ठा सम्पन्न होने पर अपार बधाईयां और शुभकामनाएं दी गईं और विनंति की गई कि समस्त लाभार्थी परिवार इसी तरह जिनशासन की धर्मध्वजा फहराते रहें।

# मिथ्यात्व और जैन धर्म

जैन धर्म मिथ्यात्व की ओर बढ़ता जा रहा है, यह पहले बाहरी मंदिरों, स्थानों तक सीमित था। वर्तमान समय में जिनालयों में भी इसकी भरमार बढ़ती जा रही है। अरिहंत भगवान की सेवा में लगे रहने वाले देवी देवता अरिहंत भगवान के समान दर्जा प्राप्त कर जिन मंदिरों में बैठे नज़र आ रहे है। आज मंदिरों में अरिहंत भगवान की जगह अधिष्ठायक देवी-देवों के दर्शन पहले किए जाने लगे है, उन्हें भोग लगाया जाता है। तीन लोक के नाथ तीर्थंकर के समक्ष ही उनकी जगह उनके सेवकों (अधिष्ठायकों) से विनती की जाती है कि उनके उनके परिवार की रक्षा करें, सुख समृद्धि प्राप्त करें। मुनि महाराजों से निवेदन है अपने प्रवचनों में श्रावकों से सम्यक्त बात की जगह मिथ्यात्व प्रवचन ना दिया जाए।

जब-जब जैन धर्म में मिथ्यात्व बढ़ा है तब-तब जैन धर्म में खतरा बढ़ा है। वर्तमान समय इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है :-

- ⇨ जैन जनसंख्या का दिन प्रतिदिन घटना
- ⇨ जैन युवाओं की शादी में कमी
- ⇨ जैन तीर्थों मंदिरों पर अतिक्रमण और कब्जे का होना।
- ⇨ जैन परिवारों में एकता का अभाव
- ⇨ अमीरी गरीबी का भेदभाव
- ⇨ मायाचार, आंडम्बर, दिखावा आदि की भरमार, बहुत सी कुरितियां समाज में बढ़ती जा रही।

जिस प्रकार एक सच्चा मुसलमान अल्लाह के सिवाय किसी और की इबादत नहीं करता। हम जिन शासन प्रेमी अगर एक सच्चे जैन हैं, तो हमारे लिए इस पंचमकाल में हमारी चौबीसी से बड़ा और ना तो कोई ईश्वर ना कोई भगवान। जबतक हमारे मन-मस्तिष्क में ये भाव नहीं होगें, तब तक हम एक सच्चे जैन नहीं हो सकते।

जिसके हृदय में अरिहंत भगवान रहेंगे वो तो स्वयं ही दयालु, अहिंसक, राष्ट्रप्रेमी, करूणामय और सर्वधर्म समान वाला श्रावक होगा, फिर हमें क्यों किसी और दर पर सजदा करने की जरूरत है। **- सौरभ जैन, बरेली**

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं
Varsha Cotton Co.
Cotton Merchants

Late Sri. Kachrulalji Abbad

Late Smt. Madanbai Abbad
H. No.: 12-10-97/31, Paras Garden, Gandhi Chowk, Raichur, Karnataka, Bharat-584101, Ph.: Res. 08532-230478
SAMPAT TRADERS Best Quality & Best Price Is Our Motto
Plot No.4, Shop No. 32, 1st Floor, Rajendra Gunj, Raichur, Karnataka, Bharat-584102
Kishore Kumar Mob. 9448370478
Goutam Kumar Mob. 8088812121
Prakash Chand Mob. 9342722122



जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार
महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

*Sumer Chand Patni Jain- 094225 90163*
*Rajesh Patni Jain- 094220 45502*

SKF

**SHRI BAHUBALI ENGINEERS**
**SHRI PADMAVATI ELECTRICALS**

Suppliers of All type of Bearings
Repairs & Rewinding of Electric Motors

12/814, Kagwadi Mala, Near Jain Mandir, Ichalkarani,
Dist. Kolhapur, Maharashtra, Bharat-416115, दूरध्वनि : 0230- 2422158
अणुडाक : patnirajesh72@gmail.com, arpan000@gmail.com

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें,
सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

**Anita Surana**

भ्रमणध्वनि: 9874245504

227/2 A.J.C. Bose Road,
Mangal Jyoti, Flat No.-601,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700020

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें,
सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

**Sangeeta Sekhani**

भ्रमणध्वनि: 9836623553

Flat 10C, Amarjyoti Building 10,
Belvedere Road, Opp. Bhavani Bhavan,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700027

खरतरगच्छाधिपति आचार्य जिनमणिप्रभसूरि
Khartargachchadhipati Jin Maniiprabh Suri

"ॐ"

रायपुर
२५.२.२०२३

आवश्यक सूचना

परमात्मा महावीर का जन्म कल्याणक 3 अप्रैल 2023 को

इसवर्ष पंचांग में चैत्र शुक्ल पक्ष में दो तेरस होने से यह प्रश्न उपस्थित हुआ है कि प्रभु महावीर का जन्म कल्याणक कब मनाया जावे, पहली तेरस को या दूसरी तेरस को!
खरतरगच्छ की शास्त्र विहित सुविहित परम्परानुसार पहली तेरस सोमवार ता. 3 अप्रैल 2023 को ही परमात्मा महावीर का जन्म - कल्याणक मनाया जायेगा।
गच्छ के बड़े पंचांग में 4 अप्रैल 2023 प्रकाशित हो गया है, यह गलती से हुआ है।
अतः सकल श्री संघ ध्यान दें कि प्रभु महावीर जन्मकल्याणक चैत्र सुदि प्रथम तेरस सोमवार ता. 3 अप्रैल 2023 को हर्षोल्लास के साथ मनायें।

जिन मणिप्रभसूरि
Jin Maniiprabh Suri

(फार्म नं.- 4 नियम 8)
अखबारों के पंजीकरण केंद्रीय नियम 1956 के नियम के तहत 'जिनागम' मुंबई के स्वामित्व और अन्य विवरण के बारे में घोषणा।

1) प्रकाशन का स्थान : गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी- 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059
2) प्रकाशन की अवधि : मासिक
3) मुद्रक का नाम : विनय ग्राफिक्स, कोंडिविटा
क्या भारतीय नागरिक हैं? : हाँ
4) सम्पादक का नाम : बिजय कुमार जैन
क्या भारतीय नागरिक हैं? : हाँ
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059
5) इस समाचार पत्र के स्वामी व सहभागी जिनका सहभाग एक प्रतिशत से ज्यादा हो उनका नाम व पता
1) बिजय कुमार जैन
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059
2) श्रीमती संतोष जैन
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059
मैं बिजय कुमार जैन, गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि. के लिए घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के मुताबिक ऊपर लिखित विवरण सही है।
बिजय कुमार जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर
तारीख 9 मार्च 2023

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# जैन समाज का बढा सम्मान
# गुलाब कटारिया असम के राज्यपाल नियुक्त

**गुवाहाटी:** राजस्थान के नेता प्रतिपक्ष रहे गुलाबचंद कटारिया को असम का राज्यपाल नियुक्त किया गया है। आठ बार विधायक रह चुके गुलाबचंद कटारिया का जन्म ३ अक्टूबर १९४४ को राजस्थान के उदयपुर जिले में हुआ था। आपकी शिक्षा मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से हुई है। पत्नी का नाम अनिता कटारिया है, आपको पांच सुपुत्रियां हैं। गुलाबचंद कटारिया ८ बार विधायक रह चुके है, जब भी जैन समाज को किसी भी कार्य के लिए जरूरत हुई तो जैन समाज के लिए हर वक्त खड़े रहे। नाकोड़ा तीर्थ पहुंच कर दादा का आशीर्वाद लेते रहते हैं। तीर्थों की रक्षा एवं साधु-संतों की सेवा के प्रति हमेशा समर्पित रहते हैं। असम के राज्यपाल नियुक्त होने की खबर मिलते ही बधाई देने वालो का तांता लग गया।

असम के राज्यपाल नियुक्त होने पर 'जिनागम' पत्रिका व मैं भारत हूँ फाउंडेशन परिवार की और से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

जय भारत! जय असम!

माननीय श्री गुलाबचंद जी कटारिया जैन को असम के राज्यपाल बनने पर स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा गोखरु जैन व महिला शाखा की ओर से बधाई व शुभकामनाएं देते हुए राष्ट्रीय महिला प्रमुख मार्गदर्शिका बेबी बेन डागलिया, राष्ट्रीय मंत्री कंचन सिंघवी, जीवन प्रकाश योजना राष्ट्रीय अध्यक्षा मंजु तातेड।

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Ratan Lal Manish Sethia
Mob: 9836269111
Flat No.- 5E, 5th Floor, 37A, Garcha Road, Kolkata, West Bengal, Bharat-700019
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

# दिगम्बर जैन महासमिति द्वारा दिया गया सम्मान

**इंदौर:** दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष अशोक बडजात्या द्वारा महेन्द्रकुमार पाटनी जैन राष्ट्रीय वरिष्ठ कार्याध्यक्ष को दिनांक ०५ मार्च, २०२३ को अतिथि भवन, इन्दौर में महासमिति की कार्यकारिणी के सदस्यगणों के समक्ष सामाजिक एवं धार्मिक कार्यो में योगदान देने के लिए 'लाईफ टाइम अचीवमेन्ट' अवार्ड प्रदान कर उनका सम्मान किया गया। महेन्द्रकुमार पाटनी जैन महासमिति से प्रारम्भ से ही पूर्ण रूप से जुड़े हुए रहे हैं, अवसर पर महासमिति के राष्ट्रीय महामंत्री सुरेन्द्रकुमार पाण्ड्या, कोषाध्यक्ष गौरव जैन झांसी, पूर्व महामंत्री विपिन सर्राफ सहित मध्य प्रदेश अंचल, राजस्थान अंचल, महाराष्ट्र अंचल, कर्नाटक अंचल, दिल्ली अंचल, उत्तराखण्ड अंचल, हरियाणा अंचल महासमिति के काफी संख्या में पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित थे।

**भारत को 'भारत' ही बोला जाए**

May Lord Mahavir Bless You Abundantly &
May Your Life Be Filled With Peace,
Good Health, Prosperity & Compassion.

With Best Compliments

Nimesh N. Kampani

Address:- 141 - Maker Chamber-III, 13th Floor,
Nariman Point, Mumbai,
Maharashtra, India - 400021

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

श्रीमान पदमचन्दजी श्रीमती शान्तिदेवी पाटनी
संजयकुमार-शालिनी, सुमित-रितिका, (पुत्र एवम् पुत्रवध)
रजत-सिमरन (पोत्र एवम् पोत्रवधु), प्रतिक्षा, दिशा, नव्या (पोत्री)
प्रतिभा-श्रवण सेठी, पूनम-निरेन पाण्ड्य(पुत्री एवम् जवाई)
तनिष, वीर, संचय (दोयता) याशी (दोयती)
एवं समस्त पाटनी परिवार
सिद्धर्थ रेजीडेन्सी, छत्रीबाड़ी, पल्टन बाजार, गुवाहाटी

पदमचंद पाटनी जैन

सेठी सदन, मेघदूत सिनेमा के पास, तीसरा माला, पलटन बाजार, गुवाहाटी, आसाम, भारत-७८१००१
दूरध्वनि :०३६१-२५१७९५७ भ्रमणध्वनि : ०९४३५५५१११, ९८६२००९६११

सोहनी मोटर्स

(ए एम डी ऑफ टीवीएस मोटर को. लि. पुजा एन्क्लेव, धारापूर, चराईली, गुवाहाटी, आसाम, भारत-७८१०१७

II Jai Guru Nana II II Jai Mahavir II II Jai Guru Ram II
तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

परस्परोपग्रहो जीवानाम
राम चमक रहे भानु समाना

Sumit Surana Prakash Surana
भ्रमणध्वनि : 7002802208 भ्रमणध्वनि : 9435078689

PRAKASH ENTERPRISES

Deals In :- All Kinds of Inverters, Batteries,
Ceiling Fans, Kitchen Appliances etc.

AUTHORISED DISTRIBUTOR
Livguard RISHABH FANS KENT Smart Chef Appliances

Endow Ghosh Lane, Nazirpatty, Silchar, Assam, Bharat -788001
e-mail :- prakashenterprises1508@gmail.com Ph. : 03842-796078

जय गुरू नाना जय महावीर जय गुरू राम
अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

अशोक सुराणा (CA)
मो. 9820147361
पूर्व राष्ट्रीय संयोजक - परमार्थ सेवा
(अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)
पूर्व उपाध्यक्ष- श्री साधुमार्गी जैन संघ, मुम्बई
संरक्षक- श्री चित्तौड़गढ़ जैन मित्र मंडल मुम्बई
राजकुमारी सुराणा, अर्चित सुराणा (CA), तनिष सुराणा

अशोक सुराणा एण्ड एसोसिएट
चार्टड अकाउटेन्टस
( मुंबई, चित्तौड़गढ़ )

303, कल्याण भवन, तेली पार्क लेन, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400069
दूरध्वनि : 022-26833160, 022-266430287

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

# पूर्व न्यायाधीश तातेड़ ने दिलाई भारत जैन महामंडल के अध्यक्ष को शपथ

## ५७ वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन एवं शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

**मुंबई:** जैन समुदाय की पुरातन संस्था 'भारत जैन महामंडल' ने एक नया इतिहास रच दिया, मौका था वाई. बी. चव्हाण ऑडिटोरियम में संस्था का ५७वां राष्ट्रीय अधिवेशन और नई कार्यकारिणी का शपथ समारोह, नवनिर्वाचित अध्यक्ष सी.सी. डांगी को अध्यक्षता और निष्ठा की शपथ दिलाने के लिए बॉम्बे हाई कोर्ट के पूर्व न्यायमूर्ति और महाराष्ट्र राज्य मानव अधिकार आयोग के चेयरमैन कमल किशोर तातेड़ उपस्थित थे।

इस पल का साक्षी बनने के लिए महाराष्ट्र के कैबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा, महाराष्ट्र राज्य चैरिटी कमिश्नर महेंद्र महाजन, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष अरुण गुजराती, संस्था के पूर्व अध्यक्ष सुभाष रूणवाल, रमेश धाकड़, के.सी. जैन, राकेश मेहता पूर्व मंत्री राज पुरोहित, विधायक गीता जैन, माणिक लाल शाह, सुरेश जैन, मोतीलाल ओसवाल, पत्रकार प्रशांत जवेरी सहित कई दिग्गज उपस्थित थे।

समारोह की शुरुआत तीर्थंकर महावीर को माल्यार्पण और अतिथियों के हाथों दीप प्रज्वलन से हुई। महिलाओं ने मंगलाचरण किया, इसके बाद पूर्व न्यायाधीश तातेड ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष सी.सी. डांगी को संस्था के अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। तातेड़ ने कहा 'मैं अध्यक्ष जी को पिछले ३० से ३५ वर्षों से जानता हूं, उन्होंने समाज में अपनी अमूल्य सेवाएं दी हैं।' इसके बाद निवर्तमान अध्यक्ष राकेश मेहता ने डांगी को संस्था का कार्यभार सौंपा और परंपराओं का निर्वहन करते हुए उन्हें अपने आसन पर बिठाया, इस बीच, उन्होंने अपने अध्यक्षकालीन तीन साल की उपलब्धियों को गिनाया।

महाराष्ट्र राज्य मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा ने कहा कि 'भारत जैन महामंडल' के जिस बीज को पूर्व अध्यक्षों ने बोया था, वह आज वटवृक्ष बन गया है। चैरिटी कमिश्नर महाजन ने कहा कि इस संस्था में सर्व सम्मति से अध्यक्ष बनते हैं। जैन समाज की इस परंपरा का हम सभी अभिनंदन करते हैं। आगामी काल के लिए वर्तमान अध्यक्ष श्री डांगी ने कहा कि मंडल का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। जैन ध्वज इस संस्था की देन है। मंडल से वह पिछले ४० साल से जुड़े हुए हैं। एक साधारण कार्यकर्ता के रूप में जुड़कर आज वह अध्यक्ष पद की शपथ ले रहे हैं, यह उनके जीवन का गौरवपूर्ण पल है। पूर्व अध्यक्ष के.सी. जैन ने कहा कि यह जैन धर्म के सभी संप्रदायों की सबसे बड़ी संस्था है, इसका गौरवपूर्ण इतिहास रहा है, यह सिर्फ शपथ समारोह नहीं है, बल्कि सभी सामाजिक संस्थाओं के लिए भी एक मिसाल है। उम्मीद है कि नई कार्यकारिणी जैन समाज के हित में व संगठन के लिए कार्य करेगी। समारोह में महामंत्री सुरेंद्र कुमार दस्सानी, कोषाध्यक्ष मनोहर पारेख, युवा अध्यक्ष महेंद्र पगारिया, महिला अध्यक्षा राजकुमारी बोहरा को भी शपथ दिलाई गई।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सत्य-अहिंसा का प्रचार, जीवों के लिए हृदय में प्यार,
शुभ हो आपको तीर्थंकर महावीर
जन्मकल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

कैलाश जैन भारती - श्रीमती सन्तोष जैन
सन्दीप जैन - श्रीमती सलौनी जैन
भारतेन्दु जैन - श्रीमती ज्योती जैन,
सन्मति जैन - श्रीमती अनुष्का जैन

## अरिहन्त इण्डस्ट्रीज

४१०/९३, नाई बाड़ा चौक, लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत-२२६००३
भ्रमणध्वनि : ९४५२०१७९८४, ९४१५०६१३५६, ९४५२०१७९८५

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

सत्य-अहिंसा का प्रचार,
जीवों के लिए हृदय में प्यार,
शुभ हो आपको तीर्थंकर महावीर
जन्मकल्याणक पर्व

आचार्य महाश्रमण जी

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी

## Padam Chand Patawari

Mob: 9413319188

Shri Ram Nagar, 100ft Road,
Post-Dist. Rajsamad, Bharat-333108
Mob. : 9950305599

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर

पावन दिन है आ गया,
महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो,
फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

## महावीर लादुलालजी रांका

एवम् समस्त रांका परिवार
भ्रमणध्वनी : 9422269667

## महावीर लॅमिनेटस्

शॉप नं. बी.3, नवकार नेक्स्ट, तपोवन रोड, मेट्रो मॉल के सामने,
सिटीजवळ, नाशिक, महाराष्ट्र, भारत - 422011.
दूरध्वनी : 0253-2412522, 2410096
e-mail-mahavir.ranka85@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# आचार्यश्री जिन मणिप्रभ सूरीश्वरजी का अवतरण दिवस मनाया गया

**बेंगलूरः** अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा एवं महिला परिषद, बेंगलूरू शाखा द्वारा स्थानीय गौशाला में गौवंश के बीच उनकी सेवा के रुप में उन्हें हरा चारा, घास और पशु आहार प्रदान कर खरतर गच्छाधिपति आचार्यश्री जिन मणिप्रभ सूरीधरजी का ६४ वां अवतरण दिवस मनाया गया। युवा परिषद के प्रवक्ता ललित डाकलिया ने 'जिनागम' पत्रिका को बताया कि आज के दिन पूरे देश में युवा और महिला परिषद द्वारा जीवदया, मानवसेवा एवं अनेक आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। खरतरगच्छ इसी वर्ष में गुरुवर के दीक्षा पर्याय के ५० वर्ष पूर्ण होने पर संयम सुवर्णोत्सव मना रहा है, दोपहर में दादावाड़ी में महिला परिषद द्वारा सामूहिक सामायिक का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में युवा परिषद के ललित डाकलिया, भरत रांका, कल्पेश लुंकड़, भरत कोठारी, गौतम

कोठारी, हेमन्त गुलेच्छा, तोफराज और महिला परिषद् के आरती जैन और शशी पारख के साथ अनेक सदस्य उपस्थित थे।

# देश की पहली जैन संस्कृत शाला को १२५ साल पूरे

देश में एक स्कूल ऐसा भी हैं जो छात्रों या उनके परिजनों से फीस नहीं लेता, ६ साल तक पढ़ाई के लिए खाने, रहने से लेकर तक सभी सुविधाएं निःशुल्क हैं। पढ़ाई पूरी कर चुके छात्रों को योग्यता के अनुसार ६ लाख रुपए तक अग्रिम मानदेय भी दिया जाता है। १२५ वर्ष पुरानी यह संस्था गुजरात के मेहसाणा स्थित श्रीमद् यशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाला है। अक्टूबर १८९७ में स्थापित शाला के पहले छात्र योगनिष्ठ श्रीबुद्धिसागर सूरीश्वरजी महाराज थे। स्कूल से अब तक २८५० छात्र पढ़ कर निकल चुके हैं, इनमें से २२० ने पूर्ण संयम का जीवन स्वीकार किया है, जबकि दीक्षा ग्रहण करने वाले ३६ श्रमण भगवंत आचार्य पद पर हैं। यहां के छात्र गुजरात के अलावा तमिलनाडु, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र में बस गए हैं।

संस्थान के प्रकाशभाई पंडित बताते हैं, हर साल विद्यालय में ३० छात्रों का दाखिला होता है। छात्रों या उनके माता-पिता या परिवारजनों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। संस्था छात्रों को पढ़ाई के दौरान ५ हजार रुपए प्रतिमाह देती है। ४ साल की पढ़ाई पूरी करने वालों को १ लाख रुपए और ६ साल की पढ़ाई पूरी करने वालों को २ लाख रुपए दिए जाते हैं। यह राशि हर माह मिलने वाले मानदेय से अलग होती है। कानून और व्याकरण सहित विशेष पढ़ाई पूरी करने वालों को तीन लाख रुपए मानदेय दिया जाता है। कई छात्रों को ६ लाख रुपए तक मानदेय दिया गया है। छात्रों को हर तरह का ज्ञान मिल सके इसलिए १२ हजार किताबों की लाइब्रेरी भी है। यहां पढ़ चुके पूर्व छात्र ही बच्चों को पढ़ाते हैं। स्कूल में धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ अंग्रेजी, कम्प्यूटर और संगीत भी सिखाया जाता है, यहां के छात्र देश के अन्य स्कूलों की तरह सामान्य सिलेबस भी पढ़ सकते हैं, इस स्थिति में उन्हें एक्स छात्र के रूप में पढ़ना होता है। यहां कोई भी प्रवेश ले सकता है।

**१३ करोड़ रु. की लागत से नया जैन संस्कृत स्कूल बनाने की तैयारी**

स्कूल प्रबंधन ने 'जिनागम' को बताया कि मेहसाणा-अहमदाबाद हाईवे पर लिंच गांव के पास एक नया जैन संस्कृत स्कूल बनाने की तैयारी है। अनुमान है कि १३ बीघा जमीन पर बनने वाले इस स्कूल पर १३ करोड़ रूपए खर्च होंगे, इस स्कूल में १०० छात्रों की क्षमता होगी। यहां की लाइब्रेरी भी समृद्ध होगी। धर्म से जुड़ी देश-दुनिया की श्रेष्ठ किताबें और सामग्री यहां छात्रों को उपलब्ध रहेगी, नए कैंपस में स्कूल भवन के अलावा छात्रावास और कैंटीन की सुविधा रहेगी। कैंपस में ही जैन मंदिर भी बनाया जाएगा। मुनियों के रहने के लिए अलग से छात्रावास भी बनाया जाएगा। कालीकुंड के कुमारपालभाई वी. शाह और कल्पेशभाई वी. शाह ने नए स्कूल पर होने वाले खर्च की जिम्मेदारी ली है। यहां से पढ़ने के बाद शिक्षक की भूमिका निभा रहे पीयूष त्रिवेदी बताते हैं कि 'मैंने इस स्कूल से ६ साल की पढ़ाई पूरी की है। पढ़ाई के बाद पंडित की उपाधि पाकर मैं जैन मुनियों और भिक्षुणियों को संस्कृत और व्याकरण पढ़ाता हूं, फिलहाल मैं सूरत में व्याकरण सिखा रहा हूं, यहां पढ़ाने पर एक अलग तरह की संतुष्टि मिलती है।' इस अनूठे स्कूल में हर साल सिर्फ ३० छात्रों को ही दाखिला दिया जाता है।

SINCE 2011

# POORVA HOLIDAYS

THE NEW CHOICE OF TRAVEL

गुजराती, कच्छी तथा राजस्थानी जैन समाज का
लोकप्रिय और प्रतिष्ठीत पर्यटन संगठन

Avail
06N | 07D
08N | 09D
03 Packages

Gold
Diamond
Diamond Plus

06 N / 07 D
08 N / 09 D

# Leh Ladakh

Travel Now .. Pay Later

SanKash A REASON TO GO!

- No Cost EMI
- Zero Interest
- Zero Down Payment

चोवियार, एकासना, बेसना, गर्म पानी की व्यवस्था तिथि के दिनों में करके मिलेगी

संपूर्ण पर्यटन मे हमारे महाराज के हाथ का 100% शाकाहारी व जैन भोजन मिलेगा

Choice of ..

Different Packages
as per Luxurious Hotels,
Departure Dates & Budget ..

| | |
|---|---|
| 1N | Sonmarg |
| 1N | Kargil |
| 2N | Leh |
| 2N | Nubra Valley |
| 1N | Pangong Lake |
| 1N | Leh |

8N | 9D

2023 Fixed
Departure Dates & Itinerary

Gold Pkg :
May : 06,08,14,20,22,28,30
Jun : 05,07,13,15,21,23,29
Jul : 01,07,09,15,17,23,25,31
Aug : 06,12,18,24

Diamond Pkg :
May : 20,28
Jun : 05,13,21,29
Jul : 07,15,23,31

Diamond Plus Pkg :
May : 22,30
Jun : 07,15,23
Jul : 01,09,17,25


MR. TEJAS SHAH FOUNDER : ✆ 99309 93825 ✆ 79776 28030

Sales Executive Team : Kekin Heniya ✆ 95942 00634 • Swati Jain ✆ 91794 95667

Shop No. 23, 29 & 36, Yudhistir Bldg, Opp. N.L.Garden, Dahisar (E),
Mumbai - 400068 ✆ 022-40031840, 7021884895


QUALITY HOTEL · PERSONAL ATTENTION · VEG JAIN · SIGHT SEEING

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# Principal Conclave का आयोजन जल्द ही शिक्षा की देवी अहिल्या नगरी इंदौर में

**भारतः** भारत व भारतीय संस्कृति को बढावा देने हेतु 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के विश्व में फैले पदाधिकारी व कार्यकर्ता कटिबद्ध हैं, इसकी सफलता के लिए भारतीय युवाओं तक पहुंचने के लिए दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चैन्नई, झांसी आदि-आदि क्षेत्रों में Principal Conclave कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम में दिनांक ८ मार्च २०२३ को 'महिला दिवस' पर भारत का एक राज्य मध्यप्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर में डॉ. प्रोफेसर रेणु जैन व उनकी मातुश्री क्रांतिकारी विचारों की धनी व इतिहास की पैरोमकार कुसुमलता जैन से उनके निवास स्थल पर एक शिष्टाचार भेंट के साथ 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन व युवा राहुल जैन ने निवेदन किया कि एक कार्यक्रम युवा छात्रों के साथ 'भारत व भारतीय संस्कृति का बढावा' इंदौर में किया जाना चाहिए। प्रो. रेणु जैन ने कहा कि यह होना ही चाहिए, आज के छात्रों को भारतीय संस्कृति व भारतीयता के बारे में जानकारी दी ही जानी चाहिए। इतिहासवक्ता कुसुमलता जैन ने कहा कि हमारे प्राचीन इतिहास की जानकारी हमारे युवा छात्रों को दी जानी चाहिए। प्रो. रेणु जैन ने कहा कि २५ मार्च २०२३ के बाद हम इंदौर में एक विशाल कार्यक्रम छात्रों के साथ 'भारत व भारतीय संस्कृति का बढावा कार्यक्रम' इंदौर में करेगें, उसके पहले एक सभा का आयोजन इंदौर के Principals के साथ Conclave के माध्यम से करेगें, जिसके लिए मैं प्रो. राजीव दिक्षित से निवेदन करुंगी कि वे Principal Conclave कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी भूमिका निभाएं।

इसी दिन ८ मार्च २०२३ को संध्या ५.३० बजे एक सभा का आयोजन इंदौर के आर.एन.टी. मार्ग में मधु मिलन चौराहा में स्थापित (प्रस्तुत चित्र के अनुसार) इंदौर के प्रसिद्ध समाजसेवी माँ भारती के लाडले सांवरमल जोशी दाधीच, समाजसेवी बालकन्त राठी (माहेश्वरी) अधिवक्ता अनिल त्रिवेदी, इंदौर के प्रख्यात समाजसेवी हंसमुख गांधी, मैं भारत हूँ फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, प्रो. राजीव दिक्षित, शिक्षाविद डॉ. संगीता विनायका, मोटिवेटर युवा उन्नित झांझरी, महर्षि दाधीच के सेवक शंकरलाल शर्मा पलोड, युवा सुशील दाधीच के साथ हैं युवा राहुल जैन।

करीब २ घंटे चली सभा में आपसी परिचय के साथ निश्चय लिया गया कि जल्द Principal Conclave का आयोजन निश्चित दिन के साथ निर्धारित कर लिया जायेगा, जिसमें इंदौर के करीब ३५० Principal उपस्थित होंगे, तत्पश्चात युवा छात्रों को 'भारत व भारतीय संस्कृति का बढावा' कार्यक्रम से जोड़ा जाएगा। जय भारत!

# BEST COMPLIMENTS FROM:

अरिहंत जैन, विश्वा जैन, नीलम जैन,
अम्बरीश जैन, आरती जैन, गौतम जैन, नेहा जैन,
अमित जैन, रेवा जैन

KGOC®

kangaro
Stay Sorted.

MUNIX
Smart. Sharp. Sure.

MiLES
a tool for every hand

KOHE
A cut above.

**Mfrs. & Exporters : Staplers, Staples, Staple Removers, Paper Punches, Gun Tackers, Tape Tool, Pneumatic Tools, Industrial Staples, Stitching wire, Scissors & Kitchen Essentials etc.**

## Kangaro Industries (Regd.)
## Kangaro Industries Limited
## Kanin (India)
## Munix (India) Pvt. Ltd.
## KGOC Global LLP

B-XXX-6754, Focal Point, LUDHIANA-141 010. (INDIA)
Tel: 91-161-2679000, 6603300, Fax: 91-161-2674903, 2672158
e-mail: info@kgocglobal.com

**www.KGOCglobal.com**

# केंद्र सरकार द्वारा ध्यान देने के कारण जैन मंदिर देवल टांड के लिए केवल 3 कि.मी. का सफर होगा अब

ईचागढ़ क्षेत्र के देवल टांड गांव को रंगा माटी के निकट से राष्ट्रीय उच्च पथ ३३ से जोड़ने हेतु केंद्र सरकार की योजना स्वीकृत हो गई है, ऐसा होने से अति प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर 'देवल टांड' तक पहुंचने में सिर्फ ३ किलोमीटर का सफर करना होगा, जबकि इस मंदिर तक जाने के लिए पहले १७ किलोमीटर का घुमावदार टूटा-फूटा ग्रामीण पथ का सफर करना पड़ रहा था। नए मार्ग से जुड़ने के साथ-साथ 'देवल टांड' एक तीर्थ क्षेत्र के रूप में विकसित हो जाएगा और इस क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन की शुरुआत हो जाएगी।

ज्ञातव्य है कि ज्ञात झारखंड राज्य दिगम्बर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष ताराचंद जैन इस कार्य को करने हेतु विगत २ वर्षों से केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से पत्राचार करते चले आ रहे हैं, इस संबंध में उन्होंने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और विधायक सविता महतो का विशेष सहयोग मिला है। सांसद संजय सेठ ने 'देवल टांड' के विकास हेतु क्षेत्र का दौरा किया और वहां बड़ी सभा बुलाई और विकास की संभावनाओं को देखते हुए लोकसभा में भी तीर्थ स्थापना हेतु एवं सड़क के निर्माण हेतु आवाज उठाई। रांची के प्रदीप जैन इस कार्य के लिए लगातार ताराचंद जैन के साथ प्रयासरत थे।

इस भगीरथ प्रयास के फलस्वरूप अन्ततः सड़क परिवहन केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने १७ फरवरी २०२३ के पत्र के माध्यम से ताराचंद जैन को सूचित किया कि 'देवल टांड' को सड़क मार्ग से जोड़ने की परियोजना को स्वीकृति दे दी गई है, इस स्वीकृति के लिए ताराचंद जैन एवं क्षेत्र के निवासियों ने नितिन गडकरी एवं मुख्यमंत्री जी के प्रति अपना आभार प्रदर्शित किया है।

यह जानकारी झारखंड राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष ताराचंद जैन द्वारा समस्त जैन समाज की एकमात्र विश्वस्तरीय 'जैन एकता' के लिए प्रयासरत 'जिनागम' पत्रिका को दी है।

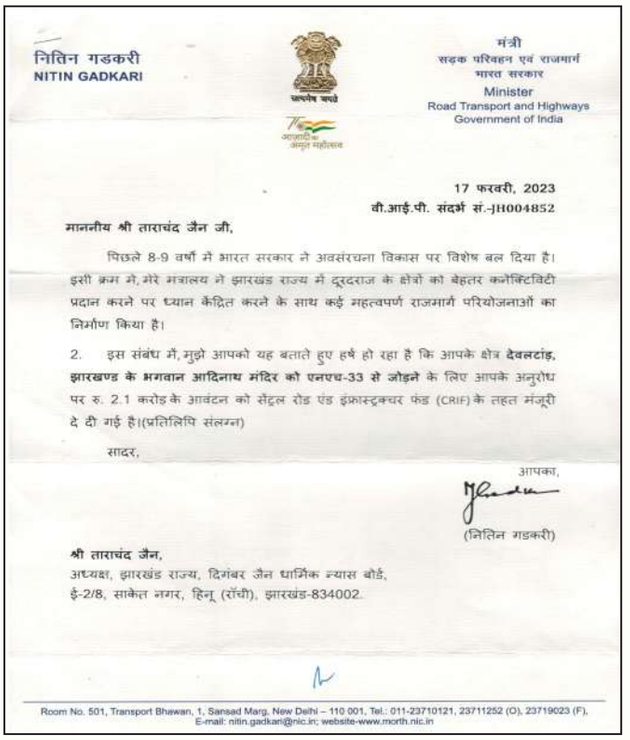

नितिन गडकरी
NITIN GADKARI

मंत्री
सड़क परिवहन एवं राजमार्ग
भारत सरकार
Minister
Road Transport and Highways
Government of India

17 फरवरी, 2023
वी.आई.पी. संदर्भ सं.-JH004852

माननीय श्री ताराचंद जैन जी,

पिछले 8-9 वर्षों में भारत सरकार ने अवसंरचना विकास पर विशेष बल दिया है। इसी क्रम में, मेरे मंत्रालय ने झारखंड राज्य में दूरदराज के क्षेत्रों को बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ कई महत्वपूर्ण राजमार्ग परियोजनाओं का निर्माण किया है।

2. इस संबंध में, मुझे आपको यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि आपके क्षेत्र **देवलटांड, झारखण्ड के भगवान आदिनाथ मंदिर को एनएच-33 से जोड़ने** के लिए आपके अनुरोध पर रु. 2.1 करोड़ के आवंटन को सेंट्रल रोड एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड (CRIF) के तहत मंजूरी दे दी गई है।(प्रतिलिपि संलग्न)

सादर,

आपका,
(नितिन गडकरी)

श्री ताराचंद जैन,
अध्यक्ष, झारखंड राज्य, दिगंबर जैन धार्मिक न्यास बोर्ड,
ई-2/8, साकेत नगर, हिनू (रॉंची), झारखंड-834002

Room No. 501, Transport Bhawan, 1, Sansad Marg, New Delhi – 110 001, Tel.: 011-23710121, 23711252 (O), 23719023 (F), E-mail: nitin.gadkari@nic.in; website-www.morth.nic.in

# With Best Compliments

# GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

# G R METALLOYS PVT LTD

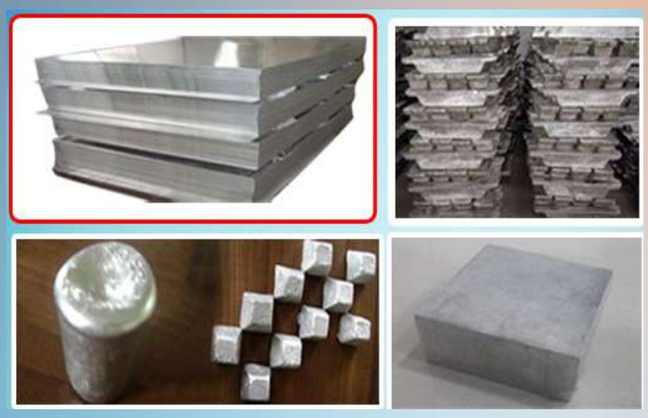

**SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN**

**JAYANT BABULAL JAIN**

**SHAILESH BABULAL JAIN**

**Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes**

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

# इंडिया भारत कहलाएगा - मुनिश्री निरंजनसागर

सुप्रसिद्ध जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रभावक शिष्य मुनिश्री निरंजन सागरजी महाराज ने महात्मा गांधीजी की पुण्यतिथि पर प्रवचन देते हुए कहा कि भारत आज तक अपने अस्तित्व को नहीं पाया है, किसी भी देश की पहचान का प्रमुख अंग उसका नाम हैं, उसकी स्वयं की भाषा है, उसकी स्वयं की आहार शैली, उसकी अपनी वेशभूषा है, उसकी अपनी शिक्षा पद्धति है, उसकी अपनी औषध विद्या है, परंतु आज हम सभी आवश्यकताओं पर विदेशों पर निर्भर होते जा रहे हैं। आज का नवयुवक विदेशी जीवन शैली को अपनाने की होड़ में दौड़ रहा है। यह अंतहीन दौड़ हमें हमारे संस्कारों से हमारे देश से, हमारे धर्म से कोसों दूर करती जा रही है। आज का नवयुवक जो देश का भविष्य कहलाता है, स्वयं अपने भविष्य के बारे में चिंतन से रहित होकर मात्र वर्तमान की चकाचौंध भरी ऐसी जीवनशैली जी रहा है, जिसका कोई ओर-छोर नहीं है।

उद्देश्य से भटका हुआ नवयुवक वर्ग ही 'भारत' की सबसे बड़ी समस्या है, मात्र गांधी जी के विचारों को अपनाकर ही हम इस विकट समस्या से मुक्ति पा सकते हैं। गांधीजी जैसा व्यक्तित्व कभी मरण को प्राप्त नहीं हो सकता है। गांधीजी आज भी 'भारत' की आत्मा में बसे हुए हैं। वर्तमान में राष्ट्रहित चिंतक आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महामुनिराज ने इंडिया नहीं 'भारत' बोलो, स्वदेशी रोजगार, भारतीय भाषा, भारतीय वस्त्र शैली, भारतीय औषध विज्ञान, भारतीय शिक्षा पद्धति, भारतीय कृषि का पुनरुत्थान आदि विषयों को अपने उपदेश का विषय बनाया और उनके प्रभावक राष्ट्र चिंतन से प्रभावित होकर एक बड़ा नवयुवक वर्ग उनके उपदेश को पूर्ण करने हेतु तत्पर हुआ, जिसका परिणाम यह है पूर्णायु औषधालय, प्रतिभास्थली विद्यापीठ, भाग्योदय चिकित्सालय, दयोदय गौशाला, श्रमदान हथकरखा केंद्र, शांति धारा दुग्ध योजना आदि प्रकल्प आज भारतीयता को जीवंत कर हमें पूर्ण स्वदेशीयता के साथ सत्य और अहिंसा की पुनर्स्थापना करने में लगे हुए हैं। आज ऐसा लगता है कि वह दिन दूर नहीं जब गांधी जी का भारत अपनी खोई हुई पहचान पुनः पा जाएगा और केवल 'भारत' ही कहा जाएगा।

# श्री कल्याणजी परमानंदजी पेढ़ी द्वारा आभार प्रेषित

**सिरोही:** सेठ श्री कल्याणजी परमानंदजी पेढ़ी की व्यवस्था में आने वाले श्री देलवाड़ा जैन मंदिर, माउंट आबू में दिनांक ७-३-२०२३ को होली के दिन दोपहर १ बजे क़रीब ५० लोगों ने अप्रत्याशित रूप से मंदिर में लकड़ी लेकर ज़बरदस्ती प्रवेश किया एवं मना करने के पश्चात भी गेर खेले, जो की एक अत्यंत ही निंदनीय घटना है। संस्था ने इसके खिलाफ़ FIR दर्ज करवा के प्रशासन से दोषी लोगों के खिलाफ़ कठोर से कठोर कार्यवाही की दरख्वास्त की है एवं ऐसी घटना की पुनरावृत्ति ना हो ऐसा सुनिश्चित करने की माँग की है।

पूरे भारत वर्ष से समस्त जैन धर्म के अनुनाइयों द्वारा इस घटना की निंदा की जा रही है तथा पेढ़ी को संपूर्ण जैन समाज तथा प्रशासन का सहयोग मिल रहा है। सेठ कल्याणजी परमानंद जी पेढ़ी मिले सहयोग के लिए आभार प्रकट करती है।

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें,
सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

देवेंद्र कुमार जैन (पाटनी)

505-बी विंग, धरती रेसिडेन्शसी, 150 फीट रोड़, निअर रीना मेहता कॉलेज,
भाईंदर पश्चिम, जिला-ठाणे, महाराष्ट्र, भारत-४०११०१,
दूरध्वनि - ०२२-२८१९ ८७०३ भ्रमणध्वनि: ९८२१२ २३८१८

जिसने जीता मन को उससे बड़ा न कोई वीर
धरती के सच्चे वीर हैं तीर्थंकर महावीर
'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

Dilip Nitesh Vaidvik Patodi
Mob.:- 9830032108
33, Subarban Park Road,
1St Floor, Flat A, Howrah,
West Bengal, Bharat-711101

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution



जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

जिसने जीता मन को उससे बड़ा न कोई वीर
धरती के सच्चे वीर हैं तीर्थंकर महावीर
'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Sanjeev Jain
Mob: 9415017824, 7080212057

JP

Jain Plastic Agencies
Jain Associates

218 Aminabad Road, Lucknow,
Uttar Pradesh, Bharat-226018
jain_plastic@rediffmail.com

'सत्य-अहिंसा' धर्म हमारा 'नवकार' हमारी शान है,
'महावीर' जैसा नायक पाया जैन हमारी पहचान है
तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक की पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

PTM

Jatan Singh Mehta
Mob.: 9422049225

Ratan Singh Mehta
Mob.: 9414008998

Pankaj Mehta
Mob.: 8155016504

PANKAJ TEXTILE MILLS

*Mfg of Export Quality Bottoms & Denium, Shirting, Loan Cloth, Pocketing And all other Fabrics*

5/586, 'Pankaj' Bunglow, Near Lions Club, Ichalkaranji,
Dist-Kolhapur, Maharashtra, Bharat- 416115
Email pankajsynthetics09©gmail.com

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

'सत्य-अहिंसा' धर्म हमारा 'नवकार' हमारी शान है,
'महावीर' जैसा नायक पाया जैन हमारी पहचान है
तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक की

हार्दिक शुभकामनाएं

Ajay Bhansali
Mob.: 9330505681

Bhansali Agarwal & Company

HMP House, 4, Fairlie Place, Room No. 10 & 12,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700001

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Dr. M.M. Begani Jain - Winner of International Award-2007 for Best Poster IAAS

Abhishek Day Care Institute
"A Div. of Abhishek Day Care Health Services Pvt. Ltd."
and
Medical Research Center
A state of the Art Center Dedicated to Ambulatory Surgery

ISO CERTIFIED 9001-2018

Free Piles Clinic- Got Best Public Service Award At
Confrence at Bombay Hospital September-2008

Procedures Performed

Hernia, Hydrocele, Varicocele, Vasectomy, Piles, Fistula-in-ano, Fissure-in-ano, Pilonidal sinus excision, Laparoscopic Appendicectomy, Biopsy, Lipoma excision, Sebaceous Cyst excision, Warts excision, Corn excision, Auroplasty, Orchidopexy, Orchidectomy, Ascitis/Pleural tapping, Abscess Drainage, Diagnostic laparsocopy, Toe nail excision, Endoscopies, Day Care Laparoscopic Surgery for Appendix, Gall Bladder and Varicocele

New 3 chip stryker HD laparoscopy camera set,
NeoV Laser Machine for Piles, Fistula, Fissure and Pilonidal Sinus surgeries without any incision
New Video Proctosope for Live Rectoscopy with images and video documentation of anal pathology
New Olympus Video Endoscope, " New GE 9100c Anaesthesia Machine for safer anaesthesia and surgery" All mediclaim cases undertaken here

WE ARE SITUATED AT

# 74/78, Indian Cancer Society Medical Center, Maharshi Karve Marg,
Opp. Cooperage Football Ground, Mumbai-400 021 | Telephone : 022-35775165
E-mail : abhishekdaycare9@hotmail.com, Website: www.drbegani.com, www.abhishekdaycare.co.in

Complimentry From M. M. Begani Jain & Family

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!

# जैन धर्म के लिए विभिन्न समयों पर विभिन्न सरकारी निर्णय (जरूर पढ़ें)

जैन धर्म की प्राचीनता और स्वतंत्रता के विषय में समय-समय पर अदालतों में पेश किए गए देश की उच्चतम एवं प्रदेशों की उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों ने निष्पक्ष होकर जैन धर्म के बारे में जो अपने सटीक निर्णय प्रस्तुत किए थे, उनकी संक्षिप्त जानकारियां:

**१९२७** - मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा। पत १९२७ मद्रास २२८ मुकदमे के निर्णय में जैन धर्म को स्वतंत्र, प्राचीन व ईसा से हजारों वर्ष पूर्व का माना।

**१९३९** - बम्बई उच्च न्यायालय ने। पत १९३९ बम्बई ३७७ मुकदमे के निर्णय में कहा कि 'जैन धर्म वेदों को स्वीकार नहीं करता, श्राद्धों को नहीं मानता है व अनुसंधान बताते हैं कि भारत में जैन धर्म ब्राह्मण धर्म से पहले था।''

बम्बई सरकार ने **१८ अगस्त, १९४८** की अपनी अधिसूचना में इस तथ्य को स्वीकार किया कि 'यद्यपि जैनों पर हिन्दू लॉ लागू है पस्तु जैनों को हिन्दुओं के रूप में वर्णित नहीं किया जा सकता।''

**१९५१** - बम्बई हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एम. सी. छाला और न्यायमूर्ति गजेंद्र गड़कर ने याचिका CWJC८२/१९५४ पर यह निर्णय दिया कि 'हरिजनों को जैनों के मंदिर में प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वे हिन्दू मंदिर नहीं हैं, यह विदित है कि जैन हिन्दुओं से भिन्न मतावलम्बी हैं।

**१९५४** - उच्चतम न्यायालय ने। पत १९५४ अनुच्छेद २८२ के निर्णय में माना कि 'भारत में जैन धर्म व बौद्ध अपनी पहचान रखते हैं व वैदिक धर्म से भिन्न हैं।''

**१९५८** - उच्चतम न्यायालय ने केरल शिक्षाबिल मामले में कहा कि ''जैन समाज अल्पसंख्यता प्राप्त करने के लिए उपयुक्त है।''

**१९६३** - उच्चतम न्यायालय ने ६४८ (V 50 C 101) के निर्णय में कहा था कि हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई व जैनों में ब्राह्मण, बनिया व कायस्थ ने। पत १९६८ कोलकाता ७४ के निर्णय में कहा कि 'जैन हिन्दू नहीं हैं केवल उनके फैसले हिन्दू लॉ के अनुसार किए जाते हैं।

**१९६८** - कलकत्ता उच्च न्यायालय ने ७४ (VSSC14) के निर्णय में ''जैनों को हिन्दू नहीं माना।'

**१९७५** - उच्चतम न्यायालय ने। पत १९७५ - ९६ के निर्णय में 'जैनों को दिल्ली में अपने शिक्षण संस्थानों का प्रबन्धन करने का निर्णय दिया।

**१९७६** - दिल्ली उच्च न्यायालय ने। पत १९७६ दिल्ली २०७ के निर्णय में कहा था 'संविधान का अनुच्छेद २५ जैनों को स्वतंत्र रूप से मानता है जो कि सर्वोच्च नियम है।''

**१९९३** - उच्चतम न्यायालय ने बाबरी मस्जिद मुकदमे के निर्णय में (१९९३, Air ३१७) जैन धर्म को अन्य अल्पसंख्यक धर्म की तरह हिन्दू धर्म से भिन्न माना था।

**१९९५** - उच्चतम न्यायालय ने। पत १९७४ ए एम् २०८९ के निर्णय में माना था कि - 'भारत में बौद्ध व जैन धर्म जाने-पहचाने धर्म हैं जो ईश्वर के होने में विश्वास नहीं रखते।''

**२००३** - उच्चतम न्यायालय ने पत २००३ एण् ७२४ में कहा कि - 'राष्ट्रीय गान में जैनों को पृथक रूप से दिखाया गया है।'

**२००६** - भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री एस. बी. सिन्हा और श्री दलबीर भण्डारी जी की खण्ड्पीठ ने अपने एक फैसले में कहा कि यह अविवादित तथ्य है कि जैन धर्म हिन्दू धर्म का हिस्सा नहीं हैं।

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर हार्दिक शुभकामनायें

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
Remove 'INDIA' Name From The Constitution

D.U. Jain - Santosh Jain
Nishant Jain - Sohani N. Jain
Jaiman Jain - Reenie Jain

Res: 3G-121, kalpataru Aura, LBS Rd, Ghatkopar West,
Mumbai-400 086, Maharashtra, Bharat
Mob: 8080051651 | Mail: du.jain@rediffmail.com

# साध्वी सुलोचनाश्री का चातुर्मास बसवनगुड़ी में

**बेंगलूरु:** बसवनगुड़ी में श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट के तत्वावधान में आगामी २०२३ का चातुर्मास खरतरगच्छाधिपति आचार्यश्री जिन मणिप्रभ सूरीश्वरजी की आज्ञानुवर्तिनी साध्वी सुलोचनाश्रीजी म.सा. का निश्चित हुआ है। रायपुर छत्तीसगढ़ में गच्छाधिपतिजी द्वारा दादावाड़ी ट्रस्ट के पदाधिकारियों और संघ के सदस्यों की उपस्थिति में चातुर्मास की घोषणा होते ही पूरे बेंगलूरु श्रीसंघ में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई है, इस अवसर पर दादावाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष निर्भय लाल गुलेच्छा और महामंत्री कुशलराज गुलेच्छा ने संघ को बधाई देते हुए कहा कि इस वर्ष पांच माह के चातुर्मास में सकल संघ के सदस्यों को ज्ञान, ध्यान और आराधना करने के लिए लाभ लेना है। ट्रस्ट के प्रवक्ता अरविन्द कोठारी ने गच्छाधिपतिजी का गच्छ गणिनीजी का चातुर्मास बेंगलूरु संघ को प्रदान करने के लिए आभार प्रकट किया गया। इस अवसर पर ट्रस्ट के तेजराज गुलेच्छा, विजयराज डोसी, पुखराज कवाड, पारसमल पगारिया, सेवा मंडल के उपाध्यक्ष अनिल भडकतिया, मंत्री ललित डाकलिया, रमेश गुलेच्छा, ज़वेरी लाल गुलेच्छा, रवि रतन बोहरा, प्रकाश पारख, अमित पारख आदि सदस्य उपस्थित थे।

# जय भारत! जय जिनेन्द्र!

**अनीता सुराणा**
अध्यक्ष श्री जैन श्वे. तेरापंथी महिला मंडल साउथ कोलकाता
चुरू निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८७४२४५५०४

अनीता जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहती हैं कि यह पर्व संपूर्ण समाज द्वारा अपने आराध्य तीर्थंकर महावीर के जन्म उत्सव के रूप में मनाया जाता है, जिसमें हर कोई अपनी तरफ से श्रद्धा को व्यक्त करते हुए तपस्या, उपवास आदि करते हैं। स्थानकों में धार्मिक आयोजन किए जाते हैं, जुलूस निकाले जाते हैं, स्कूली बच्चों द्वारा रैली निकाली जाती है। यह पर्व बड़ी निष्ठा के साथ मनाया जाना चाहिए, तभी इस पर्व की सार्थकता है और अपने आराध्य तीर्थंकर महावीर के प्रति सच्ची श्रद्धा होगी।

'जैन एकता' आज हमारे समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, एकता स्थापित होगी तभी हमारा समाज मजबूत होगा और नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा। समस्त जैन पंथों की घोषित एकमात्र 'जिनागम' पत्रिका द्वारा किया जा रहा 'जैन एकता' का प्रयास बहुत ही सराहनीय है।

आज की युवा पीढ़ी भी पहले की तुलना में अपने धर्म और समाज से जुड़ रही है, विभिन्न सामाजिक व धार्मिक कार्यों में उनकी सहभागिता देखते ही बनती है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का तो एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत' लोगों में इसके प्रति जागृति निर्माण करनी होगी, तभी यह कार्य संभव हो सकेगा।

अनीता जी मूलतः राजस्थान के 'चुरू' जिले की निवासी हैं। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा कोलकाता में ही संपन्न हुयी है, यहां आप विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में कार्यरत हैं। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल साउथ कोलकाता की अध्यक्ष हैं, अन्य महिला मंडल व राजस्थान महिला क्लब से भी जुड़ी हैं। जय भारत!

**बिजय कुमार जैन**
उपाध्यक्ष चेंबर ऑफ कॉमर्स
हरियाणा निवासी-उड़ीसा प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ८३२७७००२७४

बिजयजी 'तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि तीर्थंकर महावीर जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर के रुप में पूजे जाते हैं, जिन्होंने अहिंसा परमो धर्म, जियो और जीने दो का संदेश पूरे विश्व को दिया। उन्हीं के जन्मोत्सव को संपूर्ण जैन पंथों द्वारा जन्म कल्याणक पर्व के रूप में मनाया जाता है। सभी अपने-अपने घरों पर पूजा आराधना करते हैं, साथ ही सामूहिक रूप से भी पूजा-अर्चना की जाती है, जुलूस निकाले जाते हैं, विभिन्न सामाजिक व धार्मिक कार्यक्रम संपन्न किए जाते हैं, जिसमें जैन समाज के लोगों का उत्साह देखते ही बनता है। सभी पूरी निष्ठा के साथ जुड़ते हैं। हमारे यहां दिगम्बर पंथ का एक हमारा ही परिवार है, इसके अलावा स्थानकवासी और तेरापंथी पंथ के लोग बसे हैं, सभी के द्वारा 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' एक साथ-एक रूप में मनाया जाता है।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज की ओर से भटक रहा है। उनका रुझान कम होते जा रहा है अतः यह समाज और परिवार का दायित्व है कि युवाओं को अपने धर्म और समाज से जोड़े रखा जा सके, क्योंकि युवा वर्ग ही धर्म और समाज का भविष्य हैं, वे जुड़े रहेंगे तभी हमारा धर्म भी सुरक्षित रह सकता है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि एकता असंभव सी प्रतीत हो रही है, क्योंकि जो उच्च पदों पर आसीन हैं वह अपने दायित्वों का निर्वाह पूरी निष्ठा के साथ नहीं कर रहे हैं, वे दिखावे और कुर्सी के लालच में पड़े हुए हैं तो एकता कहां से स्थापित हो पाएगी। एकता तभी संभव हो सकती है जब हम सभी एक साथ-एक मंच पर उपस्थित रहें, बिना किसी अहम भाव के।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में अपना पूर्ण समर्थन देते हुए कहते हैं कि यह तो होना ही चाहिए कि अपने देश की पहचान एक ही नाम से रहे, सदियों से हमारे देश का नाम एक ही रहा है और एक ही रहना चाहिए, इंडिया नाम का कोई अर्थ नहीं।

बिजय जी मूलतः हरियाणा के निवासी हैं। आपका परिवार कई वर्षों से उड़ीसा में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, यहां आप फार्मास्यूटिकल व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही यहां स्थित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय हैं। महावीर जैन भवन के सचिव, चेंबर ऑफ कॉमर्स के उपाध्यक्ष जैसे कई पदों पर अपनी भूमिकाएं निभा रहे हैं। कालाहांडी केमिस्ट अॅड ड्रगिस्ट असोसिएशन के अध्यक्ष भी रहे है। जय भारत!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

**उमराव सिंह सेठिया**
**प्रसिद्ध समाजसेवी**
**सुजानगढ़ निवासी-चेन्नई प्रवासी**
**भ्रमणध्वनी: ९७१०२०९५४५**

उमरावसिंजी 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि हमारे तेरापंथ समाज में 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' पर कोई धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रम नहीं आयोजित किए जाते पर इस दिन समाज के लोगों द्वारा व्रत, उपवास, तपस्या की जाती है। आज के परिपेक्ष्य में महावीर के सिद्धांतों को जीवन में आत्मसात करना ही उनके जन्मोत्सव का सही अर्थ है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि यह एक असंभव सा प्रतीत होता है, क्योंकि हर संप्रदाय और पंथ द्वारा अपने-अपने मत व विचारों को ही विशेष महत्व दिया जा रहा है।

'जैन एकता' में सबसे बड़ी बाधा 'अहम' है, सभी अपने 'अहम' को सर्वश्रेष्ठ कहने में जुड़े हुए हैं। हमारे अष्टम आचार्य तुलसी जी द्वारा भी अन्य पंथों द्वारा मिलकर यह प्रयास किया गया था कि हमारी 'संवत्सरी' एक साथ मनाई जाए और इसके लिए वे कोई भी १ दिन निश्चित करें ताकि संपूर्ण पंथों द्वारा संवत्सरी एक साथ-एक रूप में मनाई जा सके, यदि हमारे गुरु भगवंत चाहें तो अवश्य ही 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है, क्योंकि श्रावक तो गुरु-भगवंतों के ही अनुयाई होते हैं। समस्त जैन पंथों की एकमात्र विश्वस्तराय विश्वस्नीय 'जिनागम' पत्रिका द्वारा 'जैन एकता' का प्रयास सराहनीय है। आज नहीं तो कल अवश्य 'जैन एकता' स्थापित होगी, क्योंकि समाज का भविष्य समाज की एकता में ही है।

आज की युवा पीढ़ी आधुनिक यंत्रों में व्यस्त है, हम युवाओं की बात कर रहे हैं, उनके माता-पिता भी अपने धर्म और समाज से विमुख होते जा रहे हैं, पालकों का यह कर्तव्य है कि कि वे स्वयं धर्म से जुड़े रहे और अपने बच्चों को भी धर्म से जोड़ें, उन्हें सही दिशा-निर्देश प्रदान करें।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में अपना पूर्ण समर्थन देते हुए कहते हैं कि अवश्य ही अपने देश की एक ही नाम से पहचान रहनी चाहिए 'भारत' यही नाम सदियों से चला आ रहा है।

उमरावजी मूलतः राजस्थान के 'सुजानगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा 'सुजानगढ़' में, तत्पश्चात उच्च शिक्षा 'कोलकाता' में संपन्न हुई है। १९८४ से आप 'चेन्नई' में बसे हैं, इसके पूर्व १० वर्षों तक आप अफ्रीका और यूरोप के देशों में बसे रहे। चेन्नई में आप एसी स्पेयर पार्ट्स के व्यवसाय से जुड़े हैं जो ३ पीढ़ियों से चला आ रहा है। यहां आप सामाजिक कार्यों में भी विशेष रूप से सक्रिय रहते हैं। आप सभी धर्म का ज्ञान रखते हैं और उसमें निष्ठा भी रखते हैं। अणुव्रत समिति से जुड़े हैं, अन्य कई सामाजिक संस्था में विशेष सलाहकार के रूप में अपनी भूमिका निभाते हैं, आपके परिवार द्वारा 'सुजानगढ़' में महिला विद्यालय संचालित है। आप 'चेन्नई' में एक प्रसिद्ध समाजसेवी के रूप में जाने जाते हैं। जय भारत!

**दिलीप पाटोदी**
**पूर्व सचिव सुजानगढ़ नागरिक परिषद**
**सुजानगढ़ निवासी-कोलकाता प्रवासी**
**भ्रमणध्वनि: ९८३००३२१०८**

दिलीप जी 'जैन एकता' के विषय पर अपने भाव व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज अपने समाज में सबसे अधिक जरूरत है एकता की, भले ही हम मंदिर मार्गी या साधुमार्गी हों, श्वेताम्बर हों या दिगम्बर पर उससे पहले हम सब 'जैन' हैं, जहां धर्म और समाज की बात आती है, वहां सभी संप्रदायवाद भूलकर हम सिर्फ 'जैन' रहें, इस बात को महत्व देना चाहिए। हमारे २४ तीर्थंकर एक हैं हम उन्हीं के बताए दिशा-निर्देशों का पालन करते हैं। हमारा महामंत्र णमोकार मंत्र एक है तो यह भिन्नता क्यों? इसके लिए हमारे समाज के सभी गुरुओं को एक साथ-एक मंच पर आना होगा, तभी यह कार्य संभव हो सकता है।

आज की युवा पीढ़ी को अपने जैन धर्म की विशेषताओं को वैज्ञानिक तरीके से समझाना होगा कि रात में खाना क्यों नहीं खाना चाहिए, पानी उबालकर क्यों पीना चाहिए, यदि यह सब उन्हें वैज्ञानिक तरीके से समझाया जाए तो अवश्य ही युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ेगी, उन्हें हमारे २४ तीर्थंकरों के बारे में भी जानकारी देनी होगी, सर्वप्रथम ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर के बारे में जानकारी देनी होगी, तभी युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से जुड़ा रहेगा।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि मैं तो शुरु से ही अपने देश को सिर्फ 'भारत' नाम से संबोधित करते आया हूं। यह हमारा भारत है, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के पुत्र भरत की यह धरती है, जिसके नाम से इस देश का नाम 'भारत' पड़ा, अतः अपने देश की पहचान सिर्फ 'भारत' से रहनी चाहिए।

दिलीप जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सुजानगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में व शिक्षा सुजानगढ़ में संपन्न हुई है। पिछले ४५ वर्षों से आप कोलकाता में बसे हुए हैं और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया से सेवानिवृत्त हुए हैं। वर्तमान में सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। सुजानगढ़ नागरिक परिषद के पूर्व सचिव रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं। जय भारत!

**संजीव जैन**
**अध्यक्ष श्रावस्ती दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र**
**लखनऊ निवासी**
**भ्रमणध्वनि: ९४१५०१७८२४**

संजीव जी 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' पर शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महावीर स्वामी जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर हैं, जिन्हें लोग जैन धर्म का प्रवर्तक मानते हैं, वे जैन धर्म के प्रवर्तक नहीं थे, वे २४ तीर्थंकरों की श्रृंखला में अंतिम तीर्थंकर थे। जैनिज्म कोई धर्म ना होकर जीवन जीने की एक पद्धति है। झूठ, हिंसा, मारकाट जैसे बुरे कर्मों के लिए कोई स्थान नहीं, यह पूर्णतः सात्विक जीवन जीने की पद्धति है, जिन्होंने अपने इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर ली वह हमारे पूजनीय हैं, चाहे वे मुनिराज हों या हमारे गुरु भगवंत, हमारे यहां किसी व्यक्ति विशेष की पूजा ना होकर गुणों की पूजा की जाती है। तीर्थंकर महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक पर्व को मनाने का उद्देश्य यही है कि उनके संदेशों उनके आदर्शों, सिद्धांतों, विचारों को जन-जन तक पहुंचाया जा सके, जो कसाय का वातावरण फैला हुआ हैं, उन्हें समाप्त करने का प्रयास किया जा सके, उन्होंने देश ही नहीं पूरे विश्व को 'जियो और जीने दो' का संदेश दिया जो तीन अर्थों में अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकांतवाद के रूप में सार्थक होता है। महावीर स्वामी के सिद्धांतों का इस रूप में अनुसरण करें तो ही हम उनके संदेश को जन-जन तक पहुंचा सकते हैं।

जैन समाज में एकता बहुत जरूरी है पर इसके लिए हमें अहंकार व विसंगतियों को छोड़कर एक साथ-एक मंच पर स्थापित होना होगा। हमारा समाज बहुत ही छोटा रह गया और उसमें भी इतने संप्रदाय और विसंगतियां बन गई हैं तो हमारा समाज आगे कैसे बढ़ेगा और इन सबको जोड़ने का कार्य और क्षमता हमारे साधु समाज में ही है, हम जैन एक हो कर रहें, आपसी कार्यक्रमों के दौरान एक दूसरे संप्रदाय का सम्मान करें, सम्मान दें, तभी एकता संभव हो सकती है।

हमारा युवा वर्ग धर्म से तो जुड़ा हुआ है पर धर्म के प्रति उनके तार्किक दृष्टिकोण का समाधान भी करना होगा, उनमें श्रद्धा की कमी है यदि हम उनके तार्किक दृष्टिकोण का समाधान कर सकते हैं तो वे अपने धर्म और समाज से जुड़े रहेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, हमारे आचार्य विद्यासागर जी ने भी इसका आह्वान किया है, इंडिया शब्द तो अंग्रेजों द्वारा दिया गया नाम है जिसका कोई अर्थ नहीं, भारत में बनने वाले सभी वस्तुओं पर Made in BHARAT लिखा जाए तो यह एक अच्छी शुरुआत होगी।

संजीव जी मूलतः उत्तर प्रदेश के 'पीलीभीत' के निवासी हैं, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। पिछले ३० वर्षों से आप लखनऊ में बसे हुए हैं और डिस्ट्रीब्यूशन के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। श्रावस्ती दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र के अध्यक्ष हैं और दिगम्बर समाज के अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हैं।

**नरेश जे. लोढ़ा जैन**
**उपाध्यक्ष उड़ान व जीवन बीमा सलाहकार**
**घाणेराव निवासी-मुंबई प्रवासी**
**भ्रमणध्वनि: ९८२०२८५७०१**

नरेशजी तीर्थंकर 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' मनाने का परिपेक्ष आज के समय में और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है जिस तरह चारों तरफ हिंसा और नफरत की भावना फैली है उसे रोकने के लिए तीर्थंकर महावीर के संदेश 'जियो और जीने दो' के माध्यम से समाज में फैले कयासों को मिटाया जा सकता है, इस पर्व के माध्यम से तीर्थंकर महावीर के संदेशों व मूल्यों को याद किया जाता है और व्यवहारिक जीवन में उसे आत्मसात कर विश्वस्तर पर फैलाने का प्रयास किया जाता है अतः आज के परिपेक्ष में यह पर्व अत्यंत आवश्यक है और युवाओं को भी इसे अधिक से अधिक जोड़ा जा सकता है।

हमारी युवा पीढ़ी जुड़ी तो हुई है पर उन्हें सही दिशा निर्देश नहीं मिल पा रहे हैं, वह धर्म के मर्म को समझ नहीं पा रहे हैं और उन्हें जोड़ने के लिए व्याख्यान मालाओं में उनकी उपस्थिति होनी अत्यंत आवश्यक है। हमारे २४ तीर्थंकर के आदर्शों को सरल भाषा में उनके सम्मुख प्रस्तुत किया जाए तो ही वे धर्म से जुड़ेंगे।

'जैन एकता' तभी संभव हो सकती है, जब हर संप्रदाय के गुरु भगवंत प्रयास करें तो अवश्य 'जैन एकता' स्थापित हो सकती हैं, क्योंकि सभी के मूल में तीर्थंकर महावीर व उनके द्वारा बताए गए सिद्धांत ही हैं, आज समाज में एकता की अत्यंत आवश्यकता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि 'भारत' नाम ही हमारी संस्कृति से हमें जोड़े रखता है यह प्राचीन नाम है पर यह हमारे गौरवशाली इतिहास व्यक्त करता है। 'भारत' नाम के साथ-साथ हमें अपने देश के विकास और सुख-शांति के लिए भी प्रयास करना होगा, तभी हम इस नाम की सार्थकता विश्व को बता पाएंगे।

नरेश जी मूलतः राजस्थान के 'घाणेराव' के निवासी हैं। आपका जन्म घाणेराव में और संपूर्ण शिक्षा मुंबई में संपन्न हुई है। पिछले ४२ वर्षों से आप मुंबई में बसे हैं और जीवन बीमा सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं, जैन फुलवारी के सचिव, उड़ान संस्था के उपाध्यक्ष जैसी कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मै भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

## अशोक पुनमिया

**व्यवसाई व समाजसेवी**

**सांडेराव निवासी-कुम्भकोलम प्रवासी**

**भ्रमणध्वनिः ९४४३३२०१४१**

अशोकजी 'तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि संपूर्ण जैन पंथों द्वारा हमारे २४वें तीर्थंकर महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक के उपलक्ष में मनाया जाता है, इस पर्व को मनाने का उद्देश्य यही है कि महावीर जी के सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाया जाए, पर्व के अवसर पर समाज द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रम संपन्न किए जाते हैं, जिसमें सभी की सहभागिता रहती है, जुलूस व शोभायात्रा भी निकाली जाती है। पर्व को मनाने का उद्देश्य तभी सार्थक हो सकता है जब हम महावीर जी के सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात करें और उसी के अनुरूप अपना जीवन यापन करें।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है, यह समझने और समझाने की बात है यदि संपूर्ण समाज एक साथ-एक मंच पर स्थापित होगा तो अवश्य 'जैन एकता' स्थापित होगी और यह हमारे समाज के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है। एकता ना होने से ही हमारे समाज व धर्म का अस्तित्व नगण्य होते जा रहा है, अतः अपने धर्म और समाज की रक्षा हेतु समाज में एकता होना अत्यंत आवश्यक है।

आज का युवा भी अपने धर्म और समाज से जुड़ रहा है, उनके भीतर भी धर्म और समाज से जुड़ी भावनाएं निर्मित हो रही हैं, वे भी विभिन्न धार्मिक व सामाजिक कार्य में बढ़-चढ़कर उपस्थित रहते हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम एक ही रहना चाहिए 'भारत', इसके अतिरिक्त अन्य कोई नाम हमारे देश की शोभा और इतिहास नहीं बढ़ा सकते, अतः अपने देश की पहचान 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए। समय लगेगा पर यह अभियान अवश्य सफल होगा।

अशोक जी मूलतः राजस्थान स्थित 'सांडेराव' के निवासी हैं। आपका परिवार ५ पीढ़ियों से तमिलनाडु के तंजौर जिले में स्थित 'कुंभकोलम' का निवासी है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा भी यहीं संपन्न हुई है। यहां आप टेक्सटाइल व्यवसाय से जुड़े हुए है जो कि 'जयहिंद स्टोर' के नाम से प्रचलित है यह आपके दादाजी द्वारा स्थापित की गयी थी, साथ ही आप सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय रहते हैं। जय भारत!

## अजय भंसाली

**अध्यक्ष श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कोलकाता**

**श्री डूंगरगढ निवासी-कोलकाता प्रवासी**

**भ्रमणध्वनीः ९३३०५०५६८१**

अजय जी तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि तीर्थंकर महावीर जी का जीवन अद्भुत प्रेरणा देने वाला है। इस अवसर्पिणी काल में जहां काल अच्छे गुण आदि के ह्रास की तरफ बढ़ रहा है, महावीर जन्म कल्याणक का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। लोग जैसे जैसे धर्म से दूर बढ़ रहे हैं, उन्हें भगवान महावीर के जीवन को और अधिक पढ़ने और समझने की आवश्यकता हो जाती है। ऐसे में महावीर जन्म कल्याणक पर्व का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। समाज द्वारा इस पर्व के दौरान विशाल जुलूस का आयोजन किया जाता है एवं उसके पश्चात यह जुलूस धर्म सभा में परिवर्तित हो जाता है। धर्म सभा में भगवान महावीर द्वारा दिए गए उपदेशों को स्मरण करके उनके बताए गए सिद्धांतों पर चलने की प्रेरणा दी जाती है।

जैन एकता आज हमारे समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। वर्तमान में जैन समाज कई संप्रदायों में बंट चुका है। मान्यताओं में भिन्नता है, ऐसे में विभिन्न पंथों के आचार्यों को मिलकर जैन एकत्व पर अवश्य विचार करना चाहिए। तेरापंथ धर्म संघ के नवम आचार्य श्री तुलसी ने इसकी पहल भी की थी एवं वर्तमान युग प्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी भी समय-समय पर विशेष प्रयास कर रहे हैं।

वर्तमान में जैन समाज देश और विदेश में विभिन्न क्षेत्रों में फैल चुका है, लोग कॉस्मापॉलिटन हो गए हैं। ऐसा लगता है युवा पीढ़ी जैनत्व से दूर हो रही है, ऐसे में विभिन्न संप्रदाय के युवा पीढ़ी को धर्म से जोड़ने के लिए सामाजिक मीडिया का उपयोग कर विशेष प्रयास कर रहे हैं। साथ ही साधु साध्वीयों का विहार क्षेत्र भी विस्तृत हो रहा है, वे युवाओं को धर्म की प्रेरणा दे रहे हैं। ऐसे ही प्रयासों से युवा पीढ़ी को धर्म एवं समाज से जोड़ा जा सकता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि भारत हमारे देश का प्राचीन नाम है, जिसका इतिहास सहस्त्र वर्ष पुराना माना जाता है। मेरा मानना है कि भारत को भारत ही बोला जाना चाहिए, जिससे हम प्राचीनता के साथ जुड़े रहे और इसके इतिहास को हम स्मृति पटल पर रख पाएं। अजय जी मूलतः राजस्थान के 'श्रीडूंगरगढ़' के निवासी हैं, आपकी संपूर्ण शिक्षा पश्चिम बंगाल में संपन्न हुई है। पिछले कई वर्षों से आप कोलकाता में बसे हैं और चार्टर्ड अकाउंटेंट के पेशे से जुड़े हैं। साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय रहते हैं। वर्तमान में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कोलकाता के अध्यक्ष के रूप में सेवाएं दे रहे हैं। इसी सभा में पहले ४ वर्षों तक मंत्री के रूप में सेवाएं दे चुके हैं। साथ ही तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के साथ भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

**जतनसिंह मेहता**
व्यवसाई व समाजसेवी
ब्यावर निवासी-इचलकरंजी प्रवासी
भ्रमणध्वनी: ९४२२०४९२२५

जतनसिंहजी 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' आज के परिवेश में बहुत ही अधिक आवश्यक है क्योंकि इसी से हमें प्रेरणा मिलती है, भले ही हम १ दिन के लिए जुड़ते हैं पर भविष्य में महावीर के सिद्धांतों का अनुसरण कर सकें इसके लिए प्रयासरत रहते हैं। त्याग, तप, दान, संयम का अनुसरण जैन समाज हजारों वर्ष से करता चला आ रहा है और आगे भी करता रहेगा। महावीर के द्वारा दिए गए सिद्धांत 'जियो और जीने दो' हर काल के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य आज के कलयुग में और भी जरूरी हो गया है इसीलिए हम भले ही १ दिन के लिए महावीर के सिद्धांतों को अपने जीवन में पर्व के माध्यम से जोड़ने का प्रयास करते हैं, और भविष्य में भी जुड़े रहें, इसीलिए यह पर्व मनाना अत्यंत आवश्यक है।

'जैन एकता' आज हमारे समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। आज हमारी संख्या इतनी कम है कि हम अल्पसंख्यक में गिने जाते हैं उसके बावजूद हम पंथों में बंटे हैं और सभी संप्रदाय को एक साथ-एक मंच पर लाने का कार्य सभी पंथों के आचार्य व समाज के वरिष्ठ जन के माध्यम से ही संभव हो सकता है। हमारे सभी पर्व एक साथ-एक रुप में मनाया जाए तो अवश्य एकता स्थापित हो सकती है और अन्य समाज को भी हमारी एकता दिखाई देगी।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से तो जुड़ना तो चाह रही है पर उन्हें वह मौका नहीं मिल पा रहा है जिससे वह धर्म और समाज से जुड़ा रहे। आज विभिन्न कार्यक्रमों में होने वाले फिजूलखर्ची और स्वागत समारोह में लगने वाला समय युवाओं में उदासीनता निर्माण कर रहा है, जिसे रोकना अत्यंत आवश्यक है, यदि युवाओं को जोड़ना है तो समाज द्वारा दिखावे आडम्बरों को रोकना होगा।

'भारत को 'भारत' की बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए क्योंकि यही नाम हमारे प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से पड़ा है, 'भारत' नाम हमारे देश का प्राचीन इतिहास दर्शाता है।

जतनजी मूलतः राजस्थान के ब्यावर के निवासी हैं। आपका जन्म शिक्षा 'ब्यावर' में ही संपन्न हुयी है। १९८१ से आप महाराष्ट्र के इचलकरंजी में बसे हैं और टेक्सटाइल उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय रहते हैं। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में यथासंभव अपनी सक्रियता निभाते हैं, जरूरतमंदों को चिकित्सीय सहायता प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। आपके सामाजिक कार्यों के कारण आपको जीवन गौरव, समाज भूषण जैसे कई सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए सामाजिक, धार्मिक व व्यापारिक कार्यों में सतत अग्रसर हैं। बढ़े भाई रतन मेहता ब्यावर में DRUCC अजमेर रेल्वे मंडल के सदस्य व श्री आगम प्रकाशन समिति के महामंत्री, श्री पार्श्वनाथ जैन हास्पिटल के ट्रस्टी व कार्यकारिणी सदस्य, महावीर इंटरनेशनल इत्यादि संस्थाओं में सेवा कार्य कर रहे है। जय भारत!

**सम्पतलाल सोगानी**
व्यवसाई व समाजसेवी
सुजानगढ़ निवासी-गुवाहाटी प्रवासी
भ्रमणध्वनी: ९८६४०१७५९९

सम्पतलालजी 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' संपूर्ण समाज द्वारा बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाया जाता है, इस दिन संपूर्ण समाज द्वारा शोभायात्रा निकाली जाती है, जिसमें सभी आयु वर्ग के लोग बड़े उत्साह से सम्मिलित होते हैं, इस दौरान धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रम भी संपन्न किए जाते हैं। महावीर स्वामी के संदेश आज भी हमारे लिए उतने ही प्रेरणा स्वरूप हैं जितने पूर्व में रहे होंगे। आज उनके संदेशों और आदर्शों की सबसे अधिक आवश्यकता है।

'जैन एकता' आज हमारे समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है और यह होना ही चाहिए और इसके लिए सभी संप्रदायों को मिलकर प्रयास करना होगा, क्योंकि एकता में ही बल है, हमारा समाज वैसे भी कम संख्या में है और उसमें भी यदि हम इसी तरह बिखरे रहे तो थोड़े समय में हमारा समाज ही नामूल हो जाएगा, इसे रोकने के लिए 'जैन एकता' अत्यंत आवश्यक है।

आज की युवा पीढ़ी समाज व धर्म से जुड़ना तो चाहती है पर वह असमंजस में पड़ी हुई है कि वह किन गुरु-भगवंतों की बात माने और किसके दिशा-निर्देश पर चले, उन्हें सही दिशा की आवश्यकता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। वर्तमान आचार्य विद्यासागरजी ने भी इसके लिए आव्हान भी किया है।

संपतलालजी मूलतः राजस्थान के 'सुजानगढ़' के निवासी हैं। आपके पिताजी के समय से आपका परिवार गुवाहाटी आसाम में बसा है। आपका जन्म व संपूर्ण शिक्षा ही 'सुजानगढ़' में संपन्न हुई है। गुवाहाटी में आप पेट्रोलियम व परिवहन के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। भारतवर्षीय संरक्षिणी महासभा से भी जुड़े हैं। जय भारत!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

**तेज कुमार बैद**
अध्यक्ष भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा मध्य प्रदेश
इंदौर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२५१५४७७७

तेजकुमारजी का जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'इंदौर' में संपन्न हुई है। यहां आप डिप्टी कमिश्नर वाणिज्यकर विभाग मध्यप्रदेश शासन से सेवानिवृत्ति पाई है, वर्तमान में पूरी तरह से समाज सेवा में सक्रिय हैं। मध्य प्रदेश तीर्थ संरक्षण महासभा के अध्यक्ष, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा मालवा प्रांतीय महासभा, श्री महावीर ट्रस्ट इंदौर के उपाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

तेजकुमारजी 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि आज के परिवेश को देखा जाए तो महावीर जन्म कल्याणक मनाने का उद्देश्य की सार्थकता समाप्त सी हो गई है, आज जितने भी सामाजिक संस्थाएं और उच्च पदों पर कार्यरत अपने स्वार्थ को सर्वोपरि रखे हुए हैं। धर्म के लिए उनकी आस्था समाप्त होती जा रही है और धार्मिक संस्थाएं उनके लिए मात्र एक आजीविका का साधन रह गया है तो हम महावीर के सिद्धांतों को किस तरह विश्व में फैला सकते हैं। आज समाज में फैले आडम्बर और दिखावे के कारण हमारा समाज अपने मूल पथ से विमुख होता जा रहा है जो एक दुख का विषय है। अपने धर्म और समाज की रक्षा हेतु सभी को मिलकर आगे आना होगा और धर्म के प्रति समर्पित होना होगा।

'जैन एकता' आज हमारे समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है और यह तभी संभव हो सकता है जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति धर्म के प्रति समर्पित होगा और अपने धर्म के महत्व को बचाने के लिए सर्वप्रथम हमारे गुरु-भगवंतों को एक साथ-एक मंच पर आना होगा, क्योंकि श्रावक तो जुड़ना चाहता है, पर वह अपने गुरु का अनुयाई होता हैं। यदि गुरु कहेंगे तो वह अवश्य ही समाज में एकता स्थापित होगी, पर यहां आज सभी धर्मगुरू अहम और प्रतिष्ठा के पीछे पड़े हुए हैं तो एकता कैसे स्थापित हो सकती हैं। एकता स्थापित ना होने से ही आज हमारे तीर्थ हमारे हाथ से निकलते जा रहे हैं।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी है पर हम उनके सम्मुख जो आदर्श और सिद्धांत स्थापित करना चाहिए वह नहीं कर पा रहे हैं। स्वाध्याय गुरुकुल में आडंबर अधिक होने लगे हैं, समाज का धन अपव्यय हो रहा है, तो हम नई पीढ़ी के सम्मुख क्या उदाहरण और आदर्श प्रस्तुत कर सकेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, यह हमारे प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव जी के जेष्ठ पुत्र भरत के नाम से पड़ा है, पर यह राजनीतिक मसला भी है और इसे राजनीतिक क्रियाकलापों द्वारा ही संभव किया जा सकता है। जय भारत!

**आलोक सुराणा जैन**
हेड स्ट्रैटेजिक अकाउंट
पड़िहारा निवासी-बेंगलुरु प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८४५१७७९३३

आलोकजी 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' का महत्व हमेशा रहा है और रहेगा। आज के परिवेश में इसकी सबसे ज्यादा आवश्यकता है, क्योंकि आज हमारा समाज अपने आधुनिक जीवनशैली के कारण दिखावों और आडंबरों में अधिक घिरा हुआ है। जैन धर्म के जो मूल संस्कार हैं उनसे हम परे होते जा रहे हैं, पहले यह सिर्फ शहरों तक ही सीमित था, पर आज छोटे-बड़े कस्बों व गांवों में भी दिखाई देता है। हमारा समाज अपने मूल लक्ष्य से भटक रहा है, इस पर्व के माध्यम से हम महावीर के सिद्धांतों और आदर्शों से जुड़ने का प्रयास करते हैं ताकि अपने जीवन में आत्मसात कर सकें।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि आज हमारे समाज में एकता की सबसे बड़ी आवश्यकता है, एकता सिर्फ किसी मुसीबत के समय हमें दिखाई देती है यदि हम हमेशा ही एक रहे तो सम्मेद शिखर जैसे मुद्दे उभरेंगे ही नहीं, इसके लिए हमें ऐसा कुछ करना चाहिए जिससे संपूर्ण समाज हमेशा एक साथ-एक मंच पर उपस्थित रहे।

आज के युवा वर्ग की अपने धर्म और समाज की प्रगति सक्रियता कम ही है, उनकी इस तीव्रता को बढ़ाना होगा, कोशिशें हो रही हैं उन्हें जोड़ने के लिए, पर हम उसमें सफल नहीं हो पा रहे हैं, इसका कारण आधुनिक शिक्षा पद्धति व प्रतियोगिताएं, जिसमें बच्चों के साथ-साथ माता-पिता भी उलझ कर रह गए हैं इसीलिए वे धर्म और समाज के प्रति समर्पित नहीं हो पा रहे हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि १००% अपने देश का नाम सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया नाम गुलामी मानसिकता का प्रतीक है, इस दिशा में ठोस कदम उठाना होगा, जिससे हम 'भारत' को सिर्फ 'भारत' ही बोल सकें।

आलोकजी मूलतः राजस्थान स्थित 'पड़िहारा' के निवासी हैं, आपका जन्म और प्रारंभिक शिक्षा 'कोलकाता' में संपन्न हुई है, तत्पश्चात उच्च शिक्षा आपने 'बेंगलुरु' से ग्रहण की और एक मल्टीनेशनल कंपनी में स्ट्रैटेजिक अकाउंट हेड के पद पर सेवारत हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्य हैं। जीतो से भी जुड़े हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

**कन्हैयालाल नलवाया**
मंत्री श्री महावीर जैन श्वेताम्बर समिति उदयपुर
मध्य प्रदेश निवासी-उदयपुर प्रवासी
भ्रमणध्वनी: ९४१४१६७५५७

कन्हैयालालजी 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि महावीर के सिद्धांतों का अनुसरण करने के लिए ही संपूर्ण जैन समाज द्वारा 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' बहुत ही विशाल रूप में मनाया जाता है। महावीर के स्यादवाद, 'जियो और जीने दो' के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए ही यह पर्व मनाया जाता है। आज इन सिद्धांतों की सबसे बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि समाज व देश कहीं ना कहीं विध्वंस शक्तियों से ग्रसित होते जा रहा है न सिर्फ अहिंसा बल्कि अन्य सिद्धांतों के द्वारा भी समाज में फैले विकृतियों को रोका जा सकता है। इस पर्व को मनाने का उद्देश्य आज भी सार्थक है और आगे भी सार्थक रहेगा। 'महावीर जन्म कल्याणक' एक ऐसा पर्व है जो एक ही समय पर मनाया जाता है, यह पर्व दिगम्बर-श्वेताम्बर व अन्य संप्रदाय सभी को एक माला में पिरोने का कार्य करता है, इस दौरान सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, उपनगरों में प्रभात फेरी निकाली जाती है, उदयपुर में सकल जैन समाज द्वारा प्रत्येक ४ वर्षों में भव्य स्वामी वात्सल्य का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है, जिस पर संपूर्ण जैन पंथ संगठित होकर चर्चा-परिचर्चा करता है और अन्य जैन समाज के सम्मुख भी हमारी एकता का संदेश जाता है, इसीलिए हर पर्व मनाना आज के परिपेक्ष में अत्यंत आवश्यक है।

'जैन एकता' हमारे समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है, 'जीतो' संस्था द्वारा किसी न किसी रूप में सार्थक भी किया जा रहा है। 'जीतो' सिर्फ धर्म समाज ही नहीं जरूरतमंद विद्यार्थियों व छात्राओं को उचित आर्थिक सहायता प्रदान कर, उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है, जिससे हमारे समाज की स्थिति सुधरेगी और निश्चित ही हमारा समाज आगे बढ़ेगा।

आज के युवा वर्ग में अपने धर्म व समाज के प्रति चेतना का निर्माण हो रहा है। यह चेतना कोरोना काल के पश्चात ही युवाओं में अधिक जागृति आयी है और इसे सफल बनाने के लिए घर-घर में बाल्यकाल से ही बच्चों को संस्कार देने की आवश्यकता है तभी युवावस्था में भी वे अपने धर्म और संस्कारों से जुड़े रहेंगे।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए, क्योंकि प्राचीन काल से हमारा देश भारतवर्ष के नाम से संबोधित किया जाता रहा है। इंडिया नाम तो अंग्रेजों द्वारा थोपा गया नाम है, जो गुलामी का प्रतीक है। हमने बड़े संघर्षों के बाद गुलामी से मुक्ति प्राप्त की है तो हम इस नाम को अपना कर पुनः गुलामी क्यों अपना रहे हैं?

कन्हैयालालजी मूलतः मध्य प्रदेश में स्थित 'नीमच' के निवासी हैं। आपका जन्म व प्रारंभिक शिक्षा धामनियां (नीमच) में ही संपन्न हुई है, तत्पश्चात आगे की संपूर्ण शिक्षा राजस्थान में हुई है। पिछले ५५ वर्षों से आप 'उदयपुर' में बसे हैं, स्टेट बैंक में चीफ मैनेजर के पद पर से सेवानिवृत्त हुए हैं। सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। श्री महावीर जैन श्वेताम्बर समिति उदयपुर के तीसरी बार मंत्री पद पर स्थापित हुए हैं, एसबीआई पेंशनर संगठन के संगठन सचिव, महाराणा प्रताप वरिष्ठ नागरिक संगठन के संगठन सचिव के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं, अन्य कई संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं।

**अरविंद जैन**
व्यवसाई व समाजसेवी
हिसार निवासी-सूरत प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३७७१९७३३१

अरविंद जी 'तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि यह पर्व जैनों का सबसे प्रमुख पर्व होता है क्योंकि इसी दिन जैन धर्म को ऊंचाइयों पर ले जाने वाले २४ वें तीर्थंकर और हमारे आराध्य महावीर स्वामी जी का जन्म उत्सव होता है, जिसे संपूर्ण जैन पंथों द्वारा उत्साह पूर्वक मनाया जाता है। इस महोत्सव पर जैन मंदिरों को विशेष रूप से सजाया जाता है। भारत में कई जगह पर जैन समुदाय द्वारा प्रभात फेरी व रैली निकाली जाती है, इस अवसर पर गरीबों व जरूरतमंदों को सहयोग दिया जाता है। अन्य कई धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रम किए जाते हैं।

'जैन एकता' की बात की जाए तो आज समाज में सबसे बड़ी आवश्यकता बन चुकी है और यह कार्य हम श्रावकों द्वारा ही संभव किया जा सकता है, यदि हम पंथवाद व संप्रदायवाद को छोड़ दें तो अवश्य 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है, भले ही हमारी पूजा पद्धति व आराधना पद्धति भिन्न-भिन्न हों, पर सभी के मूल में तीर्थंकर महावीर स्वामी और उनके बताए सिद्धांत ही हैं।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से जुड़ रहा है, वह भी विभिन्न सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों में अपनी सक्रियता निभाता हैं।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए 'भारत'।

अरविंद जी मूलतः हरियाणा स्थित 'हिसार' के निवासी हैं। आप पिछले कई वर्षों से 'सूरत' में बसे हुए हैं और यहां व्यवसाय से जुड़े हैं साथ ही दिगम्बर पंथ की विभिन्न संस्थाओं में भी अपनी भूमिका निभाते हैं। जय भारत!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

**संगीता सेखानी**
पूर्व अध्यक्ष श्री जैन श्वे. तेरापंथ महिला मंडल साउथ कोलकाता
बिदासर निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३६६२३५५३

संगीता जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने भाव व्यक्त करते हुए कहती हैं कि अवश्य ही हमारे समाज में एकता की नितांत आवश्यकता है, इसके लिए समाज में सभी गुरु-भगवंतों को एक साथ-एक मंच पर आना होगा, तभी यह एकता संभव हो सकती है, क्योंकि हमारे तीर्थंकर एक हैं, णमोकार मंत्र एक है। समस्त जैन पंथों द्वारा स्विकृत एकमात्र 'जिनागम' पत्रिका के माध्यम से 'जैन एकता' का प्रयास बहुत ही सराहनीय है, हमारे आने वाली पीढ़ी को भी अपने धर्म और समाज की विशेषताओं का ज्ञान हो, इसके लिए समाज में एकता होनी बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी आधुनिक जीवन शैली के चक्कर में अपने धर्म और समाज से विमुख होती जा रही है, उन्हें जोड़ने की अत्यंत आवश्यकता है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाना चाहिए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक ही नाम रहना चाहिए, 'भारत' नाम में अपनत्व की झलक दिखती है और यह हमारी भारतीयता से भी जुड़ा हुआ है, इंडिया नाम अंग्रेजों द्वारा थोपा गया है और इस नाम का कोई अर्थ भी नहीं, अतः अपने देश का नाम हर भाषा में 'भारत' ही रहना चाहिए।

संगीता जी मूलतः राजस्थान स्थित 'बिदासर' की निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'कोलकाता' में ही संपन्न हुयी है, यहां आप श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मंडल साउथ कोलकाता की पूर्व अध्यक्षा रही हैं, वर्तमान में कार्यकारिणी सदस्य हैं। बिदासर नागरिक संघ की भी उपाध्यक्ष रही हैं। जय भारत!

**सुरेश खिंवसरा**
अध्यक्ष श्रमण संघ तमिलनाडु
नागौर निवासी-तमिलनाडु प्रवासी
भ्रमणध्वनी: ९४४३३७३२६७

सुरेशजी 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि तमिलनाडु में संपूर्ण जैन पंथों द्वारा 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' बहुत ही विशाल रूप में मनाया जाता है। सामायिक व धर्म आराधना की जाती है। समाज द्वारा दुकानें बंद रखी जाती है, दिगम्बर व मंदिरमार्गी पंथों द्वारा शोभायात्रा निकाली जाती है, इस तरह हम महावीर के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं, अपने जीवन में आत्मसात करने का प्रयास करते हैं, पर्व के माध्यम से अन्य समाज के सम्मुख भी जैन समाज की एकता का संदेश जाता है।

'जैन एकता' के संदर्भ में मेरा यही कहना है कि यह असंभव सा प्रतीत होता है, क्योंकि हमारा समाज कई पंथों में बंटा हुआ है, हर जैन पंथों के साधु-संतों के अपने मत अपने मत हैं, कहीं ना कहीं सभी महावीर के सिद्धांतों और मूल्यों से भटक गए हैं तो समाज में एकता किस तरह स्थापित हो सकती है, यदि हमारे साधु-संतों के मत एक हो जाएं और सभी एकमंच पर एकत्रित होकर कार्य करें तो अवश्य 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है। आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से जुड़ा हुआ है वह विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर उपस्थित होते हैं, सक्रियता देखते ही बनती है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए यही हमारे देश का प्राचीनतम और गौरवशाली नाम है जिस पर हमें गर्व है।

सुरेशजी मूलतः राजस्थान के 'आलनियावास' के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा नागौर में ही संपन्न हुयी है। पिछले ४८ वर्षों से आप तमिलनाडु में बसे हैं आप फाइनेंस के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। प्राज्ञ संघ के सदस्य, एसएस जैन संघ सिरकाली के कार्याध्यक्ष, श्रमण संघ (कावेरी बेल्ट) तमिलनाडु के अध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। जय भारत!

'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें
**कन्हैयालाल नलवाया**
मंत्री श्री महावीर जैन श्वेताम्बर समिति, सेक्टर ११, उदयपुर
Mob.: 9414167557
1-GH-14, Machala Magra Scheme, Sector-11, Udaipur, Rajasthan, Bharat- 313001

जिनागम पत्रिका के पाठकों व विज्ञापन दाताओं को
'तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व' पर
शुभकामनाएं



जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

**ऍड. गोपाल चंद्र जैन**
**पूर्व अध्यक्ष श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा उड़ीसा**
**हरियाणा निवासी-उड़ीसा प्रवासी**
**भ्रमणध्वनि: ९४३७०९२६२२**

गोपालचंद्रजी आराध्य 'तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि सकल जैन समाज द्वारा 'जियो और जीने दो' का दुनिया को संदेश देने वाले जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर महावीर का जन्म कल्याणक पर्व बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाया जाता है, इस दौरान प्रभात फेरी का आयोजन किया जाता है, रथयात्रा निकाली जाती है, जिनालयों में विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैन समाज द्वारा पूजा-आराधना की जाती है। यह पर्व संपूर्ण समाज द्वारा उत्साह पूर्वक मनाया जाता है, इस दौरान विभिन्न धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रम किए जाते हैं, जिसमें सभी का उत्साह देखते बनता है। आज के परिपेक्ष में युवाओं को जागृत करने के लिए ऐसे पर्व की नितांत आवश्यकता है।

आज का युवा वर्ग अपने धर्म और समाज से विमुख होता हुआ दिखाई देता है, वह पर्व को सिर्फ एक कार्यक्रम के रूप में लेते हैं, इस पर्व के वास्तविक महत्व को नहीं समझ पा रहे, अतः उन्हें जोड़ने की अत्यंत आवश्यकता है।

'जैन एकता' असंभव सी प्रतीत होती है, संभव हो सकती है यदि सभी अपने निजी स्वार्थ को बगल में रख केवल जैन धर्म और समाज को प्रमुखता प्रदान दें, तो ही 'जैन एकता' स्थापित हो सकती है।

'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए। 'भारत' नाम में अपनापन है, यह भारतीयता और इतिहास को प्रदर्शित करता है, इंडिया शब्द का कोई अर्थ नहीं, यह अंग्रेजों द्वारा हम पर थोपा गया नाम है।

गोपालचंद्रजी मूलतः हरियाणा के निवासी हैं। आपका परिवार कई पिढ़ियों से उड़ीसा में बसा हुआ है। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा भी उड़ीसा में ही संपन्न हुयी है। यहां आप 'कर' अधिवक्ता के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में भी सक्रिय रहते हैं। पूर्व में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष रहे हैं। चेंबर ऑफ कॉमर्स, अग्रवाल समाज, गोपाल गौशाला जैसे कई संस्थाओं से जुड़े हैं। जय भारत!

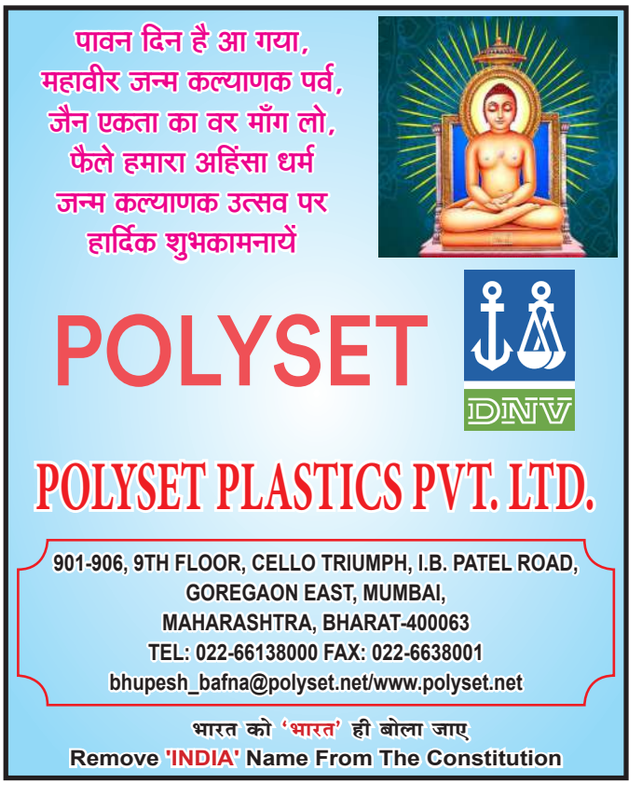

**'जिनागम' समस्त जैनों की एकमात्र पत्रिका है इसे पढें व अन्यों को भी पढायें...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

# नयपद्मसागरजी और प्रशांतसागरजी महाराज को आचार्य पदवी प्रदान

**मुंबईः** समस्त मानवजाति के कल्याण के लिए पिछले ४० वर्षों से कार्य कर रहे गुरुदेव नयपद्मसागरजी को महालक्ष्मी स्थित रेसकोर्स ग्राउंड में हजारों की संख्या में मौजूद श्रावक व श्राविकाओं के बीच 'आचार्यश्री' की उपाधि दी गई। वैचारिक-शैक्षणिक क्रांति के जरिए लाखों लोगों का जीवन रूपांतरित कर चुके नयपद्मसागरजी महाराज साहब के आचार्य पद महोत्सव में हर क्षेत्र व हर धर्म के लोगों की मौजूदगी रही।

गौरतलब है कि जैन धर्म में आचार्य पदवी ठीक वैसे ही मानी जाती है, जैसे सनातन धर्म में शंकराचार्य की उपाधि। गुरूदेव नयपद्मसागरजी से आचार्य पद मिलने के बाद उनके संकल्पों के बारे में पूछने पर वे आनंद से सराबोर वाणी में कहा:

मेरा संकल्प विश्वकल्याण का है, जिसमें पांच सूत्रीय कार्यक्रम होंगे, फूड फॉर ऑल, हेल्थ फॉर ऑल, वेल्थ फॉर ऑल, अध्यात्म फॉर ऑल और पीस फॉर ऑल।

विशेष रूप से युवावर्ग में फैल रहीं मानसिक स्वास्थ से जुड़ी समस्याओं को निवारण करने का अलख जगाऊंगा, युवा खुशहाल रहेंगे तो ही देश और विश्व खुशहाल होगा। इस मौके पर दिगम्बर, श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी के आचार्य-संत उपस्थित थे, इसी दिन प्रशांतसागरजी महाराज को भी आचार्य उपाधि से विभूषित किया गया।

**जैन दर्शन का सर्वोत्तम उत्सव**

JIO (जैन इंटरनैशनल ऑर्गनाइजेशन) के अध्यक्ष घेवरचंद बोहरा के अनुसार 'जैन एकता' के महासहयोगी नयपद्मसागरजी JIO व JITO के संस्थापक हैं, उनकी आचार्य पदवी के मौके पर देश के कई दिग्गज शामिल थे। श्री बोहरा ने यह भी बताया कि गुरुदेव ने न सिर्फ आमजन में अध्यात्म का बीज बोया, बल्कि इकॉनमिक एम्पावरमेंट, श्रमण आरोग्यम, शैक्षणिक क्रांति के क्षेत्र में कई कार्य किए हैं।

JIO के वीरेंद्र शाह ने बताया कि जैन धर्म में नवकारमंत्र में तीसरा पद आचार्य पद है, जिन्हें आचार्य पद प्रदान किया जाता है, उन्हें परमात्मा स्वरूप, धर्म संघ का नेतृत्व करने वाले और विश्व कल्याण की परंपरा का संवाहक माना जाता है।

JITO चेयरमैन सुखराज नाहर, प्रदीप राठौड़ के अनुसार इस मंगल समारोह को देखना भी पुण्य माना जाता है।

JITO के मोतीलाल ओसवाल ने कहा कि सर्व-धर्म सद्भाव के लिए कार्य कर रहे गुरुदेव का विश्व बंधुत्व की अद्भुत सोच है।

JIO के वीरेंद्र तुरकिया, प्रताप जैन और मुकेश भंडारी के अनुसार यह जैन दर्शन का सर्वोत्तम उत्सव था।

'सत्य-अहिंसा' धर्म हमारा 'नवकार' हमारी शान है,
'महावीर' जैसा नायक पाया जैन हमारी पहचान है
तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक की हार्दिक शुभकामनाएं

H. M. Sethia Mob.: 9435112343
Manoj Sethia Mob.: 9864021444
K. J. Sethia & Co.
FOOD GRAINS, POTATO, ONION MERCHANTS & COMMISSION AGENT
H.B. Road, Fancy Bazar, Guwahati, Assam, Bharat-781001
Ph : 0361-2543362, 2543465

# राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शिक्षण संस्था आयोग के अध्यक्ष ने कहा कि सरकारी प्रदत्त सुविधाओं का लाभ लेना ही चाहिए

**इंदौर:** भारत सरकार द्वारा देश के अल्पसंख्यक समुदाय की शिक्षण संस्थाओं को संरक्षण देने के भाव से गठित राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शिक्षण संस्था आयोग (NCMEI) के अध्यक्ष न्यायमूर्ति नरेन्द्र कुमार जैन दिनांक ०३-०४ मार्च को इन्दौर पधारे। ४ मार्च को प्रात:काल हसमुख गाँधी परिवार के सौजन्य से समाज द्वारा आयोजित स्वागत समारोह को संबोधित करते न्यायमूर्ति श्री जैन ने कहा कि भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है। अनेकता में एकता ही इसकी विशेषता है। भारतीय संविधान में धार्मिक एवं भाषायी अल्पसंख्यक को अपनी भाषा, संस्कृति, पुरातत्व, धर्म, धर्मायतनों एवं सांस्कृतिक स्थलों की सुरक्षा के लिए अनेक अधिकार प्रदान किए गए हैं किन्तु जैन समाज इन अधिकारों से परिचित न होने के कारण इनका लाभ नहीं ले पा रहा है। आपने उदाहरण देते हुए बताया कि एक व्यक्ति श्री सुरेशचन्द्र जैन ने संविधान में प्रदत्त अल्पसंख्यक समुदाय के अधिकारों का उपयोग करते हुए तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय (TMU) मुरादाबाद जैसा प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय खड़ा कर लिया, जिसने कोरोना काल में उस अंचल के लोगों की महती सेवा की।

कार्यकम की अध्यक्षता करते हुए मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री जे.के. जैन ने कहा कि यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि NCMEI के Chairman के पद पर न्यायमूर्ति एन.के. जैन साहब उपस्थित हैं। हमें उनके अनुभव, ज्ञान एवं सामाजिक संस्थाओं को संरक्षण देने की जिजीविषा का लाभ लेते हुए त्वरित कार्यवाही करते रहने चाहिए। कार्यकम का सशक्त संचालन देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के जैन गणित शोध केन्द्र के निदेशक एवं आचार्य डॉ. अनुपम जैन ने किया तथा परिचय श्री रजनीकांत गाँधी ने दिया।

इस अवसर पर हसमुख गाँधी, श्री रजनीकांत गाँधी, डॉ. अनुपम जैन, श्रीमती स्वाति गाँधी, न्यायमूर्ति जे.के. जैन आदि ने न्यायमूर्ति एन. के. जैन को दि. जैन तीर्थ निर्देशिका की प्रति भेंट की। कार्यकम में श्रीमती पुष्पा कासलीवाल, श्रीमती एन.के. जैन, श्री राजकुमार पाटोदी, श्री कमलेश कासलीवाल, श्री टी.के. वेद, श्री अनिल रावत, श्री सुशील पांड्या सहित जैन समाज की विभिन्न संस्थाओं के शताधिक प्रतिनिधि एवं पदाधिकारी मौजूद थे। कार्यकम में दिगम्बर जैन सामाजिक संसद, महावीर ट्रस्ट, दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन, दि. जैन महासभा, दि. जैन महासमिति, पावागिर ऊन ट्रस्ट, जैसवाल जैन समाज ट्रस्ट, दि. जैन समाज सुदामानगर, कल्पतरु दि. जैन मंदिर, JITO, परवार सभा, JES, ऋषभदेव गौरव न्यास आदि संस्थाओं के शताधिक प्रतिनिधि मौजूद थे।

**- डॉ. अनुपम जैन**

**निदेशक- देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Issue Opens : 03-11-2022
Issue Closes : 07-11-2022
Price Band : 285 – 300

**THANK YOU INVESTORS FOR OVERWHELMING RESPONSE**

Total Issue Size: ~ INR 881 Crores
a) Anchor : ~ INR 261 Crores
b) Main Book : ~INR 620 Crores

BIKAJI

# BIKAJI FOODS INTERNATIONAL LIMITED

| QIB* | HNI | RETAIL | EMPLOYEE |
|---|---|---|---|
| 80.63 TIMES | 7.10 TIMES | 4.77 TIMES | 4.38 TIMES |

## IPO SUBSCRIBED 26.67 TIMES*

TOTAL BID RECEIVED : ~ Rs. 16,510 Crores* (@ Upper Band)

Intensive
Investment Banking · NBFC · Family Office

www. intensivefiscal.com

**Mr. DK Surana, CMD at Intensive** is a Seasoned Investor focused at investing in Growth-oriented companies driven by First Generation Entrepreneurs in India. Fast growing reputed Companies like **Bikaji Foods, Style Baazar, Waaree Energies, Kishlay Foods, Ami Lifesciences, Aakash Namkeen, Gokul, etc.** are some of the private sector companies under his Investment Portfolio. His investment has also been marked with Co-investment by India's Marque Investor like **Lt. Rakesh Jhunjhunwala, Kedaara Capital, Haldiram Group, Whiteoak, Lighthouse, Norwest, IIFL AMC, Axis AIF, Avendus, KKCL & Granite Hill Capital Partners.**

## तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

### श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ

**श्री शत्रुंजय तीर्थ स्पर्शना के बाद गुजरात क्षेत्र में विचरण**

### प्रभु के सच्चे वारसदार अर्थात गुरुदेव

**सद्गुरु के शब्दों को समझने के लिए बुद्धि का पना कम पड़ता है**

### धन्य ! धन्य मुनिवरा !!

पू. पिताश्री
स्व. श्री धनराजजी

श्री मोहनखेड़ा महातीर्थ के विकास प्रेरक, संघवात्सल्यमूर्ति, तत्वचिंतक,
परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश
**श्रीमद्विजय ऋषभचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा के**
**चरणों में कोटि-कोटि वंदन**

पू. मातुश्री
स्व. कमलाबेन

धुम्बडिया (राज) निवासी शा. बाबुलालजी धनराजजी डोडीया गाँधी परिवार
श्रीमती सुशीलाबेन बाबुलालजी डोडीया गाँधी
पुत्र-पुत्रवधु : जयंत-ममता, शैलेष-मंदाकिनी पौत्र-पौत्री : कुशी, कियाश, झील, क्रिश
बेटा-पोता : धनराजजी हरजीजी डोडीया गाँधी परिवार

Postal Registration Number - MCN/192/2021-2023
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2021-23
'License to post without prepayment'
Published on 09th March 2023 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598